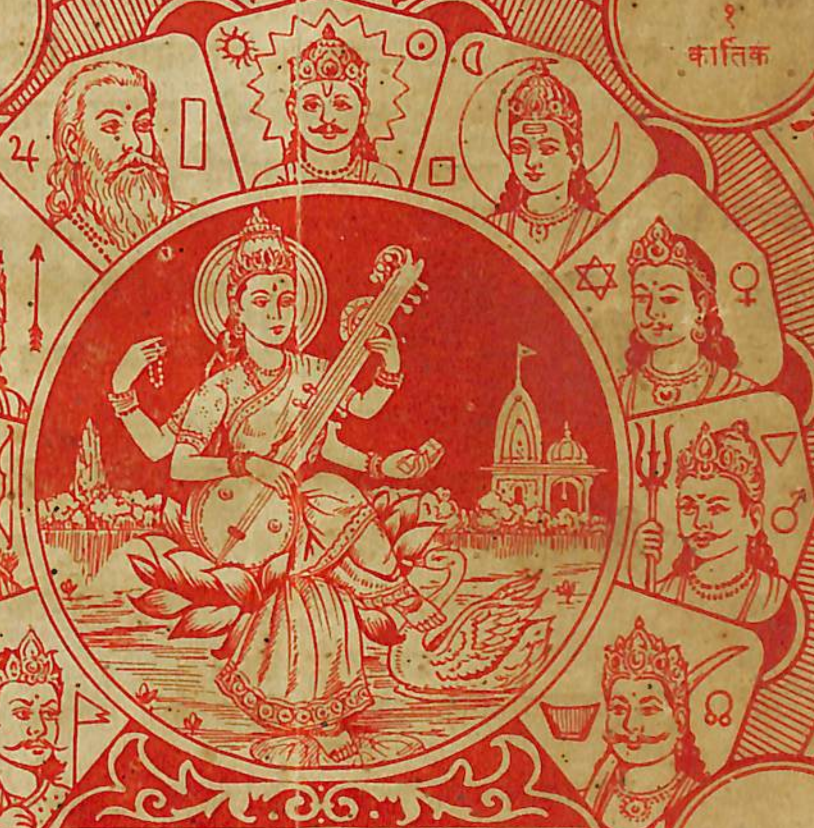
श्रीः

ज्योतिष्मती

नववर्षाङ्क

वर्ष १५ सं० २०२८

संख्या १ कार्तिक



वार्षिक मूल्य ८.५०

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

इस अङ्क का मूल्य २.५०

मध्यप्रदेश

अर्थात्

मानव....सभ्यताके विकासकी कहानी

★नर्मदा, चम्बल, सोन और वेत्रवतीकी नदी घाटियां
—मानव सभ्यताकी जन्मस्थली ।

★पचमढ़ी, होशंगाबाद, रायसेन, सिहोर, सागर, रायगढ़
—प्रागैतिहासिक गुफा चित्र ।

★चित्रकूट, दण्डकारण्य—रामायण कालीन प्रमुख स्थल ।

★सांची, भरहुत, विदिशा, पद्मावती सिरपुर—बौद्ध-स्मारक ।

★सुहागपुर —महाभारत कालीन विराट नगर ।

★उज्जयिनी, दशपुर, माहिष्मती
—प्रारम्भिक शताब्दियोंके सांस्कृतिक केन्द्र ।

★उदयगिरी, भूमरा, नचना बाध—गुप्त कालीन कला-केन्द्र ।

★त्रिपुरी रतनगढ़, गुर्गी—कलचुरि, कालीन अवशेष ।

★खुजराहो —चन्देल कालीन विश्वविख्यात शिल्प-केन्द्र ।

★ग्वालियर और माण्डू दतिया ओरछा
—समन्वयवादी कला-प्रवृत्तियोंके प्रतीक ।

★भिलाई, हैवी इलेक्ट्रिकल्स, भोपाल, गांधीसागर
—राष्ट्रीय नव-निर्माणके प्रमाण ।

इनके अतिरिक्त

ओंकारेश्वर, मान्धाता, अमरकण्टक, सोना गिरि आदि महत्वपूर्ण तीर्थस्थल

तथा

भेंडाघाट, चचाई, चित्रकूट आदि प्रकृतिके क्रीड़ास्थल

गौरवपूर्ण अतीत तथा प्रगतिशील वर्तमानसे युक्त

मध्य प्रदेश

का स्वर्णिम भविष्य सुनिश्चित है ।

(सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय द्वारा प्रसारित)

सूपसं १२४०/७१

★ श्रीः ★

ज्योतिष्मती

[अखिल भारतीय ज्यौतिषपरिषद्‌की मुखपत्रिका]





सम्पादक एवं संचालक

हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

अध्यक्ष—अ०भा० ज्यौतिषपरिषद् (भारत सरकारसे पंजीकृत)

उपसम्पादक

डा० रुद्रदेव त्रिपाठी साहित्य-सांख्य-योगाचार्य
एम.ए. (हिन्दी-संस्कृत) पी.एच.डी.



प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

विषय-सूची

आवश्यक सूचना

कागज और छपाईकी कमरतोड़ मँहगाईके कारण इस १५वें वर्षसे 'ज्योतिष्मती' के वार्षिक मूल्यमें नाम मात्र ५० पैसेकी बृद्धि की गयी है। पाठकोंकी रुचिको देखते हुए हल्का रफ कागज लगाना और पृष्ठ संख्या घटाना उचित नहीं समझा। जिन ग्राहकोंका मूल्य इस अङ्कमें समाप्त है उन्हें छपा मनी-आर्डर फार्म साथ भेजा जा रहा है। ३१ अक्टूबर, ७१ तक सभी पुराने ग्राहकोंसे वार्षिक मूल्य ८) आठ रुपया ही लिया जावेगा। नवम्बर ७१से सभी नये पुराने ग्राहकों को ८-५० भेजना पड़ेगा।

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य

१. भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२. भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३. ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति और ज्योतिःशास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती'के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे।

(३) जो सज्जन २१) से १००) रुपये तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सम्मानित सदस्य माने जायेंगे।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़ शुक्ल १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य ८.५० साढ़े आठ रुपये और एक प्रतिके दो रुपये पचास पैसे हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती निकेतन की ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(७) लेख आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद् पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं - चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरद्पूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछेका अङ्क न लेना चाहें तो वे बीचमें किसी भी समयसे वर्षभरके लिए ग्राहक हो सकते हैं।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए। पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो घसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिख कर केपिटल लेटर्स (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य व एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'ज्योतिष्मती'का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला पूर्णिमा है। प्रकाशन तिथिसे सात दिन पूर्व प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथि से १० दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना मिलनी चाहिए।

व्यवस्थापक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

'ज्योतिष्मती' के गतांक

'ज्योतिष्मती' के वर्तमान १५वें वर्षके इस पहले अङ्क तक कुल ५७ अङ्क प्रकाशित हो चुके हैं। इन अङ्कोंमें ज्योतिष, आयुर्वेद, मंत्रतंत्र, सामुद्रिक सम्बन्धी अनेक उपयोगी महत्वपूर्ण लेख छपे हैं। संग्रहार्थ गताङ्कों की माँग बराबर आ रही है। इन ५७ अङ्कोंमेंसे १५ अङ्क अब उपलब्ध नहीं हैं। पांचवे छठे दसवें ग्यारहवें बारहवें और चवदहवें वर्षके सम्पूर्ण २४ अङ्क अभी उपलब्ध हैं। शेष ८ वर्षोंके ३२ अङ्कोंमेंसे १५ अङ्क अब अप्राप्य हैं। (वर्ष १ संख्या १-४। वर्ष २ सं० १-२-४। वर्ष ३ सं० १-४। वर्ष ४ सं० १-३। वर्ष ७ सं० १-४। वर्ष ८ सं० २। वर्ष ९ सं० १।२ वर्ष १३ सं० ३ नहीं हैं।) गताङ्कोंमेंसे उपलब्ध इन ४१ अङ्कोंमें प्रत्येकका मूल्य डाक खर्च सहित २) दो रुपये है। जिन-जिन अङ्कोंकी आवश्यकता हो मूल्य मनीआर्डर द्वारा भेजकर प्राप्त कर लें। गताङ्कोंकी बहुत थोड़ी प्रतियां शेष रही हैं, अतः विलम्ब करनेसे सम्भव है कोई उपयोगी अङ्क आपको प्राप्त न हो सके।

एक नवीन लाभप्रद योजना

'ज्योतिष्मती' के स्नेही पाठकोंके लाभार्थ गत तीन वर्षसे एक नवीन योजना प्रस्तुत की गई है। 'ज्योतिष्मती' के अनेक ग्राहक ऐसे हैं जो इसके प्रारम्भकाल—प्रथम वर्ष—से ही ग्राहक हैं। प्रथम वर्ष से ही क्यों, कुछ ग्राहक तो ऐसे है जो 'श्रीस्वाध्याय' के १६ वर्ष तक निरन्तर ग्राहक रहे और अब १४ वर्ष से वे 'ज्योतिष्मती' के ग्राहक हैं। इस प्रकार विगत ३० वर्षोंसे उन्होंने बराबर वार्षिक मूल्य प्रतिवर्ष भेजा है। कुछ ग्राहक १५ वर्षसे हैं, कुछ दस बारह वर्ष से, तो कुछ पांच-छ वर्ष से बराबर चले आ रहे हैं। ऐसे पुराने और नवीन ग्राहकोंके हितार्थ १—आजीवन सदस्य, २—दशवर्षीय सदस्य, और ३—पंचवर्षीय सदस्य बनानेकी लाभप्रद योजना नीचे प्रस्तुत की जा रही है।

१—आजीवन सदस्य

जो सज्जन १०१) एक सौ एक रुपये मनीआर्डर द्वारा भेज देंगे वे आजीवन सदस्य माने जावेंगे। उन्हें जीवन पर्यन्त जब तक 'ज्योतिष्मती, प्रकाशित होती रहेगी, बराबर पहुँचती रहेगी। उन्हें फिर कभी भी 'ज्योतिष्मती' का वार्षिक मूल्य नहीं भेजना पड़ेगा। राजस्थानके सुप्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य डा० अम्बालालजी शर्मा (विधानसभा-सदस्य) द्वारा लिखित 'क्षयरोग और उसकी चिकित्सा' नामक तीन सौ-पृष्ठकी सचित्र पुस्तक और काम-विज्ञान आयुर्वेद शास्त्रका अद्भुत ग्रन्थ 'केलिकुतूहलम्' हिन्दी अनुवाद सहित डाक रजिस्ट्री खर्च २) रु. से उपहार रूपमें भेजा जायेगा।

२—दशवर्षीय सदस्य

जो सज्जन ७०) सत्तर रुपये मनीआर्डर द्वारा भेज देंगे उन्हें आगामी दशवर्ष तक (पन्द्रहवेंसे २४वें वर्ष अक्तूबर १९७१ से सितम्बर १९८१ ई० तक) सब अङ्क यथा-समय बराबर पहुँचते रहेंगे। चाहे 'ज्योतिष्मती' का वर्षिक मूल्य कितना ही बढ़ जाये तब भी दशवर्ष तक इन्हीं ७०) रु० में 'ज्योतिष्मती' बराबर पहुंचती रहेगी। वार्षिक मूल्य ८.५० से दश वर्षके ८५) रु० बन जाते हैं। 'क्षयरोग और उसकी चिकित्सा' और केलिकुतूहल नामक दो ग्रन्थ १०) मूल्यके डाक रजिस्ट्री खर्च २) रु० से निःशुल्क भेंट।

३—पंचवर्षीय सदस्य

जो सज्ज्जन ३५) पैंतीस रुपये मनीआर्डर द्वारा भेज देंगे, उन्हें आगामी पांच वर्ष तक पन्द्रहवें वर्षसे १९वें वर्ष तक (अक्टूबर १९७१ से सितम्बर १९७६ ई० तक) सब अङ्क यथासमय बराबर पहुँचते रहेंगे। चाहे 'ज्योतिष्मती' का वार्षिक मूल्य कितना ही बढ़ जाये तब भी पांच वर्ष तक इन्हीं ३५) रु० में 'ज्योतिष्मती' बराबर पहुंचती रहेगी। वार्षिक मूल्य ८.५० रु० से पांच वर्षके ४२॥) रु० बन जाते हैं। पंचवर्षीय सदस्योंको' 'केलिकुतूहल' नामक अद्भुत ग्रन्थ ५) रु० मूल्यका निःशुल्क भेंट किया जायेगा।

सभी प्रकारका शुल्क नीचेके पते पर भेजें

व्यवस्थापक—ज्योतिष्मती—निकेतन, सोलन (हिमाचल-प्रदेश)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[त्रैमासिक पत्रिका]

कार्तिक, अगहन, पौष मास (दि. ५ अक्टूबर से ३१ दिसम्बर ७१ तक)

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले॥

वर्ष	सोलन, आश्विन शु० १५ सोमवार, सं० २०२८ वि०	संख्या
१५	१२ आश्विन, शाके १८९३ (४ अक्टूबर १९७१ ई०)	१

आत्मनिरीक्षण

पोल-पालमें चण्ट हरामी
कामचोर करते आराम।
झण्डेसे ऊंचा डण्डा हो
यही बनाता बिगड़े काम॥
जिस शासनमें न्याय नीतिकी
बनें कथाएं दण्ड प्रधान।
उसमें लुप्त हुए दूषित जन,
फले भाग्य भादौं सुख-खान॥
जिस शासनमें राष्ट्र भक्तिकी
निष्ठा भरते हैं माँ-बाप।
वह धरती स्वाधीन गर्वसे
जपती है गौरवके जाप॥

जिस शासनके कार्य-भारको,
लोलुप जन लेते जब थाम।
उस शासनकी नाव डूबती
तैरे तब, जब रक्खें राम॥
जिस शासनमें महास्वार्थी
धंस जाएं तिकड़मके द्वार।
बढ़ै रोग, दुर्भाग्य, दुष्टता,
बेकारी, भय, भ्रष्टाचार॥
जिस शासनके नेताओंका
परदेशी भाषासे प्यार।
वह शासन सच्चे अर्थोंमें
नौकर-शाहीका शृंगार॥

—कान्ह महर्षि

'ज्योतिष्मती' का पन्द्रहवें वर्षमें पदार्पण

विश्व-मंच पर घटनाओं का प्रवाह अपनी अबाधगतिसे बह रहा है। प्रत्येक इस प्रवाह में कुछ पाता है और कुछ खोता है। समय को पकड़ कर कोई स्थिर नहीं रख सका। 'हर आज का जन्म कलके लिये प्रेरक होता है' इस किंवदन्तीके अनुसार काल-प्रवाहमें बहते हुए भी कुछ दीप प्रकाश दे जाते हैं, कुछ किरणें जगमगाहटसे पथ आलोकित कर जाती हैं और कुछ क्षण जीवनकी जटिलताओं को सुलझानेमें सहायक हो जाते हैं।

वर्षके मास, पक्ष, सप्ताह, दिन, प्रहर, घण्टे, मिनट, पल और निमिष भी इसी तरह अपने आपमें बहुत महत्व रखते हैं और बुद्धिमान् उसका उपयोग नाप-तौल कर, सोच-विचार कर कृपणकी भांति सत्कार्य-चिन्तनमें करते हैं, जबकि सामान्य व्यक्ति बिना कुछ ध्यान दिये 'तट पर बैठ तरंगे गिनने' की तरह निद्रा, आलस्य, दुर्व्यसनमें वर्षों को बितानेमें भी संकोच नहीं करता है।

'ज्योतिष्मती' सचमुच ज्योतिष्मती है। इसकी ज्योतिसे पाठकोंको ज्ञानका आलोक मिलता है। विज्ञानके विचार, भूत, वर्तमान तथा भविष्यकी दृष्टि, साहित्यके आधारभूत तत्व आनन्दकी सृष्टि, व्यापारके लिये दिशा और कर्तव्यके लिये सन्देश सुगमतासे मिल जाते हैं।

उचित और अनुचितका, प्रेय और हेयका और कर्तव्य एवं निषेधका ऊहापोहपूर्वक चिन्तन प्रस्तुत करते हुए पाठकोंकी जिज्ञासा शान्त करना ही एक अच्छी पत्रिकाका कार्य है। 'ज्योतिष्मती'ने अपने विगत चौदह वर्षोंमें बहुत कुछ इसी दिशामें सफलता प्राप्त की है। इसकी नियमितता, उत्तम सामग्रीकी पूर्णता एवं आवश्यक उपादानोंकी प्रेरणामूलकताने पाठकों और ग्राहकोंके हृदयको बहुत आकृष्ट किया है, तभी तो इसकी ग्राहक संख्या कई हजार पर पहुंची है। संरक्षकों सहायकोंका सौजन्य इसके प्राणोंमें बल भरता है तो उत्तम लेखकोंकी मँजी हुई लेखिनीसे प्रसूत साहित्य इसका मंगल-शृंगार करता है। ज्योतिषीगण अपनी आर्षदृष्टिसे आगाही देते हैं तो मन्त्रशास्त्री यन्त्र, मन्त्र और तन्त्रके अनेक रहस्योंको खोलते हुए साधनाका संकेत देते हैं। आयुर्वेदके विद्वानोंका भी ज्योतिष्मतीने सहकार उपलब्ध किया है और वे अपनी अनुभूत उपचार-प्रक्रियाको पाठकों तक पहुँचाते हैं।

इस तरह अन्योन्याश्रित आदान-प्रदानोंका एक आदर्श माध्यम यह 'ज्योतिष्मती' पत्रिका अपने प्रकाशनके पन्द्रहवें वर्षमें पदार्पण कर रही है। इस अवसर पर हम अपने सभी सहयोगियों, लेखकों, पाठकों, विचारकों एवं विज्ञापनदाताओंका आभार प्रकट करते हैं और आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास करते हैं कि सम्पूर्ण उत्साहके साथ हमारे इस मंगल-प्रयासमें सहयोगी बनते हुये अपना सर्वविध सौहार्द बनाये रखेंगे।

विनीत: –

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

सम्पादकीय विचार—

भारत राष्ट्र शक्तिमान् और बलवान् हो !

ओजश्च तेजश्च सहश्च बलञ्च वाक् । चेन्द्रियं च श्रीश्च धर्मश्च ॥
ब्रह्म च क्षत्रं च राष्ट्रं च विशश्च । त्विषिश्च यशश्च द्रविणं च ॥
आयुश्च रूपं च नाम कीर्तिश्च । प्राणश्चापानश्च चक्षुश्च श्रोत्रं च ॥
पयश्च रसश्चान्न चान्नाद्यं च ऋतं च सत्यं । चेष्टं च पूर्तं च प्रजा च पशवश्च ॥
(अथर्व. १२।५।७—८-९-१०)

"राष्ट्र बलवान् हो, शक्तिशाली हो, तेजस्वी हो । इसके वास्ते पहली आवश्यकता है, जनता तेजस्वी, सहिष्णु, बलवान्, मधुरभाषी, सत्यवादी, जितेन्द्रीय श्री लक्ष्मी सम्पन्न हो । ज्ञान और क्रियाका परस्पर समन्वय हो । ज्ञान-विज्ञानके साथ-साथ शूरता-वीरता और सम्पन्न वैश्य वर्ग एवं नीरोग बलवान् सामान्य जनता का सतत विकास हो । जनताका तेज और उसकी सम्पत्ति सतत बढ़ती रहे । जनता दीर्घायु: हो, पूर्ण स्वस्थ और नीरोग हो, विकलांग न हो । दूध घीकी प्रचुरता हो । अनाजके कोठार भरे रहें । सत्यका राज्य हो । यज्ञ बराबर होते रहें । जलाशयोंकी कमी न हो । सुन्दर आराम वाटिकाओंका निर्माण सदा होता रहे । पशु-पालन ठीक रीतिसे हो । उन्नति और प्रगतिके मार्ग पर जनता और भारत राष्ट्र सदा आगे बढ़ता रहे ।"

इस वेद-वाणीको इस देशका शासक-वर्ग भूला हुआ है । किन्तु माओके देश चीनमें, समग्र देशमें सरकारने अभियान चलाया है— 'बलवान् बनो ।'

व्यायामशालाओंमें कहा जाता है—'व्यायाम करो, कसरत करो, और मातृभूमिकी रक्षाके लिए अपनेमें सतर्कताका विकास करो । चीनी जनताकी संकल्प शक्तिको दृढ़ करो, जिससे वह रोग और शत्रुका प्रतिरोध दृढ़तासे कर सके ।' क्या चीनके समान भारतको बली न होना चाहिए ?

पराजयकी कलंक कालिमा

भारतका शासकवर्ग भारत-भक्ति उत्पन्न करनेकी आवश्यकता ही अनुभव नहीं करता है । वह चाटुकारितामें विश्वास करता है । चीन के अधिकारमें आज भी भारतकी १८ लाख वर्गमीलसे २४ लाख वर्गमील भूमि है । इसमेंसे उसने एक इंच भूमि भी खाली नहीं की है । पर चीन साम्राज्यवादी नहीं है । उसके साथ मैत्री करनेकी उत्कट लालसा व्यक्त की जा रही है । पराजयकी कालिमाको दूर करनेके बदले उसको अमिट बनाया जा रहा है ।

भारतके शौर्यको कलंकित किया जा रहा है । संसदके २२ नवम्बर १९६२के प्रस्तावकी अवहेलना की जा रही है । तिब्बतमें एक लाख चीनी सैनिक एकत्र हैं । इस दशामें चीनसे मैत्री करनेकी वार्ता चलाना साम्राज्यवादी चीन-रूपी सांपको दूध पिलाना है । चीन केवल शक्तिमें विश्वास करता है । अशक्त भारतका वह कभी सम्मान न करेगा । १९५९-६० में

जब चू-एनलाई और चेंग-यी श्री नेहरूसे वार्ता करने आए थे—तब ये लोग उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन्‌से भी मिले थे। उनकी बातचीतके ढंग और स्वरको देखकर डा० राधाकृष्णन्‌को कहना पड़ा – "आप लोग ऐसे बात कर रहे हैं जैसे आप विजेता हों और हम विजित हैं।" इसके बाद चीनसे मैत्रीकी बात चलाना क्या भारत राष्ट्रके लिए घोर अपमानजनक नहीं है?

आश्चर्य चकित

बंगला देशका स्वातंत्र्य संग्राम चल रहा है। सवा पांच मास बीत गए। बंगला देशकी प्रतिरोध शक्ति देखकर 'मुक्तिवाहिनी' के शौर्य, रणकौशल और वीरता एवं धीरताको देखकर सम्पूर्ण विश्व और युद्ध-शास्त्रके पण्डित चकित हैं। मार्शल याह्याखांने जनरल टीकाखांको ढाकासे बुलाकर पहली मुठभेड़में अपनी पराजय मान ली है। बंगला-देशपर 'इस्लामाबाद' का आदेश नहीं चलता। गांवोंको फूंकना नागरिकोंकी हत्या करना, लूटना-पाटना, स्त्रियोंके सतीत्वको नष्ट करना, युवकों प्रोफेसरों, और वकीलोंको शूट करके और आतङ्क उत्पन्न कर बंगलादेशको पुनः विजय करनेमें मार्शल याह्याखां विफल रहे। बंगला देश स्वतंत्र और स्वाधीन नहीं हुआ। किन्तु, उसका सर्वनाश होनेमें कुछ बाकी नहीं रहा। वहां भूख-अकाल और नाना रोगोंका राज्य है। पीड़ितोंकी सहायताके नाम पर दी गई सहायता पाक-सेनाकी शक्ति बढ़ानेमें काम आई है। इस सत्यसे यू-थाण्ट चौंक सकते हैं। परन्तु वह इस सत्यसे नकार नहीं कर सकते। मुक्ति-वाहिनीको किसीने सहायता नहीं दी। उसकी सहायताकी अपीलें, मान्यता देनेके उसके अनुरोध अरण्य-रोदन सिद्ध हुए। शाब्दिक सहानुभूतिका क्या कुछ मूल्य है? क्या ओससे प्यास बुझती है? क्या प्यासा काव्य-रस पान कर सन्तुष्ट हो सकता है? बरसातके बाद पुनः पाक सैवरजेट विमान और बमवर्षक बंगलादेशके आकाशमें मंडरायेंगे। नगरों और गांवोंको राख कर देंगे। भारतमें शरणार्थी चीयूंटियोंके समान चले आवेंगे। इस समय (५-९-७१) तक ८५ लाख शरणार्थी भारतमें आ चुके हैं। आना जारी है। आचार्य बिनोवा भावेने कहा है—'बंगला देशको मान्यता देनेमें भारत विलम्ब न करे।' पहले ही बहुत देर हो चुकी है। यह भावुकताकी बात नहीं कही जा सकती। पवनारके सन्तने अपनी बातके समर्थनमें एक युक्ति दी है कि 'बंगला देशकी बंगलामें मलयालमके समान ८० प्रतिशत शब्द संस्कृतके हैं। बंगलादेशके लोग अपनी बंगलाको शुद्ध और कलकत्ताकी बंगलाको भ्रष्ट और विकृत मानते हैं।' यह महान् आचार्य भूल गया कि 'इन्दिरा-सरकार' संस्कृतकी अभिवृद्धि नहीं चाहती। इससे तो इस्लामका बल घटेगा, सोवियत रूसका प्रभाव क्षीण होगा और श्रीमती गांधी भारतकी डिक्टेटर (अधिनायक) न हो सकेंगी। संत बिनोवा भावेकी बात भी व्यर्थ गई। भूदान यज्ञके प्रवर्तककी 'इन्दिरा सरकार' की दृष्टिमें यह प्रतिष्ठा है।

१९५० में ही डा० राममनोहर लोहिया ने भविष्यवाणी की थी 'भारत सरकार बंगला-देशकी सहायता न करेगी।' बंगला देशको मान्यता प्रदान कर अप्रेलमें यदि बंगाल देशको १० करोड़के भारी-भारी दूर गामी शस्त्रास्त्र और विमान-वेधी तोपें व बम-वर्षक दे दिए जाते, तो बंगला-देशकी लड़ाई अप्रैलमें समाप्त हो जाती। बंगलादेश और भारत विनाशसे बच जाते। पर इन्दिरा सरकारकी नपुंसकता

और रूसी भक्तिके कारण यह नहीं हुआ। मार्शल याह्याखां एक तीरसे दोका शिकार करनेमें समर्थ हुआ। बंगला देशके सर्वनाशको देखकर विश्वबैंकके विशेषज्ञोंने कहा है—'यह तो उध्वस्त पश्चिमी जर्मनीके समान है। १ करोड़से बढ़कर २ करोड़ शरणार्थी भारतमें होंगे। इनको अन्न-वस्त्र देनेमें ही भारतकी अर्थ-व्यवस्था छिन्न-विच्छिन्न हो जायगी। पाकिस्तान और इस्लाम यही चाहता है। यह क्या पाक और इस्लामकी भारत और बंगला देश पर विजय नहीं है? स्वाधीन बंगला देशके पुर्ननिर्माण पर कितना व्यय होगा? यह कौन देगा? अन्तर्राष्ट्रीयता है कहां? मानवता क्या सोई हुई नहीं है?

इन्दिरा-सरकार बंगला देशको उस समय मान्यता देगी जब वह पूर्ण स्वतंत्र हो जायगा। वह संयुक्त राष्ट्रका सदस्य बन जायगा। वहां शांति स्थापित हो जयगी। स्थायी सरकार बन जायगी। इससे पहले नहीं। तब क्या उसको भारतकी मान्यताकी आवश्यकता शेष रहेगी? बंगलादेशका सर्वनाश रोकने, युद्धकी प्रचण्ड ज्वालाओंको शान्त करनेमें किसी प्रकारकी सहायता देनेका विचार नहीं रखती। इस-बुद्धि-भेद और मति-विभ्रमके लिए क्या भारत-अभक्ति उत्तरदायी नहीं है? भारतका सर्वनाश करनेको उद्यत श्रीमती इन्दिरा गांधीकी शक्ति बढ़ानेके नाम पर जिन लोगोंने भारत-अभक्त पार्टी इण्डीकेट कांग्रेसको वोट दिया क्या उनका मतिविभ्रम अब भी दूर होगा?

मैत्री नहीं दासता

'भारत-रूस मैत्री सन्धि' भारतकी दासता का पट्टा है। मैत्री समान बलके पक्षोंमें होती है। बलवान् और दुर्बलमें मैत्री नहीं होती। निर्बल तो आधीनता ही स्वीकार करेगा।

यह सन्धि भारत राष्ट्रके विस्तारको रोकने, भारतको दुर्बल बनाये रखने, और भारतमें मास्कोके ढंगका, एक पार्टी-विशेषका शासन स्थापित करनेके उद्देश्यसे की गई है। रूसकी एजेण्ट कम्युनिस्ट पार्टीका दिल्ली-निर्णय इस बातका प्रमाण है। कांग्रेस सोशलिस्ट फोरमके अध्यक्ष श्री अर्जुनप्रसाद अरोड़ाकी यह मांग करना कि स्वतंत्र पार्टी और सिण्डी-केट कांग्रेससे आए लोगोंको तीन साल तक कोई पद न दिया जाय, और न विधान सभाका टिकट दिया जाय, क्या प्रमाणित करता है? भारतको सोवियत रूसका एक माण्डलिक और पूर्वी यूरोपके देशोंके समान एक अनुवर्ती राष्ट्र बना दिया गया है। श्रीमती इन्दिरा गांधीको भारतका डिक्टेटर बनाकर अब मास्को की छत्रछायामें नई दिल्लीमें कम्युनिस्ट शासन की स्थापनाकी कसर रह गई है।

भयाक्रान्त

पाकिस्तान गुर्राया, भयाक्रान्त श्रीमती गांधीकी सरकारने झट रूसका पल्ला पकड़ा। क्या पाकिस्तानको विजय करनेमें भारतकी वीर वाहिनी समर्थ नहीं थी? थी, फिर रूसकी मददकी आवश्यकता क्यों? क्योंकि लज्जाजनक अपमानजनक 'ताशकन्द पैक्ट' की वर्षी मनाने वाली 'इन्दिरा सरकार' युद्ध करना नहीं चाहती थी। वह पाकिस्तानका अन्त और विनाश देखनेमें असमर्थ है। पाकिस्तानके अन्तका अर्थ था वर्तमान शासकवर्गकी परिसमाप्ति। शासकवर्गने अपने हाथमें शासन-सूत्र बनाये रखनेके लिए रूसी छत्रछाया स्वीकार की है। रूसने अंग्रेजीको मान्यता प्रदान कर दी है। सन्धि तीन भाषाओं—रूसी-हिन्दी-अंग्रेजी—में

प्रकाशित की गई। इसके बाद रूसी छत्रकी छाया ग्रहण करनेमें शासकवर्गको क्या आपत्ति हो सकती थी ?

विश्वासघाती

सोवियत रूस विश्वासके योग्य नहीं है, न भरोसाके योग्य है। १९६८ में चैकोस्लोवाकिया की स्वाधीनताको रूसी सेनाने नष्ट कर दिया। श्रीब्रेजनेवने कहा—"रूसके अनुवर्ती सोशलिस्ट देशोंकी प्रभुत्व-शक्ति सीमित है। उनको मास्को का आदेश मानना चाहिए, और उसका अनुसरण करना चाहिए।" इससे पहले १९५६ में रूसी टैंकोंने हंगरीमें स्वाधीनताको कुचल दिया था। इससे पहले पौलैंड और पूर्वी जर्मनीमें यही हुआ मास्कोका कहना था—नाजी सेनासे इनको मुक्ति रूसी सेनाने दिलाई है, अतः इनको मास्कोका उपग्रह बन कर रहना चाहिए। रूससे मैत्री करके भारतको एक बौना राष्ट्र बना दिया गया है।

सूडानमें रूसी दूतावासने राज्य विप्लव कराया। वह विफल रहा। मास्को चिल्लाता रहा, फिर भी सूडानने कम्युनिस्ट नेताओंको फांसी दे दी। कम्युनिस्ट पार्टी क्या भारतमें रूसी दूतावासके तत्त्वावधानमें यह न करेगी ? रूसने विश्वविजयकी महत्त्वाकांक्षाको छोड़ा नहीं है, यह न भूलना चाहिए। उसकी सामरिक तैयारी इसका प्रमाण है।

भारत रणक्षेत्र बनेगा

चिन्ताकी बात है कि रूसी मैत्रीने भारत को तीसरे विश्व-युद्धका रणक्षेत्र बना दिया है। बंगला-देशकी रूसने कोई सहायता नहीं की। पाकिस्तानको उसने ग्वाडूयूरमें नौसेनाका अड्डा बनाकर देनेका बचन दिया हुआ है। हिन्द-महासागरमें रूसी बेड़ा संचार कर रहा है। हिन्दमहासागरको सोवियत रूसने युद्ध क्षेत्र-बना दिया है। चीनसे वह साईबेरिया-चीनकी सीमा-मंगोलिया-चीनकी सीमा-सिकियांग-चीन की सीमा पर रूस न लड़ेगा। यह स्थान टैंक-युद्धके लिए उपयुक्त और आदर्श क्षेत्र नहीं है। इसके विपरीत सिन्धसे लेकर ब्रह्मपुत्र तकका समतल मैदान टैंक-युद्धके वास्ते सर्वथा उपयुक्त है। लीबियाके युद्ध-क्षेत्रके समान है, जहां जनरल रोमलने टैंक-युद्धका चमत्कार दिखाया था।

रूसका भारत पर प्रभाव जिस सीमा तक बढ़ गया है उसको देखते हुए इस सम्भावनासे नकार नहीं किया जा सकता कि भारत ऐसा कोई काम नहीं कर सकता जिससे रूसकी शक्ति क्षीण हो और उसके शत्रु बलवान् हो। परन्तु रूस भारतकी सहायता करनेको वाध्य नहीं है। युद्धका संकट आसन्न है, शान्ति-भय युक्त है, शत्रुने हमला किया है, इसका निर्णायक रूस होगा, भारत नहीं। भारत पहले जैसे शस्त्रास्त्रों के लिए ब्रिटेन पर निर्भर था, अब वह एकमात्र रूस पर निर्भर रहेगा। पश्चिमी देश भारत को हथियार न बेचेंगे। क्योंकि उनको भय रहेगा कि इसके बनानेका रहस्य भारत रूसको बता देगा। भारतने ब्रिटेनसे हेलीकाप्टर खरीदा है, इस प्रकारका हेलीकाप्टर रूस नहीं बनाता। यह विशिष्ट प्रकारका है। यह दो काम करता है। इसकी चाल भी तीव्र है। भारत-रूस सन्धि होनेसे पहले यह सौदा हुआ था। अब ब्रिटेन सोच रहा है कि यह सौदा क्यों न तोड़ दिया जाय। इस बातकी क्या गारण्टी कि इस का रहस्य भारत रूसको न दे देगा, जो अभी तक रूसको अज्ञात है। भारतकी तटस्थता नीतिका अन्त हो गया है, इस बातको सरकार

नहीं मानती। कथन-मात्रमें वह केवल रह गई है। यह ब्रिटिश शंकासे प्रकट है।

इसी प्रकार पूर्वी जर्मनी उत्तरी वियतनाम और उत्तरी कोरियासे दौत्य-सम्बन्ध स्थापित करनेकी तैयारी इस बातका प्रमाण है कि भारतको 'इन्दिरा-सरकार' ने सोवियत रूस का बिना दामका माण्डलिक या अनुवर्ती राष्ट्र बना दिया है। रूसी साम्राज्यकी सीमा मास्को से कन्याकुमारी तक पहुँच गई है। भारत-को-हिन्दू जातिको-निर्बल रखनेका क्या कोई और दूसरा उपाय था ?

हिन्दू परिषदकी स्थापना

भारतका शासकवर्ग ब्रिटिश शासनके समान हिन्दू जातिको निर्वीर्य बनानेका प्रयत्न कर रहा है। परन्तु नीतिकार कहता है :—

अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितम्
सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति।
जीवत्यनाथोऽपि वने विसर्जितः
कृतः प्रयत्नेऽपि गृहे विनश्यति॥

बृहत्तर-भारतके निर्माणकी बात दूर रही इसकी कल्पना तकको नष्ट कर दिया गया।

जापान पेरूमें एक लाख जापानी बसानेमें सफल हुआ है। क्या भारत पिछले दो दशकों में लेटिन अमेरिकामें दस लाख भारतीय नहीं बसा सकता था ? पर जो शासकवर्ग अण्डमान-निकोबार द्वीपोंको अब तक न बसा सका और आज भी बंगला-देशसे आए शरणार्थियोंको अण्डमानमें बसानेसे नकार कर रहा है, उससे क्या आशा की जा सकती है ? परन्तु, ईश्वर विश्वासी हिन्दू जातिकी सहायता परमात्मा करता है। हिन्देशिया (इण्डोनेशिया) में राम-मेला हो रहा है। यही नहीं, मैदान (सुमात्रा) में 'इण्डोनेशियन हिन्दू यूथ ब्रदरहुड' नामसे एक संस्था स्थापित है। इसी प्रकार डेनपासर (बाली) में "परिषद् हिन्दू धर्म" स्थापित है। इनको सरकारी मान्यता प्राप्त है। हिन्दू सम्बन्धी कोई बात इनसे सलाह लिए वगैर सरकार नहीं करती।

परिषदकी देश भरमें ४० शाखायें हैं। यह एक करोड़ हिन्दुओंका प्रतिनिधित्व करती है। यह "वार्ता हिन्दू धर्म" नामसे एक पत्रिका भी निकालती है। इसको छापाखानेकी बड़ी आवश्यकता है। भारतीय राजदूतने छापाखाना दिलानेका वचन दिया था। तीन वर्ष बीत गए। भारत सरकारने इस संस्थाको एक प्रेस तक नहीं दिया। इसकी आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं। भारतके धनी मानियोंको इसकी सहायताके लिए आगे आना चाहिए। यह इस बातका प्रमाण है कि बृहत्तर भारतके पुर्ननिर्माण का बीज विद्यमान है। हिन्देशियाकी सरकारने हिन्दू-धर्म और बौद्ध-धर्मके अध्ययनके लिए पूरा 'डायरेक्टोरेट' स्थापित किया है। भारतमें जब हिन्दू कहना गौरवका विषय नहीं रहा, कम्युनिष्ट और इन्दिरा-सरकार 'हिन्दू' नामसे उसी प्रकार बिगड़ उठती है, जैसे लाल कपड़ेको देखकर सांड बिगड़ उठता है, तब हिन्देशियामें 'हिन्दू' होना गौरव और सम्मानका विषय है, क्या यह एक आश्चर्यजनक सत्य नहीं ? हिन्दू-परिषद अन्तर-राष्ट्रीय हिन्दू-सम्मेलन करनेका विचार कर रही है। परन्तु आर्थिक कठिनाइयोंके कारण वह कुछ कर नहीं पाती। हिन्दूजातिको प्राणवान् बनानेकी इच्छा रखने वाले क्या उक्त हिन्दू-परिषदकी सहायता न करेंगे ? हिन्दू जातिका तेज

हिन्दू धर्मकी दिव्य ज्योति संसारमें फैलने दें।

अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा संकट

१९४४ में स्थापित बृटेनवुड मुद्रा-व्यवस्था वस्तुतः अन्तर्राष्ट्रीय नहीं थी। वह डालरव्यवस्था थी। क्योंकि डालरका सोनेसे एक निश्चित सम्बन्ध था। १९३४ में ३५ डालरके बदले एक औंस सोनेका भाव अमेरिकाने तै किया था। वह इस भाव पर डालरके बदले सोना देनेको तैयार था। अतः डालर व्यवस्था चली और डालरकी विश्व पर आर्थिक प्रभुता स्थापित हुई। ब्रिटिश अर्थशास्त्री प्रौकैनीकी योजना थी कि एक "इण्टरनेशनल क्लीरियिंग हाऊस" स्थापित किया जाय और दुनियाके सब सेण्ट्रल बैंकोंके ऊपर "सुपर वर्ल्ड बैंक" स्थापित किया जाय। अमेरिका इसको दूर भविष्यकी योजना मानता था। अतः इसकी जगह "इण्टर नेशनल मानिट्री फण्ड" (अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रानिधि) स्थापित किया गया। हरेक देशकी मुद्राका सम्बन्ध सोने या डालरसे स्थापित किया गया। सोना कहां था सबके पास ? अतः डालरसे सबने अपनी मुद्रा नत्थी कर ली। पश्चिमी यूरोप इस समय विवश था। लड़ाई अभी चल रही थी। परन्तु वह इससे सन्तुष्ट नहीं था। अमेरिकाका विरोध करनेकी क्षमता नहीं रखता था। अतः वह मौन रहा। इसलिए बृटेन वुड मुद्रा-व्यवस्था चल निकली।

इसमें यह भी व्यवस्था थी कि यदि किसी देशको रोकड़ भुगतानमें कठिनाई हो, विदेशी व्यापारका सन्तुलन उसके प्रतिकूल रहे तो वह अपनी मुद्राका अवमूल्यन कर सकता है। ब्रिटेन ने इसका लाभ उठाया। ब्रिटेनके साथ स्टर्लिङ्ग क्षेत्रके देशोंने भी (पाकिस्तानको छोड़कर) अपनी-अपनी मुद्राका अवमूल्यन किया, भारत इसमें पीछे नहीं रहा। उसने अपना स्वतंत्र 'रूपी-क्षेत्र' बनानेके बदले रुपयेको स्टर्लिङ्गके साथ नत्थी रखा। ब्रिटिश आर्थिक प्रभुतासे अपनेको मुक्त करनेका प्रयत्न नहीं किया।

परन्तु, जब पश्चिमी यूरोपके देश अपने पैरों पर खड़े हो गए, तब उनको डालरकी प्रभुता खटकने लगी, उनका राष्ट्राभिमान जागा। फ्रांसने स्वर्णमान मुद्राको पुनः चलानेकी माँग की। आज भी वह यह माँग कर रहा है। सोनेकी कमीको दूर करनेके लिए अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रानिधिने 'पेपर-गोल्ड' (कागजीस्वर्ण) चलाया। परन्तु अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा-संकट दूर नहीं हुआ।

१९६८ में पश्चिमी यूरोपके देश फ्रांस-जर्मनी डालरका अवमूल्यन करनेकी बात कहने लगे। परन्तु यह अमेरिकाके लिए प्रतिष्ठाका प्रश्न था, उसने स्वर्णका मूल्य भी बढ़ानेसे नकार कर दिया। पर अब अमेरिका डालर का अवमूल्यन करने और सोनेका दाम बढ़ाने को बाध्य हो गया। इससे उसने बचनेके लिए आयात माल पर १० प्रतिशत प्रभार (सरचार्ज) बढ़ा दिया और डालरको स्वर्णमें रूपान्तरित या परिवर्तित करनेसे, डालरके बदले सोना देनेसे १५ अगस्तको नकार कर दिया। वस्तुतः यह 'बृटेनवुड मुद्रा-व्यवस्था' को समाधि देनेकी घोषणा थी। इसका अन्त हो जानेसे शोकाश्रु बहानेकी आवश्यकता नहीं। क्योंकि इसकी उपयोगिता बहुत पहले ही समाप्त हो चुकी थी। यह इतने दीर्घकाल तक चली, यही एक बात विस्मयजनक है।

सोनेका दाम गिरेगा

दक्षिण अफ्रीका और रूस इस समय सबसे बड़े स्वर्ण-उत्पादक देश हैं। मुद्राके क्षेत्रमें स्वर्ण

की उपयोगिता समाप्त हो गई है। सोनेका उपयोग अब आभूषण और अलंकारों तक सीमित हो गया है। अतः इन दोनों देशोंको चिन्ता है कि सोनेका दाम भविष्यमें घटेगा। सोवियत रूसने रूबलका अवमूल्यन कर दिया है। भावी मुद्रा व्यवस्था क्या होगी, यह अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा-निधिके विचारका विषय है। मुद्राओंकी इस लड़ाईका एक परिणाम व्यापारके क्षेत्रमें प्रतीकारात्मक व्यापारिक आक्रमणकी भी आशंका है। जापान बदला लेनेको दृढ़ संकल्प दिखाई देता है। अन्तरराष्ट्रीयताकी भावनाका अन्त हो गया है। प्रत्येक देश अपने राष्ट्रीय हितकी दृष्टिसे सोचेगा। मुक्त-व्यापारका क्षेत्र सीमित हो जायगा। तटकरकी दीवारें ऊंची होनेका भय है। इस आशंकासे भारत सदृश देश अधिक चिन्तित है। इस व्यापारिक युद्धमें विकासशील देश कहां टिकेंगे ? प्रेजिडेंट निक्सनने गरीब देशोंको विश्वास दिलाया है कि उनके देशका द्वार उनके लिए उन्मुक्त रहेगा। परन्तु अमेरिकाके वर्तमान राष्ट्रीय संकटको देखते हुए इस पर कितना विश्वास किया जा सकता है ? कच्चे माल और कोटाके प्रमाणसे आयात होने वाले आयात पर तो १० प्रतिशत प्रभार आज भी नहीं है। फिर विशेष बात क्या हुई ?

माओ नीतिका विस्तार

प्रधानमंत्री चू एन-लाईने प्रेजीडेंट निक्सनको पेकिंग आनेका निमंत्रण दिया। निक्सनने मईमें पेकिंग जानेका निमंत्रण स्वीकार कर लिया। इसको अन्तरराष्ट्रीय राजनीतिमें एक नया मोड़ बताया जाता है। पर इसमें नयापन कुछ नहीं है। यह माओ-सिद्धान्तका विस्तार मात्र है। सांस्कृतिक विप्लवके समय चीनने अपने राजदूत बहुतसे देशोंसे बुला लिए थे। उनमें पुनः राजदूत भेज दिए गए हैं। ईरान और तुर्कीने तैवानको छोड़कर पेकिंगको मान्यता प्रदान की है। संयुक्त राष्ट्रका चीन सदस्य होने को अब उत्सुक है। इस समय उसके पक्षमें ५६ देश हैं और तैवानके पक्षमें ५३ देश हैं। माओत्से-तुंगका सिद्धान्त है—"अधिकसे अधिक लोगों को मित्र बनाओ, भले ही अल्पकालके लिए बनाओ। सब दुश्मनोंसे एक साथ मत लड़ो। एक-एक करके शत्रुका निपात करो।" चीनका इस समय सबसे बड़ा शत्रु अमेरिका नहीं, सोवियत रूस है। सोवियत रूससे सारी शक्ति से लड़नेके लिए अमेरिकाको मित्र बनाओ। मित्र न बने, तो वह रूसका भी मित्र न रहे। उदासीन रहे। जापान भी इस रीतिसे चीनका मित्र होकर रहेगा। अमेरिका और जापान दोनोंको चीनका बाजार चाहिए। चीनको डालर और अमेरिकी माल चाहिए। यद्यपि दोनोंमें अनेक परस्पर विरोधी बातें हैं। किन्तु दोनों इस बातमें एक मत हैं कि रूसकी शक्ति और उसका प्रभाव न बढ़ना चाहिए। विशेषतः हिन्दमहासागरमें उस पर रोक लगानी चाहिए। अतः प्रेजीडेंट निकसनने १९७२ का चुनाव जीतनेके लिए पेकिंग जानेका निमंत्रण स्वीकार कर लिया है। यह पिंग-पांग (टेबल टेनिस) या स्मित-राजनीति नहीं, माओ-नीति का विस्तार मात्र है।

'श्रीविश्वविजयपंचांग'

नये वर्ष सं० २०२९ वि० का श्रीविश्वविजयपंचांग नवम्बर ७१ के प्रारंभमें प्रकाशित होगा यह "राजप्रकाशन पुरानी मंडी अजमेर" से प्राप्त हो सकेगा। हमारे यहां 'ज्योतिष्मती' के साथ पंचांगका मूल्यकोई सज्जन न भेजें।

- व्यवस्थापक 'ज्योतिष्मती'

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र

आगामीकाल विश्व और भारतके लिए विशेष घटनापूर्ण

पाकिस्तान पतनोन्मुख, केन्द्र और प्रान्तोंके कुछ मंत्री पदच्युत होंगे

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

विश्वरूपस्य भार्यासि पद्मे पद्मालये शुभे।
सर्वतः पाहि मां देवि ! महालक्ष्मी नमोस्तुते ॥
सरस्वति महाभागे ! विद्ये कमललोचने।
विश्वरूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोस्तुते ॥

मनकी गतिसे अधिक तीव्रगतिसे विश्व और भारतकी राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियां बदल रही हैं। इस परिवर्तनकी पूर्व सूचनाका संकेत देनेकी शक्ति ज्योतिर्विज्ञान एवं त्रिकालदर्शी महर्षियोंके अतिरिक्त अन्य किसीमें नहीं है। इस वर्ष भारतके अधिकांश प्रान्तोंमें प्रलयंकर बाढ़से और आंध्र-महाराष्ट्रादि कुछ प्रान्तोंमें अनावृष्टिजन्य प्रकृति-प्रकोपसे जनधनकी जो हानि हुई वह कल्पनातीत है। वर्तमान विक्रम सं० २०२८ के प्रारम्भ (२७ मार्च १९७१) से ही आर्थिक संकट, प्रकृति-प्रकोप और छात्रोंके उत्पात, तोड़-फोड़ हड़ताल प्रदर्शनोंका तांता लगा है। बंगलादेशकी शरणार्थी-समस्याने भारतके लिए एक अभूतपूर्व सङ्कट उत्पन्न कर दिया है। पाकिस्तान छिन्न-भिन्न होने लगा है। क्या गतवर्ष १९७० में किसीने भी यह कल्पना की थी कि बंगलादेशमें भयङ्कर संग्राम होगा। अंधाधुन्ध हवाई बमवर्षा होगी और बंगलादेशकी राखसे नूतन-बंगलादेश गणराज्यका उदय होगा। १७५७ में जिन आम्रकुञ्जोंमें प्लासीकी लड़ाई लड़ी गई थी और जहां नवाब सिराजुद्दौलाकी पराजय और लार्ड क्लाइवकी विजयसे बंगलादेशने अपनी स्वाधीनता खोई थी, उसी जगह उन्हीं आम्र-कुञ्जोंमें बंगलादेश गणराज्यकी स्थापना होगी और बंगलादेशका प्रधानमंत्री ताजुद्दीन अहमद यह घोषणा करेगा कि––"पाकिस्तान मर गया, लाशोंके ऊंचे पहाड़के नीचे दब गया।" इत्यादि।

पाकिस्तानके पतनकी भविष्यवाणी

जो सज्जन नियमित रूपसे 'श्रीविश्व-विजयपञ्चाङ्ग' और 'ज्योतिष्मती' का अध्ययन करते हैं वे जानते हैं कि आजसे २१ वर्ष पहले सं० २००७ वि० के 'श्रीविश्वविजयपंचांग' में पृष्ठ ५ पर महर्षि व्यासकी भविष्यवाणीमें पाकिस्तानके पतनका सप्रमाण स्पष्ट उल्लेख है। उसके बाद आजसे ढाई वर्ष पूर्व जब शनिने मेष राशिमें प्रवेश किया था—तब 'पाकिस्तान पर शनिका दुष्प्रभाव' शीर्षकमें स्पष्ट लिखा था कि —"पूर्वी पाकिस्तान (बंगलादेश) प्राकृतिक एवं राजनैतिक उत्पातसे पीड़ित होगा। पश्चिमी पाकिस्तानमें सत्तासंघर्ष होगा। अयूबशाही अस्तप्राय होगी।" गत वर्ष सं० २०२७ के पंचांग और 'ज्योतिष्मती' में पाकिस्तानमें राज्यक्रांति, अकल्पित घटनाएं घटित होने और याह्याखांके सैनिक शासनकी समाप्ति का स्पष्ट उल्लेख है। अब इन आगामी ६ मास में पाकिस्तानमें याह्याखांकी सत्ताका अन्त हो जावेगा और वहां गृहयुद्ध भड़क उठेगा। राजनैतिक हत्याएं होंगी। आर्थिक सङ्कट दुर्भिक्ष बेकारी और प्रकृतिप्रकोपसे पाक पीड़ित होगा।

सिन्ध पख्तूनिस्तान और पाक-अधिकृत आजाद काश्मीरमें विद्रोह भड़केगा। एकबार नवम्बरमें (वृश्चिक राशिमें पंचग्रहीके समय) पाकिस्तान भयंकर रूपमें आक्रमण करके बंगलादेश पर विजय पानेका दुःसाहस करेगा, पर इसमें सफल नहीं होगा। इसी समय बंगला देशको अन्य शक्तिशाली राष्ट्रोंसे विशेष सहानुभूति प्राप्त होगी और १९७२ के प्रारम्भमें सम्पूर्ण बंगलादेश स्वतंत्रगणराज्यका गौरवपूर्णपद प्राप्त करेगा। इस आगामी ३ मासकी अवधिमें पाकिस्तान पश्चिम-पूर्वीय भारतीय सीमापर भी आक्रमणका षड्यंत्र रच सकता है। अतः अभी से भारतको सतर्क सन्नद्ध रहना आवश्यक है। 'मरता क्या न करता' के अनुसार बुझती दीप शिखाकी भांति समाप्तप्राय पाकिस्तान एक बार अपनी अन्तिम उग्रताकी ज्वाला भड़का सकेगा।

पंचग्रहीका प्रभाव

आगामी मार्गशीर्ष कृष्णा अमा. १८ नवम्बर १९७१ को वृश्चिक राशिमें (सू चं. बु. गु. शु.) पांचग्रह—नेपच्यून सहित ६ ग्रह—एकत्र हो रहे हैं। इस षड्ग्रही पर शनिकी दृष्टि है, अतः संसारमें अनेक भागों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा। मेष वृषभ सिंह वृश्चिक और धनुः राशि प्रधान राष्ट्र प्रान्त नगर और व्यक्तियोंको अनेक आपत्तियोंका सामना करना पड़ेगा। नेपच्यून जलतत्व प्रधान ग्रह है, और वृश्चिक राशि भी जलीय है। नेपच्यून एक राशिमें लगभग १३¾ वर्ष तक रहता है। लगभग १६५ वर्षके बाद यह पुनः उसी राशिमें प्रवेश करता है। युद्ध उत्पात बाढ़ और राज्य-क्रान्ति करानेमें इस ग्रहका विशेष हाथ रहता है। प्राचीन ग्रन्थोंमें इसका फल नहीं मिलता, परन्तु पाश्चात्य विद्वानोंने इसके फल पर अनुसन्धान किया है। जबसे नेपच्यून वृश्चिक राशिमें आया प्रतिवर्ष बाढ़की समस्या बढ़ती जा रही है। इस वर्षकी बाढ़ने तो विहार बंगाल उ०प्र० हि०प्र० आदि प्रान्तोंमें प्रलयंकर दृश्य उपस्थित कर दिया। इसका कारण नेपच्यून ग्रहके साथ गुरुकी युति और वर्षराज शनिका प्रचण्ड नाड़ीमें आवास ही हो सकता है। गतवर्ष मैंने वर्तमान सं० २०२८ वि० के पंचांगमें पृष्ठ १९ पर "शनिका संसार पर दुष्प्रभाव" शीर्षक में २१ अप्रैलसे २६ अक्टूबर ७१ तक मंगलराहु योगका जो उत्पात अशान्ति और प्रकृतिप्रकोप जलप्रलयादि फलका उल्लेख किया था वह घटित हो रहा है। उस समय नेपच्यून ग्रहके प्रभाव पर विशेष ध्यान नहीं दिया था।

नवम्बरसे अप्रैल तक अनेक परिवर्तन

अब १८ नवम्बर को पंचग्रहीके प्रभावसे विश्व और भारतमें अनेक अकल्पित घटनाएं होंगी। अभी १९ सितम्बरको शनि वक्री हुआ है। कार्तिक मासमें गुरु अतिचारी हो रहा है, ५ मंगलवार भी हैं तथा देवगण नक्षत्रमें शुक्रका उदय और कार्तिकी अमा.को चतुर्ग्रहीके कारण सिन्ध गुजरात राजस्थान पंजाब और पूर्वी प्रदेशोंमें उत्पात युद्ध रोगभय प्रकृति-प्रकोपसे हानि होगी। कार्तिकसे चैत्र तक आगामी ६ मास भारतके लिए चिन्ताजनक हैं। उग्र प्रदर्शन हड़ताल घेराव और छात्र संघर्ष अधिक होंगे। नवम्बरसे फरवरी तक अनेक प्रान्तोंमें भयंकर शीत हिमपात ओलावृष्टि शीतलहरसे हानि होगी। पाकिस्तान और बंगला देशमें भीषण विनाश होगा। केन्द्र और प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलों में परिवर्तन होगा। कुछ वरिष्ठ मंत्री पदच्युत होंगे। इस अवधिमें प्रधानमंत्रीको भी स्वास्थ्य की ओरसे सतर्क रहना चाहिए। वर्गविद्वेष या

दलबन्दियाँ उग्ररूप धारण करेंगी। भ्रष्टाचार युद्धोन्माद बेकारी एवं अनुशासनहीनता बढ़ेगी।

भारतका गौरव बढ़ेगा

अनेक आपत्तियों और संघर्षोंके बाद भारतका गौरव बढ़ेगा। अग्निपरीक्षामें सुवर्ण की भांति भारत खरा उतरकर अपनी प्रभासे विश्वको आलोकित करेगा। आगामी वर्ष धनु: राशिके बलवान् गुरुमें भारतीय संस्कृति सभ्यताकी प्रगति प्रारम्भ होगी। भारतके समान इंगलेण्ड अमेरिका फ्रांस जर्मनी आदिमें भी मर्मज्ञ भविष्य द्रष्टा विद्वान् हो चुके और कुछ अभी भी हैं—जिनकी भविष्यवाणियां स्थानीय पत्रोंमें छपती रहती हैं। अभी फ्रांसके एक विद्वान्‌की भविष्यवाणीका अनुवाद भारतके कुछ पत्रोंने प्रकाशित किया है, वह हम अपने पाठकोंकी जानकारीके लिए यहां प्रस्तुत कर रहे हैं—

"जूलवर्न एक फ्रांसीसी लेखक हैं। पर वे लेखकसे भी अधिक भविष्यवक्ताके रूपमें प्रसिद्ध हुए हैं। आज जूलवर्न अंतरराष्ट्रीय जगत्‌के भविष्यवक्ता माने जाते हैं, जूलवर्नने वर्षों पूर्व अनेकों भविष्यवाणियां की थी जिनमेंसे बहुत सी पूरी हो चुकी हैं और अनेकों ऐसी भविष्य-वाणियां हैं जिनके भविष्यमें पूरी होनेको काफी सम्भावना है।

जूलवर्नका कहना है कि चन्द्रमाके बाद मनुष्य अन्य ग्रहोंकी खोज करेगा और १९८५ तक सौर मण्डलके सभी ग्रहोंकी जानकारी उपलब्ध हो जाएगी। वर्नकी यह भविष्यवाणी सत्य होने जा रही है, मङ्गल तथा शुक्र ग्रहके लिए अनेकों यान भेजे जा चुके हैं। रूसका नवीनतम यान शुक्र ग्रहमें पहुंचनेमें सफल हो चुका है। जूलवर्नने कुछ और भी भविष्य-वाणियां की हैं। **सन् १९७० से १९८० तक दस वर्ष तक भीषण प्राकृतिक हलचल होगी। वायु-दुर्घटनाएं, अतिवृष्टि, सूखा, बाढ़, भूकम्प आदि बढ़ेंगे। सन् २००० तक विश्वकी आबादी ६४० करोड़के लगभग होगी। परमाणु युद्धके स्थान पर संघर्ष बढ़ेगा।** वर्ग संघर्षके अतिरिक्त एक अनोखी धार्मिक क्रांति भी होगी। यह क्रांति ईश्वर और आत्माकी ओर नये-नये रहस्योंको प्रकट करेगी, विज्ञानके द्वारा इसकी पुष्टि होगी। यह धार्मिक क्रांति भारतवर्षसे उठेगी और इस क्रांतिका संचालन भारतका ही कोई व्यक्ति करेगा। यही नहीं, सन् २००० तक अनेकों देशोंमें हिन्दू देवी-देवताओंके विभिन्न मंदिरों की स्थापना हो जाएगी और इन मन्दिरोंमें लाखों लोग भजन, कीर्तन, पूजा, उपासना व भारतीय संगीतका आनन्द पानेके लिए आयेंगे। यही नहीं, यूरोपियनोंके घरोंमें भारतीय देवी-देवताओंके चित्र भी लगे हुए मिल सकेंगे। भारतके दो शत्रु पड़ोसी देशोंके बारेमें श्री वर्न ने भविष्यवाणी की है कि चीन अणु बम बना कर भी एशियामें प्रभुता सम्पन्न देश नहीं बन पायेगा। भारत न केवल अपनी भूमि छुड़ा लेगा, अपितु तिब्बतको भी मुक्त करा लेगा। पाकिस्तान काफी समय तक बना नहीं रह पायेगा, इसका कुछ भाग अफगानिस्तानमें मिल जाएगा व कुछ भारत ले लेगा। संसारके किसी सर्वाधिक प्राचीन पर्वत -जो अक्सर बर्फसे ढका रहता है—पर कुछ ऐसी सामग्री पुस्तकों और स्वर्ण-मुद्राओंका भंडार मिल सकता है, जो ईसा के पूर्व इतिहासको बिल्कुल बदल सकता है। इसी भू-भागसे एक रहस्यमय व्यक्तिका अभ्युदय होगा जो आज तकके इतिहासका सबसे अधिक सभ्य व्यक्ति सिद्ध होगा।"



दक्षिण भारत यात्रा संस्मरण

श्रीमीनाक्षी कन्याकुमारी पद्मनाभ और श्रीरंगम्

[ले० श्री शंकरलाल बी. पंचारिया, १२५ मिण्ट स्ट्रीट मद्रास—१]

भगवती श्री मीनाक्षी क्षेत्र मदुरा

गताङ्कमें श्रीरामेश्वर यात्राका विवरण दिया जा चुका है। २० जनवरी ७१ को सायंकाल कोयम्बटूर एक्सप्रेसमें श्रीरामेश्वर धामसे त्रिवेदीजीने प्रस्थान किया। कोयम्बटूर एक्सप्रेस एक घण्टा लेट होनेसे रात्रि १०॥ बजे मदुरा स्टेशन पर पहुंची। स्टेशनके समीप ही सेठ मगनीरामजी बांगड़की प्रसिद्ध विशाल धर्मशाला है। यात्रियोंकी भीड़के कारण धर्मशाला भर चुकी थी और मैनेजर श्री धरणीधरजी शास्त्री आफिस बन्द करके ऊपर अपने आवासमें चले गये थे। श्री धरणीधरजी शास्त्री राजस्थानी सज्जन हैं। ३५ वर्षसे यहां रहते हैं और 'श्रीविश्वविजयपंचांग' एवं 'ज्योतिष्मती' पत्रिकाके अनन्य भक्त हैं। परन्तु त्रिवेदीजीसे कभी साक्षात्कार नहीं हुआ था। जब चपरासीने जाकर त्रिवेदीजीका परिचय पत्र दिया तो वे गद्गद हो नंगे पैर नीचे दौड़े आये। प्रणाम कर बोले—"भगवन्! बिना पूर्व सूचनाके यहां अकस्मात् पधारना कैसे हो गया? भगवतीने मेरी वर्षोंकी इच्छा आज पूर्ण कर दी।" धर्मशालाके सेवकोंको बुलाकर सब सामान ऊपर अपने निवासके साथ विशेष अतिथि-निवासमें पहुंचाकर सब सुव्यवस्था कर दी। यह अतिथि-निवास आम यात्रियोंके लिए नहीं है, किसी विशेष अतिथिके लिए सुरक्षित रहता है। त्रिवेदी-दम्पतिकी प्रबल इच्छा थी कि आज कृष्णाष्टमीके पर्व कालमें माँ मीनाक्षीके दर्शन रात्रिमें ही हो जावे, परंतु शयनका समय हो जानेसे मंदिरके पट बंद हो चुके थे। श्री शास्त्रीजीने कहा कि अब तो आप भोजन करके आराम कीजिये। प्रातःकाल स्नान सन्ध्या करके आप दर्शन कीजिएगा।

२१ जनवरी गुरुवारको प्रातः ८॥ बजे त्रिवेदी-दम्पति मदुराके बाजारमें होते हुए प्रसिद्ध ऐतिहासिक मीनाक्षी मंदिर पर पहुंचे। यहांके विशाल गोपुर और प्राकार दर्शनीय है। परिक्रमामें ही बाजार, कलाशाला, पुस्तकालय और मन्दिर-प्रबन्ध-समितिके कार्यालय हैं। यहांकी शिल्पकला अद्भुत है। पूरी परिक्रमामें घूमकर सब मंदिरोंके दर्शन करके हर वस्तुको ध्यानसे देखें तो ६ घंटे भी कम है। माँ मीनाक्षी की अर्चनाके लिए श्रीफल पूजासामग्री लेकर प्रधान मंदिरके द्वार पर पहुँचे। यहां पुरुषोंको कुरता बनियान कोट पगड़ी सब उतार देने पड़ते हैं। केवल धोती और एक उपवस्त्र (बिना सिली चादर या दुपट्टा) कन्धे पर रखकर अर्चना कर सकते हैं। दक्षिण भारतके प्रायः सभी प्रसिद्ध मंदिरोंमें दर्शन इसी पद्धतिसे होते हैं। त्रिवेदीजीने बताया कि हमारी यह द्रविड़ सनातनपद्धति यवनोंके प्रधान तीर्थ मक्कामदीना में भी पहुँची है। हज्जयात्रियोंको मक्कामें मक्केश्वर लिंग (संगेअस्वद) के दर्शन चुम्बन केवल एक वस्त्र लुंगी और अंगोछासे ही होते हैं। वहाँ भी तहमत या पजामा कोट टोपी सब उतार देने पड़ते हैं। भगवतीके श्रीविग्रह

(मूर्ति) को कोई स्पर्श नहीं कर सकता। मुख्य द्वारकी देहली पर १५ फुट दूरसे दर्शन कर सकते हैं। पूजार्चनाकी सामग्री पुजारी माँके चरणोंमें रखकर कर्पूर आरती करके श्रीविग्रह के दर्शन भली भांति कराते हैं। दक्षिण भारतके सभी मुख्य मंदिरोंमें बिजलीके बल्व बाहर सर्वत्र लगे हैं, परंतु मुख्य द्वारके अन्दर श्रीविग्रह के समीप कहीं भी बिजली नहीं है। मुख्यमंदिर में तैल-दीप प्रज्वलित रहते हैं। भगवती श्री मीनाक्षीकी प्रतिमा बड़ी आकर्षक है, यहां जाकर श्रद्धालु यात्री आत्मविभोर हो तन्मय हो जाता है। कर्पूर आरतीके बाद पुजारी आधा श्रीफल प्रसाद और कुछ पुष्प यात्रीको देते हैं। त्रिवेदीजीने वहीं माँके चरणोंमें बैठ कर मध्यम-चरित्र और पंचस्तवीका पाठ किया। आज अष्टमी तो नहीं पर नवमी तिथि और गुरुवारकी पुण्य वेला थी। दर्शनोपरांत परिक्रमामें घूमकर सभी मंदिरोंके दर्शन किये। कलाशाला पुस्तकालय और बाजार देखे। मध्याह्न १२ बजे धर्मशाला पहुँचकर भोजन कर कुछ क्षण विश्राम किया। यहां मद्राससे आगे सर्वत्र तमिल केरल कन्नड़में मद्रासी भोजन चावल रसम् इटली डोसा ही मिलता है। उत्तरभारतीय भोजन पूरी परांवठा फुलका दाल चावलका कहीं एकाध भोजनालय है। मदुरामें इस धर्मशालाके समीप पीछे एक गुजराती होम भोजनालय है, वहां गुजराती भोजन उत्तम रीतिसे इच्छानुसार मिलता है।

विश्रामके अनन्तर त्रिवेदीदम्पत्तिने यहांके प्रसिद्ध मदनगोपाल विष्णुमंदिर, और मुख्य स्थलोंके दर्शन किये। यहांका गांधी म्यूजियम, तिरुमलाईनाईक पैलेस, मेरी अम्मा तप्पाकुलम् और गोल्डन लीली टैंक दर्शनीय स्थल हैं।

कन्याकुमारी और श्रीविवेकानन्दस्मारकशिला

श्रीमती त्रिवेदीकी इच्छा थी कि अब कल शुक्रवार दशमीको भगवती श्रीकन्याकुमारीके दर्शन होने चाहिएं। श्रीमती त्रिवेदी कुछ वर्षोंसे शुक्रवारका व्रत भी रख रही हैं। कन्या कुमारी रेल्वे स्टेशन नहीं है। त्रिवेन्द्रम् या तिरुनलवेली स्टेशनसे बस द्वारा पहुँचना पड़ता है। श्रीधरजी शास्त्रीने बताया कि हमें त्रिवेन्द्रमसे जानेमें काफी चक्कर पड़ेगा, अतः तिरुनलवेल्ली स्टेशन से बस द्वारा कन्या कुमारी जल्दी पहुँच सकेंगे। रात्रि १०॥ बजेकी गाड़ीमें श्रीधरजी शास्त्रीने अपना आदमी भेजकर रिजर्वेशन कराके टिकट मंगवा दिये और भोजनोपरान्त वार्तालाप करके गाड़ीमें बिठाया। प्रातः ७ बजे तिरुनलवेल्ली स्टेशन पर उतरकर ८ बजे कन्या कुमारीकी बस पकड़ी। यहांसे कन्याकुमारी ५६ मील है। कन्याकुमारी बहुत छोटा किन्तु साफ सुथरा नगर है। जिसके तीनों ओर महासमुद्रकी उत्ताल तरंगे हृदयको आल्हादित करती हैं। बस स्टेण्ड पर दो धर्मशालाएं हैं, पर उनकी व्यवस्था ठीक नहीं है। कमरोंमें न पानीकी व्यवस्था है और न खाट चारपाई पंखा बिजली ही है। कुछ आधुनिक ढंगके सुविधाजनक किरायेके आवास-गृह भी बन गये हैं। यहां 'गोपीनिवासम्' नामक लाजमें १०) रु० दैनिक किराये पर एक कमरा लिया, जिसमें त्रिवेदीजी को बिजली पंखा नल बाथरूम आदिकी सभी सुविधाएं प्राप्त थीं। पूर्वी समुद्रके किनारे यह सुन्दर विश्रामगृह बना हुआ है। ऊपरकी मंजिलमें हमारे कमरेकी खिड़कीसे विशाल समुद्र दिखाई दे रहा था और यहांसे प्रातः कालीन सूर्योदयकी शोभा भी दीखती थी। यहाँ तीन समुद्रों—हिन्दमहासागर-अरबसागर

और बंगालकी खाड़ी का त्रिवेणी संगम स्थल है । त्रिवेदीजीने सर्वप्रथम सपत्नीक संगम स्नान किया । नित्यकृत्य सन्ध्यापाठ और भोजनोपरान्त विवेकानन्द स्मारकशिला पर गये । यह स्मारक बड़ा विशाल मनोमुग्ध-कारी बना है। भारतके प्रत्येक प्रान्तसे इसमें लाखों रुपया लगा है । लगभग आधा मील समुद्रमें एक विशाल चट्टान पर यह स्मारक बना है । समुद्री नाव (आगबोट) द्वारा स्मारक पहुंचा जाता है। विवेकानन्द आश्रमसे प्रत्येक यात्रीको १) रु० में आगबोटमें जाने आनेका टिकट और स्मारकपुस्तिका मिलती है । बोटमें जाते समय समुद्रकी लहरें २०-३० फुट ऊंची जा रही थीं और यांत्रिक नाव डगमगानेसे भयसा लगता था । समुद्री उफानके पानीसे यात्रियोंके वस्त्र भीग रहे थे, परन्तु माघ मासमें भी यहां गरमी थी। कमरेमें पंखा चलाना पड़ता था । शिला पर पहले अतिथि-निवास पुस्तकालय और बड़ा हाल तथा कई कमरे बने हैं और अभी बन रहे हैं। थोड़ी दूर तक पुल भी बन गया है । ऊपर विशाल मण्डपमें श्री स्वामी विवेकानन्दजीकी विशाल प्रतिमा है । यह मण्डप दुमंजिला है। संगमरमर लगा है । शिल्पकलाकी दृष्टिसे यह स्मारक अद्‌भुत है । सभामण्डपमें दिनभर कीर्तन प्रवचन गीता उपनिषद् पाठ चलते रहते हैं - जो बड़े-बड़े ध्वनिविस्तारक यन्त्रों (लाउडस्पीकरों) से कन्याकुमारी नगर तक समुद्र किनारे स्पष्ट सुनााई देता है । सभामण्डपके सामने ही भगवती कन्याकुमारीके चरणचिह्नका मण्डप है । इस स्मारक शिला पर पहुंचकर तीनों ओर अथाह जलराशिको लिए समुद्रकी उत्ताल तरंगे और एक ओर अथाह जलराशिको पारकर कुछ दूरी पर सामने भगवती कन्याकुमारीका विशाल मंदिर, गांधी-स्मारक और किनारे पर बसे छोटेसे नगरकी शोभा देखकर एक वर्णनातीत आनन्द प्राप्त होता है । लगभग दो घण्टे इस रम्य स्मारक शिलापर घूमफिर कर आगबोटसे पुन: कन्याकुमारी तटपर आ पहुंचे । सायंकाल ५ बजे त्रिवेदी दम्पतिने श्रीफल अर्चना सामग्री लेकर भगवती कन्याकुमारीके दर्शन किये । यहां अर्चनाके लिये ५० पैसेका टिकट अलग लेना पड़ता है। भगवती कन्याकुमारीकी मूर्ति अत्यन्त तेजस्वी और आकर्षक है । यहां भगवतीके तीन रूपोंमें दर्शन होते हैं। प्रात:काल बालरूपमें, मध्याह्न युवा रूपमें और सायंकाल वृद्धारूपमें । मूर्त्ति कृष्णपाषाण की है, परंतु दिव्यचन्दन लेपसे भगवतीका मुखारविन्द अत्यन्त गौर दिखाई देता है। वस्त्रालंकार और आभूषणोंकी अद्‌भुत छटा निराली ही होती है । प्रात:काल ब्राह्ममूहूर्तमें जब भगवतीका अनावरण पंचामृत अभिषेक होता है उस समय दर्शनार्थी समझ पाता है कि भगवती कन्याकुमारीका वास्तविक गौरवर्ण नहीं, अपितु यह तो आद्या महाशक्ति कालीका स्वरूप है । त्रिवेदीजीको दूसरे दिन शनिवारको प्रात: ब्राह्ममुहूर्तमें इस महाभिषेक पूजाके दर्शन का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ ।

भगवती कन्याकुमारीके दर्शन करके सूर्यास्तसे कुछ मिनट पहले गांधी-स्मारक पहुंचे । यह तिमंजिला विशाल भवन समुद्रके संगम पर उसी स्थान पर बनाया गया है जहां १३ फरवरी १९४८ को गांधीजीकी भस्म प्रवाहित की गयी थी । इस भवनकी छतपरसे अनेक यात्रियोंके साथ हमने भी समुद्रमें सूर्यास्त दर्शनका आनन्द लिया । और उद्यान तथा नगरके प्रमुख स्थलोंको देखकर रात्रिको पुन:

कन्याकुमारीके शयन दर्शन करके अपने स्थान पर जाकर विश्राम किया।

कन्याकुमारीसे नागरकोइल होकर केरल और तमिलनाडकी राजकीय बसें दिनभर त्रिवेन्द्रम् और तिरुनलवेल्लीके लिए चलती रहती हैं। कुछ प्रायवेट टेक्सी कारें भी चलती हैं, उनका किराया डबल है। रात्रीको एक टेक्सीड्रायवरने कमरेमें आकर टूटी फूटी हिन्दीमें कहा—"यदि आपको त्रिवेन्द्रम् जाना हो तो दो सवारियें मेरे पास है, आपको भी प्रातः ६ बजे यहींसे ले लूंगा। मेरी नयी गाड़ी नीचे खड़ी है, दो घण्टेमें त्रिवेन्द्रम् पहुंचा दूंगा। रास्तेमें ३ मील के अन्तर पर शुचीन्द्रम् तीर्थ क्षेत्रके दर्शन भी करा दूंगा। बसमें जानेसे यह दर्शन नहीं होंगे।" नये तीर्थस्थलके दर्शन लोभ और सुविधाकी दृष्टिसे त्रिवेदीजीने ड्रायवरको स्वीकृति दे दी। शनिवार २३ जनवरीको प्रातः ४॥ बजे भगवती श्री कन्याकुमारीके अभिषेक का दिव्य दर्शन करके सध्न्यापाठसे निवृत्त हो ६ बजे मोटरकारसे प्रस्थान किया।

सुचीन्द्रम्

यह भगवान् शिवका ऐतिहासिक मन्दिर है। कहते हैं भगवती कन्याकुमारी भगवान् शिवसे पाणिग्रहणके लिए हाथमें अक्षत कुंकुम थाल लिए प्रतीक्षा कर रहो थी, उधर बरात लेकर भगवान् शिव आ रहे थे, मार्गमें इसी स्थान पर एक राक्षससे भगवान्का भयंकर युद्ध आरम्भ हो गया। और पाणिग्रहणका मुहूर्त टल जानेसे भगवतीने हाथके अक्षत यत्रतत्र फेंक दिये उन्हींसे यूरेनियम (अमूल्य) धातु बना। यहां दर्शन अर्चनाके लिए २५ पैसेका टिकट है। विशाल शिवलिंगके दर्शन और परिक्रमामें अनेक देवी देवताओंके मंदिर हैं, इनमें एक २१ फुट ऊंची विशाल श्री हनुमानजी की मूर्ति बड़ी विलक्षण है। मूर्तिके बाईं ओरसे सीढ़ी पर चढ़कर भक्तगण गुलाबजल और अतर सुगंधित तैल श्रीहनुमान्जीके मस्तक पर चढ़ाते हैं। आज शनिवारको भगवान् श्री हनुमान्जीका यह दिव्यदर्शन करके बड़ा आनन्द आया। यहां मंदिरमें चार स्तम्भ पत्थरके ऐसे हैं जिनपर हाथकी अंगुलियां मारनेसे तबला मृदंग वीणा और सारंगीकी मृदु ध्वनियां निकलती हैं। यह उत्कृष्टकला जब पुजारीने बताई तो सबको बड़ा आनन्द और आश्चर्य हुआ। यहां ऐरावत हाथी पर सवार देवराज इन्द्र और इन्द्राणी (शची) की प्रतिमा भी है, अतः त्रिवेदीजीने कहा कि इस स्थलका नाम 'शचीन्द्रम्' होना उपयुक्त है। अपभ्रंशसे सुचीन्द्रम् हो गया होगा।

त्रिवेन्द्रम्में श्रीपद्मनाभ

शचीन्द्रम्से त्रिवेन्द्रम् तक ५० मील केरल प्रान्तका मार्ग बड़ा ही रमणीय मनोमुग्धकारी है। पक्की सड़कके दोनों ओर नारीयल काजू ताड़ चीकू आम केले आदिके सुन्दर हरे भरे वृक्ष, और शाक सब्जी तथा सुन्दर पुष्पों, लताओंसे लहलहाते उपवन, ऊंचीनीची छोटी पहाड़ियों पर बसे सुन्दर ग्राम और सड़कके दोनों ओर निर्झरों उपवनोंमें बने मट्टी और घास पत्तोंके साफ सुथरे कृषकोंके घर बड़े ही सुन्दर प्रतीत हो रहे थे। केरल प्रान्तकी यह कार यात्रा त्रिवेदीजीको अत्यन्त सुखद प्रतीत हुई। कहने लगे—'यह तो भूस्वर्ग काश्मीरकी प्रतिकृति है।" मध्याह्न १२ बजे हमारी गाड़ी केरलकी राजधानी त्रिवेन्द्रम् नगरके मुख्य

बाजारमें स्थित मूलजी जेठाभाई गुजरातीकी प्रसिद्ध धर्मशालाके द्वारपर जा खड़ी हुई। धर्मशालाके व्यवस्थापकने कमरा खोल दिया और रजिस्टरमें जब त्रिवेदीजीका नाम पता लिखा तो श्रद्धावनत होकर बोला—"मैं आपके नाम और कामसे तो परिचित हूँ, सौभाग्यसे आज दर्शन भी हो गये, सेवाका अवसर दीजिये।" अपने सेवकसे कमरेमें सब सामान व्यवस्थित रखवा दिया। धर्मशालाके समीप ही 'सौराष्ट्रभवन भोजनालय' है जहां गुजराती राजस्थानी भोजन सुन्दर शुद्ध रूपमें मिलता है—वहां जाकर भोजन किया। और दो घण्टे विश्रामके अनन्तर नगरावलोकन करते हुए यहां के प्रसिद्ध पद्मनाभ मंदिर पहुंचे। यह महाराजा मैसूरका विशाल ऐतिहासिक मन्दिर है। दाहिनी ओर तालाब और बाईं ओर कोतवाली पुलिस स्टेशन और मंदिर प्रबन्धक कार्यालय हैं। विशाल परिक्रमामें ही भगवान् पद्मनाभका विशाल भण्डार, रसोईघर, गौशाला, शृंगारगृह, आभूषणगृह, शयनगृह, पुस्तकालय, कलाशाला और पुजारी कर्मचारियोंके आवासगृह बने हैं। शेषशायी विष्णुभगवान् (पद्मनाभ) की विशाल प्रतिमा है। अर्चना व दर्शन क्रम रामेश्वर मीनाक्षी जैसा ही है। परिक्रमामें चारों ओर पत्थरों पर एक लाख दीपक बने हैं। एकादशी संक्रान्ति और अमावस्या पूर्णिमाको इन एक लक्ष दीपकोंमें तैल भरकर दीपावली सजाई जाती है। इस मंदिरमें कलाशाला अद्भुत है। जानकार लोग ही इसे आनन्दसे देख पाते हैं। मैसूरके पत्थरोंसे बना यह विशाल मण्डप है। लगभग ५०० फुट लम्बा ३० फुट चौड़ा है। दीवारों पर पक्के रंगसे रामायण महाभारत-कालीन चित्रकला दर्शनीय है। इसमें २८ पत्थर के स्तम्भ ऐसे हैं जिनपर अंगुलियां और हाथ चलाने पर संगीतका 'सरगम' और विविध वाद्यकी मधुर ध्वनियां सुनाई देती हैं। एक स्तम्भमेंसे जो ध्वनि निकलती है वही ध्वनि दूसरे कोनेपर दूर स्थित स्तम्भमेंसे भी सुनाई देती है। कलाशालाके प्रबन्धकने अन्दर लेजाकर यह सब हमें दिखाया और स्तम्भोंसे ध्वनियां सुनाईं। इतिहास चित्रकला साहित्य और संगीतकी उत्कृष्टकलाके दर्शन इस कलाशालामें होते हैं।

यहां मंदिरमें पहुँचनेसे पहले ही धर्मशाला में विश्रामके समय त्रिवेदीजीने निश्चय कर लिया था कि आज एकादशीमें यहां भगवान् श्री पद्मनाभके दर्शन करके कल द्वादशीको भगवान् श्रीरंगके दर्शन और कावेरी स्नान करेंगे। त्रिवेन्द्रम् से श्रीरंगम् ५०० कीलोमीटर है। त्रिवेन्द्रम्-मद्रास एक्सप्रेस विरुदनगर होती हुई तिरुचिरापल्ली दूसरे दिन प्रातः १०-५ पर पहुंचती है। त्रिवेन्द्रम् सेण्ट्रल स्टेशनसे यह गाड़ी सायंकाल ७-३० पर चलती है। धर्मशालाके कर्मचारीको स्टेशन भेजकर इसी गाड़ीका रिजर्वेशन करवा लिया था। तिरुच्चिरापल्ली जंकशनसे श्रीरंगम् स्टेशन १२ किलोमीटर पर तीसरा स्टेश- है। पहले त्रिवेदीजीको यह ज्ञात नहीं था कि .एकादशीकी रात्रिको पद्मनाभ मंदिरमें लक्षदीपोत्सव होता है। अतः इस आनन्दसे वंचित रहे, क्योंकि सायं ७॥ की एक्सप्रेसमें रिजर्वेशन करा चुके थे, अस्तु।

तिरुच्चिरापल्ली

मद्रास एक्सप्रेस एक घण्टा लेट थी, अतः २४ जनवरी रविवारको ११ बजे तिरुच्चिरा-पल्ली पहुंचे। श्रीरंगम्से सोमवारको बंगलौर जानेका विचार था। ट्रेनमें ही श्रीमती त्रिवेदी ने पूछा कि—बंगलौरमें कोई पुण्यक्षेत्र देवालय

या प्रसिद्ध नदी है या नहीं ?' त्रिवेदीजोने उत्तर दिया कि—'बंगलोरमें कोई विशेष तीर्थ स्थल नहीं सुना। दर्शनीय नगर है।' इसपर श्रीमती त्रिवेदीने अनुरोध किया कि तब सोमवारको श्रीरंगम् नहीं छोड़ना। मंगलवारको मौनी अमावस्या है अतः ३ दिन श्रीरंगम्में रुकें। अमावस्याको भी उत्तर दक्षिण कावेरी स्नान और भगवान् श्री रंगजीके दर्शन करके सायकाल की गाड़ीसे चलना चाहिए। इस कार्यक्रमके अनुसार आज २४ को त्रिचि जंकशनसे २६ जनवरीकी सायंकाल ७।४० पर कोचीन एक्स-प्रेसमें दो शायिकायें शयनयानमें रिजर्व करा लीं। तिरुच्चिरापल्लीका संक्षिप्त नाम त्रिचि है। त्रिवेन्द्रम्से रात्रिको शयनयानमें ही एक आर० कृष्णन् नामक मद्रासी सज्जन वार्तालाप में त्रिवेदीजीके भक्त बन गये। उन्होंने ही बंगलौर मैसूर जानेका मार्गदर्शन कराया और त्रिचि जंकशन पर गाड़ी आधा घण्टा ठहरती है। इसी समय बुकिंग आफिसमें दौड़धूप कर स्थानीय बाबुओंसे तमिल भाषामें बातचीत करके फार्म भरकर २६ जनवरीको बंगलौरकी दो बर्थ रिजर्व करा दीं। और यहांसे श्रीरंगम्के टिकट भी बनवा दिये। एक नवपरिचित आर० कृष्णन्का मानवोचित सद्व्यवहार स्मरणीय रहेगा। इधरके स्टेशनों पर रिजर्वेशन कराना भी एक समस्या है। तमिल कन्नड़ या अंग्रेजीके सिवाय बात नहीं करते और बिना परिचयके या बिना भरपूर दान दक्षिणा (रिश्वत) लिए रिजर्वेशन असम्भव। भगवान्ने त्रिवेदीजीकी यह समस्या सहजमें हल कर दी।

श्रीरंगम् और पुण्यसलिला कावेरी

त्रिची जंकशनसे दूसरी गाड़ीमें सवार हो १२॥ बजे श्रीरंगम् स्टेशन पर उतरे। स्टेशनसे २ मील पर श्रीरंगजीका विशाल मंदिर है। मंदिरके पश्चिमी द्वार पर सेठ मगनीराम रामकुमार बांगड़जीकी विशाल दुमंजिली धर्मशाला है—इसीमें निवास किया। मदुराई धर्मशालाके मैनेजरने यहांके मैनेजरको सूचित कर दिया था अतः यहाँके व्यवस्थापकने भी त्रिवेदीजीकी सब सुव्यवस्था कर दी। उत्तर दक्षिण कावेरीके मध्य यह छोटासा श्रीरंग नगर बसा है। नगरके मध्यमें यह विशाल मंदिर बना है। शिल्पशास्त्रमें मंदिरके सम्बन्धमें जितनी मुख्य बातें बताई गई हैं उन सबका निर्वाह इसकी बनावटमें किया गया है। सात लोकोंकी संख्यासे सात विशाल प्राकार या परिक्रमाएं बनाई गई हैं जिनमें लगभग आधा नगर बसा हुआ है। यहां २१ गोपुरम् हैं, इनमें पूर्वद्वारका वेल्लेगोपुर सबसे ऊंचा १६५ फुट का है। मंदिरके चारों ओर अन्दर छोटे बड़े अनेक मंदिर हैं। इनमें श्रीलक्ष्मीजी रंगनायिका श्रीगरुड़जी, श्री हनुमान्जी, श्रीरामानुज स्वामी के मंदिर, हजारस्तम्भी विशालमण्डप, गरुड़ मण्डप, और घुड़सवारों की कतार शिल्पकलाकी दृष्टिसे विशेष दर्शनीय स्थल हैं। मंदिरके मध्य गर्भगृहमें शेष शय्या पर कृष्णवर्ण भगवान् विष्णुकी १५ फुट लम्बी विशाल मूर्ति शयन कर रही है। इस गर्भगृहमें भी बिजली नहीं है। तैलदीपक हैं। अर्चना करने वाले यात्रियोंको पुजारी कर्पूर आरती करके भगवान् के दर्शन कराते हैं। अर्चना टिकट ५० पैसे हैं। श्रीफल पुष्पमाला प्रसाद आदि यथाशक्ति भेंट कर सकते हैं। दिनमें केवल एक बार दो घण्टेके लिए धर्म दर्शन (निःशुल्क) होते हैं, शेष समयमें ५० पैसेका टिकट है। भगवान्का यह विशाल श्रीविग्रह अचल है। भगवान्के

श्रीविग्रहके सामने छोटी चल उत्सव मूर्ति पीठ पर विराजमान है। अतः भगवान्‌के नाभिस्थलके दर्शन नहीं हो पाते। यात्रीगण मुखारविन्द वक्ष-स्थल और चरणारविन्दोंके दर्शन कर्पूर प्रकाशमें कर सकते हैं। सायंकाल ५ बजे त्रिवेदी दम्पतिने श्रीफल पुष्पमाला और मिश्रीका प्रसाद लेकर अर्चना टिकट ले श्रद्धापूर्वक श्रीरंगके अपूर्व दर्शन किये और बादमें सातों प्राकारोंमें स्थित विघ्नविनायक, लक्ष्मी, दुर्गादेवी, नरसिंह, गोदाम्बा, सरस्वती, हयग्रीव, गरुड़, आल्वार, पेरुमाल आदि देवताओंके दर्शन करके रात्रि विश्राम किया।

दूसरे दिन प्रातः २५ जनवरी सोमवारको त्रिवेदीजी कावेरी स्नानको गये। मंदिरसे दक्षिण कावेरी दो कीलोमीटर पश्चिममें है। तांगा व बेलगाड़ियोंमें भी कई यात्री जाते हैं, परंतु श्रीमती त्रिवेदीने प्रातःकालीन वायुसेवन के साथ पैदल जाना ही निश्चित किया। सूर्योदय होते होते पुण्यसलिला कावेरीके विशाल तट पर पहुंच गये। यहां गंगाके समान कावेरी का विशाल चौड़ा पाट और अथाह जलराशि है। पक्के घाट दूर तक बने हैं, काबेरी गंगा पूजन करानेके लिए पुरोहित पण्डे पुष्पचन्दन अक्षत पुजा सामग्री लिये बैठे हैं। एक घाटिये पण्डेके पास त्रिवेदी-दम्पतिने वस्त्र रख कावेरीमें स्नान तथा पूजन करके वहीं शिवालयमें सन्ध्या पाठ किया और मार्गमें सुरम्य वाटिकाओं तथा मंदिरोंके दर्शन करते हुए ६ बजे धर्मशाला लौट आये। भगवान् श्रीरंगनाथके दर्शन करके जम्बुकेश्वर महादेवके दर्शन किये। यह श्रीरंग मंदिरसे दो मील पर है। यहांसे लौटते हुए दुपहरके १२ बज चुके थे।

भोजनकी समस्यामें गणेशजीके दर्शन

त्रिवेदीजीने इस यात्रामें यह नियम बना रक्खा था कि सिवाय किसी आत्मीयजनके तीर्थ क्षेत्रमें अन्य किसीका अन्न ग्रहण नहीं करना। इधर वैष्णव भोजनालय तो हैं, पर उनमें मद्रासी भोजन चावल रसम्, इटली, डोसा ही मिलता है। पूरी परांवठा या दाल रोटी कहीं नहीं। मैनेजरने बताया कि—"तिरुचिरापल्ली शहरमें इब्राहीम पार्कके समीप जफरशाही रोड़ पर श्रीमहालक्ष्मीनिबास भोजनालय है, वहां ब्राह्मण रसोइये द्वारा बना हुआ राजस्थानी गुजराती शुद्ध भोजन दाल चावल फुलका शाक सब्जियां चटनी अचार दही मक्खन इच्छानुसार सब मिलता है। अपने राजस्थानी जितने भी सेठ साहूकार यात्री आते हैं सब वहीं जाकर भोजन करते हैं। अतः जब आपने हमारा भोजन ग्रहण नहीं करना है तो यहांसे लोकल बस तिरुच्ची जाती है। ५ मील है, ७० पैसे किराया है। वहां जाकर भोजन करें और नगरावलोकन करके वहीं पहाड़ी पर प्रसिद्ध गणेश मंदिरके दर्शन करके सायंकाल लोकल बससे लौट आवें। अभी मध्याह्न समय यहां भगवान् श्रीरंगजीका प्रसाद बिकता है - चार आनेमें एक कटोरी खिचड़ी और एक मोटा डोसा मिलता है—यह लेकर आप नाश्ता कर लें, क्योंकि अब तिरुच्ची पहुंचने तक भोजनालय बन्द हो जावेगा। सायंकाल ५ बजे खुलने पर पहुंच जावें।" मैनेजरकी यह राय त्रिवेदीजी को पसन्द आ गयी। प्रसाद मँगवाकर नाश्ता करके थोड़ी देर विश्राम कर लोकल बससे तिरुचिरापल्ली गणेश मंदिर जा उतरे। पहाड़ी पर बना यह बड़ा विशाल मंदिर है। नगरकी सड़कसे पहाड़ पर चढ़नेके मुख्य द्वार पर पहले गणेशजीका छोटा मंदिर और चित्रशाला है

इसके बाद भूमते हुए गजराज (हाथी) के दर्शन होते हैं। फिर ऊपर चढ़नेके लिए चक्राकार हज़ारों सीढ़ियां हैं। चढ़ाईमें अनेक देवी देवताओंके मंदिर और दुकानें तथा कुछ आफिस हैं। स्थूल या निर्बल आदमीको चढ़नेमें कठिनाई होती है। श्रीत्रिवेदीजीका शरीर कुछ स्थूल होनेसे इन्हें थकावट हो रही थी, पर श्रीमती त्रिवेदी अस्वस्थ एवं कृषकाय होनेपर भी प्रसन्नतासे आगे चल रहीं थीं। बाहरसे तो यह मंदिर छोटा दिखाई देता है पर अन्दरसे बड़ा विशाल है। ज्यों-ज्यों उपर चढ़ते हैं गवाक्षोंमेंसे तिरुच्ची नगर और कावेरीका दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई देता है। पहाड़की चोटी पर गणेशजीका सुन्दर मंदिर है। भव्यमूर्तिके दर्शन कर कुछ क्षण वहां विश्राम किया। यहांसे सारा तिरुचिरापल्ली नगर और कावेरीका दृश्य बड़ा ही मनोहर दिखाई दिया। श्रीरंगम् गोपुरके दर्शन भी यहांसे हो रहे थे। यह एक प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है। श्रीरंगमके यात्री इस गणेश मंदिर और जम्बुकेश्वरके दर्शन अवश्य करते हैं। ऊपर पहुंचकर ठण्डी हवामें सब थकावट दूर हो जाती है। मंदिरसे नीचे उतरकर उक्त श्रीलक्ष्मीनिवास-भोजनालयमें आनन्दपूर्वक भोजन करके लोकल बस द्वारा सायंकाल ७॥ बजे श्रीरंगम् पहुंच गये। भगवान्के दर्शनार्थ मंदिरमें प्रवेश किया तो परिक्रमामें भगवती श्री महालक्ष्मीजीकी सवारी स्वर्ण रजतमण्डित विशाल सिंहासन पर निकल रही थी। ज्ञात हुआ कि हर कृष्णा चतुर्दशीको यह सवारी निकलती है। महालक्ष्मीकी स्वर्ण मूर्ति सिंहासन में विराजमान थी। पुजारी सिंहासन उठाये हुए थे। कुछ वेदमंत्र उच्चारण कर रहे थे तो सैंकड़ों भक्तगण तमिल स्तोत्र भजन और मृदंग मंजिरा आदि वाद्य बजा रहे थे। हजारों यात्री इस सवारीके अद्भुत दर्शनको लालायित थे। भाग्यवशात् त्रिवेदी दम्पतिको यह अद्भुत दर्शन अनायास ही प्राप्त हो गये। आरतीके अनन्तर भगवान् श्रीरंगके दर्शन किये और कुछ देर मंदिरमें ही विश्राम करके रात्रि १० बजे शयन दर्शन करके धर्मशालामें रात्रिविश्राम किया।

श्रीमती त्रिवेदीको श्रीरामेश्वरम्से ही जुखामका जोर चल रहा था अतः त्रिवेदीजीने कहा कि—"अब तुम सर्वत्र ठण्डे जलमें शिर समेत स्नान मत करो। कल कावेरीका आचमन और नमस्कार मात्र कर लेना।" परंतु यह कहां मानने वाली थीं, बोलीं—कल माघकी मौनी अमावस और यहां रहकर भी मैं कावेरी स्नान न करूं? कल तो उत्तर दक्षिण दोनों कावेरीमें स्नान करना है। स्वास्थ्य रहे चाहे न रहे, ऐसे पुण्य अवसर जीवनमें फिर कहां मिलते हैं? अतः ऐसी उल्टी शिक्षा न दीजिए।

मौनी अमा. पर्वमें नवतीर्थ कावेरी स्नान

२६ जनवरी मंगलवार मौनी अमावसको प्रातः ब्राह्ममुहूर्तमें उठकर त्रिवेदी-दम्पति पहले उत्तर कावेरी पहुँचे, यहां स्नान करके फिर दक्षिण कावेरीमें स्नान किया और यहांके पवित्र ६ तीर्थोंका लाभ लिया। ये तीर्थ हैं –

१ चन्द्र पुष्करिणी तीर्थ, २ बिल्व तीर्थ, ३ जम्बुतीर्थ, ४ अश्वत्थतीर्थ, ५ पुन्नागतीर्थ, ६ वकुलतीर्थ, ७ पलाशतीर्थ, ८ कदम्बतीर्थ और ९वां अम्बालतीर्थ। अनन्तर मध्याह्नकालमें भगवान् श्री रंगके दर्शन अर्चना करके मंदिरसे खिचड़ी डोसा मालपुवा प्रसाद लिया और धर्मशालामें आकर अपराह्न समय यही प्रसाद पाकर सायंकाल ५॥ बजे इस पुण्यपुरीसे प्रस्थान कर बेंगलोर जानेके लिए तिरुच्चिरापल्ली

जंकशन पहुंचे। शयनयानमें शायिकायें सुरक्षित करवा रक्खी थीं उसमें अपने बिस्तर लगाकर आरामसे बैठ गये। रात्रि ८—१५ पर कोचीन बंगलोर एक्सप्रेस तिरुच्ची जंकशनसे छूटी।

बेंगलौर मैसूर, श्रीतिरुपतिबालाजी और कालहस्तीश्वर यात्राका वर्णन आगामी अंकमें दिया जावेगा।

पार्वण श्राद्धसे प्रेतात्माका उद्धार

एक बिल्कुल सत्य घटना

[लेखक—भक्त श्री रामशरणदासजी]

सितम्बर सन् १९७० की बात है, कि पिलखुवा हमारे स्थान पर हापुड़के सुप्रसिद्ध कर्मकाण्डी विद्वान् श्रीचण्डी-संस्कृत विद्यालयके प्रधानाचार्य पूज्य पं० श्री बालकराम शास्त्री पुराणेतिहासाचार्यजी महाराज कृपाकर पधारे थे। श्राद्ध तर्पण पिण्डदान, गया श्राद्ध आदि के द्वारा पितरोंका और भूतप्रेतादिकोंका कल्याण कैसे होता है, यह शास्त्रोंके प्रमाण देकर सिद्ध करनेके पश्चात् एक स्वयं अपनी आँखों देखी पार्वण श्राद्धके द्वारा प्रेतात्माके उद्धारकी बिल्कुल सत्य घटनाका भी आद्योपान्त वर्णन किया जिसे सुनकर सभी बड़े आश्चर्य चकित रह गये। शास्त्रीजीने घटना इस प्रकार सुनाई जो हम यहां पर दे रहे हैं।

लड़कीके शरीरमें प्रेतका आवेश

पूज्यपाद शास्त्रीजी महाराजने सुनाया—

श्राद्धतर्पण, पिण्डदान आदिकी बड़ी अद्भुत विलक्षण महिमा है और श्राद्धतर्पण पिण्ड दानादि करना प्रत्येक ग्रहस्थी मनुष्यको बहुत ही परम आवश्यक कर्त्तव्य बताया गया है। जो गृहस्थी होकर अपने पितरोंके निमित्त श्राद्ध तर्पण आदि नहीं करते उनके पितर बड़े ही दुखित होते हैं, मारे-मारे डोलते हैं और उन्हें श्राप दे देते हैं। श्राद्ध तर्पण आदि न होनेके कारण बहुतसे भूतप्रेत बन जाते हैं और वहां फिर घर वालोंको नाना प्रकारके कष्ट देने लगते हैं, तथा बड़े बड़े घोर उपद्रव खड़े कर देते हैं। इस सम्बन्धकी एक अपनी आंखों देखी बिल्कुल सत्य घटना हम तुम्हें सुनाते हैं कि जो इस प्रकार है—

हापुड़के एक अग्रवाल वैश्य हैं। जिनकी लड़कीका शुभ नाम सत्यवती है। वह सत्यवती गाज़ियाबादमें विवाही है। सत्यवतीके माता पिता, भाई बन्धु आदि तो सब सनातनधर्मी हैं और जहां पर वह लड़की विवाही है वह लोग कुछ आर्यसमाजी विचारोंके हैं। कुछ दिनों पूर्व वह लड़की बीमार हो गई और उसका बड़े बड़े डाक्टरों और वैद्योंसे खूब इलाज कराया गया पर उससे उसे लाभ कुछ नहीं हुआ। उसे कोई शारीरिक रोग नहीं था कि जो औषधियां काम देतीं, उसे था प्रेतावेश, जिसे उसके घर वाले समझ नहीं रहे थे। एक दिन सत्यवतीका भाई महेन्द्रकुमार अपनी इस बहनको देखनेके लिये गाज़ियाबाद गया और उसने जो देखा तो बहनको कोई बीमारी नहीं है, अपितु उसे तो प्रेतावेश है, उसे प्रेत सताता है। भाईके सामने ही सत्यवतीको प्रेतावेश हुआ और प्रेतने उससे अपने उद्धारकी मांग

की और अपना उद्धार होने पर सत्यवतीको छोड़ देनेका वचन दिया। भाई उस प्रेतके उद्धारका कोई उपाय करनेका वचन दे करके वहांसे चला आया।

जगद्गुरु शंकराचार्यकी शरणमें

एक दिन उस लड़की सत्यवतीका भाई महेन्द्रकुमार मेरे पास दौड़ा हुआ आया और मैं उस समय माहेश्वरियों वाले भगवान् श्री राधावल्लभजी महाराजके मन्दिरमें था। महेन्द्रकुमारने आकर मुझसे अपनी बहन सत्यवतीकी बड़ी दुःख गाथा सुनाई और उसने मुझसे कहा कि शास्त्रीजी किसी प्रकार हमारी बहन सत्यवतीको सताने माले प्रेतका उद्धार हो ऐसा कोई उपाय करो तो तब उस दुष्ट प्रेतसे मेरी बहन सत्यवतीका छुटकारा हो सकता है, अन्यथा नहीं।

मुझे महेन्द्रकुमारके मुखसे अपनी बहन सत्यवतीकी यह दुःखद गाथा सुनकर बड़ा ही घोर दुःख हुआ और मुझे उसपर बड़ी दया आई। पर उस प्रेतका उद्धार हो तो कैसे हो और लड़कीको उस प्रेतसे कैसे छुटकारा मिले अब यह समस्या मेरे सामने आई और उसका उस समय कोई तात्कालिक उपाय मुझे सूझ नहीं रहा था, अब हो तो क्या हो ?

दैवयोगसे उस दिन हापुड़में भारतके सुप्रसिद्ध महान् धर्माचार्य परम पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय श्री जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित स्वामी श्रीकृष्णवोधाश्रमजी महाराज पधारे हुए थे और आप भगवान् श्रीराधावल्लभजी महाराजके मन्दिरमें ऊपरके कमरेमें विराजमान थे। बस फिर क्या था, मेरा ध्यान वरवस आपकी ओर गया कि यदि लड़की की रक्षा हो सकती है तो बस पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्यजी महाराजके द्वारा ही हो सकती है, अन्यथा नहीं।

मैं झटसे उस लड़की के भाई महेन्द्रकुमार को अपने साथमें लेकर पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराजके श्रीचरणोंमें जा पहुंचा। पूज्य श्रीआचार्यचरण रात्रि अधिक होनेके कारण अभी-अभी तो विश्राम करनेके लिये लेटे ही थे कि हमारे आनेकी आहट सुनकर जाग गये और कृपाकर एकदमसे बैठ गये और हमसे बोले कि शास्त्रीजी कैसे आये ?

लड़कीके भाई महेन्द्रकुमारने पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्यजी महाराजको अपनी बहन सत्यवती की दुःखगाथा सुनाते हुए पूज्यश्री आचार्यचरण को बताया कि महाराज मेरी बहन सत्यवतीके शरीरमें प्रेतका आवेश होता है और डुष्ट प्रेत मेरी बहनको बहुत ही सताता है, इस कारण मेरी बहन और घरवाले हम सब लोग बड़े ही परेशान हैं। किसी प्रकार उस प्रेतसे छुटकारा मिले ऐसा कोई उपाय बतानेकी कृपा करो।

पूज्यपाद श्रीआचार्य चरणने भाईसे कहा कि तुम्हारी बहनके शरीरमें प्रेतका आवेश है यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?

भाई महेन्द्रकुमारने महाराजश्रीको सब आद्योपान्त घटना सुनाते हुए कहा कि महाराज मैं हापुड़से अपनी बहन सत्यवतीको देखनेके लिये गाजियावाद गया हुआ था तो उस समय मेरी बहन सत्यवतीके शरीरमें प्रेतका आवेश था। मैंने उस प्रेतसे इस प्रकार बातें कीं।

प्रश्न—तुम कौन हो ?

प्रेत—मैं एक प्रेत हूँ।

मैं—तुम इसे क्यों सताते हो, क्यों कष्ट देते हो ?

प्रेत—मैं बड़े कष्टमें हूँ, मेरा उद्धार करो।

मैं—तुम अपने उद्धारका कोई हमें उपाय बताओ कि जिसे हम करें और उसके करनेसे तुम्हारा उद्धार हो जाय और इधर हमारी बहनका भी कष्ट दूर हो जाय।

प्रेत—मैं स्वयं बड़े कष्टमें हूँ मेरे लिये किसीने जलदान नहीं किया।

मैं—तो हम तुम्हारे लिये क्या करें ?

प्रेत—अब आप लोग कोई मेरे निमित्त ऐसा शुभ कर्म करो कराओ कि जिससे मुझे शान्ति मिले और मेरा प्रेतयोनिसे उद्धार हो तब मैं आपकी बहनको भी छोड़ दूंगा।

मैं—हमारी इस बहनकी ससुराल वाले तो आर्यसमाजी विचार वाले हैं इसलिये वे तो इन सब बातोंको मानते नहीं है और जब उनका इन सब बातोंमें विश्वास ही नहीं है अतः वे तो कुछ करेंगे ही नहीं। अब यदि हम तुम्हारे उद्धारके लिये कुछ करा दें तो तुम यह बताओ कि क्या हमारे करनेसे भी तुम्हारा उद्धार हो जायगा या नहीं ?

प्रेत—तुम करवा दो, तुम्हारे करानेसे भी मेरा उद्धार हो जायगा।

मैं—अब यह बताओ कि तुम्हारे उद्धारके लिये हम क्या उपाय करें ?

प्रेत—यह मुझे कुछ पता नहीं है कि किस शुभ कर्म करनेसे मेरा उद्धार होगा, यह तो तुम किसी ब्राह्मणसे मालूम करो कि किस शुभ कर्म के करानेसे प्रेतका उद्धार होता है, सो वह शुभ कर्म तुम मेरे निमित्त करवादो जिससे मेरा उद्धार और मेरा कल्याण हो जाय।

मैं—अच्छा हम तुम्हारे उद्धारका कोई न कोई उपाय अवश्य ही करा देंगे।

प्रेत यदि तुमने मेरा उद्धार करा दिया तो मैं भी तुम्हारी बहनको छोड़ दूंगा।

मैं—अच्छा तो तुम अब इसे छोड़ दो।

प्रेत—तुम हमें यह वचन दो कि हमारे उद्धारका उपाय कितने दिनोंमें करा दोगे ?

मैं—आज मंगलवारका दिन है हम आने वाले रविवार तक तुम्हारे निमित्त कोई न कोई ऐसा शुभ कर्म अवश्य ही करवा देंगे कि जिससे तुम्हारा उद्धार हो जाय। इसलिये अब तुम इसे छोड़ दो।

प्रेत—बहुत अच्छा अब मैं तुम्हारी इस बहनको छोड़े देता हूँ और अब इसे मैं नहीं सताऊंगा। तुम आने वाले रविवार तक मेरे उद्धारका कोई न कोई उपाय अवश्य करा दो। यदि तुमने मेरे उद्धारका कोई उपाय न कराया तो मैं पुनः आकर इसे सताऊंगा।

मैं—नहीं हम अवश्य उपाय करायेंगे।

प्रेतने स्वीकार कर लिया और वह तुरन्त उसी समय हमारी बहनको छोड़करके उसके शरीरसे चला गया। उस प्रेतके जाते ही अब क्या था, एकदमसे बेहोश बहन सत्यवती बिल्कुल होशमें आ गयी और वह बिल्कुल ठीकठाक हो गई। ऐसी दिखलाई पड़ने लगी कि मानों इसे कुछ हुआ ही न हो !

शंकराचार्यजीने उद्धारका उपाय बताया

परमपूज्यपाद जगदगुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी श्री कृष्णबोधाश्रम

जी महाराजने सत्यवतीके भाई महेन्द्रकुमारके मुखसे प्रेतकी यह बात सुनकर उससे पूछा—क्या तुमने उस प्रेतके उद्धारका कोई उपाय कराया है।

महेन्द्रकुमार—महाराजजी हम उस प्रेतके उद्धारका उपायका साधन पूछनेके लिये उसी दिनसे बराबर लगे हुए हैं और भागदौड़ कर रहे हैं कि हमें कोई ठीकसे उपाय बता दे, पर अभी हमें इसमें सफलता नहीं मिली है। कारण कि हम उस प्रेतके उद्धारकी दृष्टिसे प्रेतको अपने दिये वचनके अनुसार मेरठके तथा देहली के बड़ेबड़े पंडितोंसे जाकर मिले हैं और उनके सामने सब बातें रखी हैं। हमें उन पंडितोंने प्रेतके उद्धारके उपाय तो अवश्य बताये हैं पर वह उनके बताये उद्धारके उपाय या तो अधिक द्रव्य साध्य थे जिसमें हमारी सामार्थ्य से ज्यादा पैसा लगने खर्च होनेकी बात थी, जो हमारी शक्तिके बाहरकी बात थी और फिर अधिक कालमें होने वाले उपाय बताये गये थे सो हमारे पास अधिक समय भी नहीं था। इसीसे हम आज तक कुछ भी नहीं कर पाये हैं। आज शनिवारका दिन ही शेष है और कल प्रेतको दिये वचनके अनुसार अन्तिम दिन रविवारका दिन है। हमारी बहन सत्यवती अभी तक तो वह बिल्कुल स्वस्थ है। पर हमें सन्देह यह है कि यदि हमने अपने दिये वचन के अनुसार उस प्रेतके निमित्त कोई शुभ कार्य करके उसके उद्धारके लिये कल रविवार तक भी कुछ नहीं किया तो हमारी बहन पर वह प्रेत फिर आ जायगा और पुन: आक्रमण कर देगा, उसे सतायेगा और हमारी बहन फिरसे पहले जैसी अस्वस्थ हो जायगी। इस लिए बस अब एक ही कल रविवारका दिन हमारे पास अन्तिम दिन शेष बचा है सो आप कृपा कर कोई हमें ऐसा सरल उपाय बतायें कि जो कल ही हो जाय और जिसके करनेसे उस प्रेत की भी सद्गति हो जाय और इधर मेरी बहन सत्यवतीका कष्ट भी दूर हो जाय ?

पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्यजी महाराज ने यह सब बातें सुन कृपाकर यह सत्परामर्श दिया कि तुम लोग सुप्रसिद्ध तीर्थ श्रीगढ़-मुक्तेश्वरमें जाओ और वहां पर जाकरके पतित पावनी कलिमलहारिणी भगवती भागीरथी श्री श्री गंगाजीके परमपवित्र तट पर बैठकर पार्वण श्राद्ध और तीर्थ श्राद्ध करो और दो पंडितोंको गायत्रीका जप करने बैठा दो। पंडित ऐसे होने चाहिये कि जो सदाचारी हों, और जो बीड़ी सिगरेट, तम्बाकू चाय आदि न पीते हों और प्याज सलजम, लहसुन आदि न खाते हों, सात्विक विचारोंके हों।

पार्वण श्राद्ध कौन करायें ? अब यह समस्या सामने आई। पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्यजी महाराजने कहा कि शास्त्रीजी तुम्हीं श्रीगढ़ मुक्तेश्वर जाकर इसका विधिविधानसे सब कार्य सम्पन्न कराओ।

मैं उन दिनों हापुड़में ही एक सज्जनका नित्यप्रति पार्वण श्राद्ध करा रहा था तो इस लिये मैंने अपनी असमर्थता प्रकट की। इसपर पूज्यपाद श्रीआचार्य चरणने कहा कि तुम दोपहर तक हापुड़का अपना यह कार्य करो और फिर उससे निवृत्त होते ही श्रीगढ़ मुक्तेश्वर पहुँचकर इनका यह कार्य भी सम्पन्न करा दो।

हमने पूज्य महाराजश्रीकी यह आज्ञा शिरोधार्य की और फिर यह निश्चय किया गया कि इधर हापुड़से तो हम श्रीगढ़मुक्तेश्वर ब्रजघाट पर पहुँच जायेंगे और उधर लड़कीका

भाई महेन्द्रकुमार गाज़ियाबाद जाकर अपने साथ अपनी उस बहन सत्यवतीको और उसके पतिको और उसकी सास आदिको लेकर श्रीगढ़-मुक्तेश्वर व्रजघाट पर पहुँच जायगा और कार्य प्रारम्भ करा दिया जायगा। इस निश्चयके अनुसार मैं श्रीगढ़मुक्तेश्वर व्रजघाट पर पहुंच गया और उधर गाज़ियाबादसे वह लड़की और सास आदि सब लोग भी आ गये।

पार्वण श्राद्धका अद्भुत चमत्कार

श्रीगढ़मुक्तेश्वरमें पहुंचने पर हम लोगों को देखते ही लड़कीकी माँने कहा कि शास्त्रीजी महाराज लड़की सत्यवती पर प्रेतका आवेश हो गया है और वह लड़की बेहोशीकी अवस्था में एक झोंपड़ीमें लेटी हुई है, तुम लोग बड़ी देरसे आये। भाईने लड़कीके शरीरमें आये उस प्रेतसे कहा कि पंडितजीके आनेमें कुछ देर हुई है और अब पंडितजी आ गये हैं अब तुम्हारे उद्धारका सब कार्य करेंगे तुम जरा धैर्य रखो।

सबने सबसे पहले पतित पावनी भगवती भागीरथी श्रीगंगाजी महारानीका स्नान, दर्शन पूजन आदि किया और फिर पार्वण श्राद्ध करानेका सब कार्य प्रारम्भ हो गया। दो पंडित गायत्री जप करनेके लिये बैठा दिये गये। लड़कीके पतिने अपने समाजी विचारोंको छोड़ कर सब कार्य बड़ी श्रद्धाभक्तिके साथ सनातन धर्मानुकूल जो हमने बताये थे सब कार्य किये। कर्म करते समय आधा कर्म हो जाने पर पार्वण श्राद्धने और गायत्री मंत्र जपने और माता श्रीभगवती गंगाजीने अपना क्या अद्भुत चमत्कार दिखाना प्रारम्भ किया कि लड़कीके भाईने हमसे आकरके कहा कि शास्त्रीजी महाराज हमारी बहन झोंपड़ीमें बैठी हुई है और वह यह कहती है कि लाओ हमारा भाग। हमने उससे कहा कि पंडितजी करा रहे हैं।

उसके पश्चात् पार्वण श्राद्धके समाप्त होते समय अकस्मात् क्या हुआ कि जो लड़की अब तक झोंपड़ीमें बेहोश पड़ी हुई थी वही लड़की सहसा एकदमसे सबके देखते-देखते उठी और अपनी उस झोंपड़ीमेंसे निकलकर सबके सामने श्री गंगाजीकी ओर चल दी और वह लड़की अपने मुखसे बार-बार यह कहती जाती थी लो अब मेरा उद्धार हो गया और अब मैं यहांसे जा रहा हूँ। ऐसा नहते कहते वह लड़की एक दमसे श्री गंगाजीमें जाकरके घुस गई और आगे बढ़ती चली गई जिससे सबको बड़ा भय प्रतीत हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि यह लड़की गहरे जलमें जाकर डूब न जाय ? मैंने उसके घर वालोंसे कहा कि तुम घबड़ाओ नहीं इसे अन्दर जाने दो चिन्ता न करो।

उसने अन्दर जाकर कंठ तक जलमें खड़ी होकर श्री गंगाजीमें ज्यों ही गोता लगाया तो एकदमसे उसके शरीरमें व्याप्त उस प्रेतका तत्काल उद्धार हो गया और वह लड़की उस प्रेतसे छुटकारा पाकर एकदमसे बिल्कुल स्वस्थ और प्रसन्न होकर जलसे बाहर आगई और सदा सर्वदाके लिये उसे उस प्रेतसे छुटकारा मिल गया। अब तो सबमें एकदमसे बड़ी प्रसन्नताकी लहर दौड़ गई, सभी गद्गद् हो गये।

यद्यपि पार्वण श्राद्ध द्वारा प्रेतका उद्धार और इस लड़कीका संकट दूर हो चुका था, लेकिन फिर भी हमने बादमें पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्यजी महाराजके बताये अनुसार तीर्थ श्राद्ध भी कराया। ब्राह्मणोंने शुभाशीर्वाद दिया। सब कार्य करते कराते सायंकालका

समय हो गया था और सब लोग बड़े ही प्रसन्न थे और इधर वह लड़की भी प्रेतसे सदा सर्वदा के लिये छुटकारा पाकर बड़ी प्रसन्न हो रही थी और घर वाले भी खूब प्रसन्न थे। इसी प्रसन्नतामें फिर सब लोग मिलकर पतितपावनी भगवती भागीरथी श्री गंगाजी महारानीके परम पवित्र तट पर गये और श्रीगंगाजी महारानीकी पूजा प्रार्थना की और लौट आये।

उसके पश्चात् फिर कभी आजतक उस लड़कीको कोई कष्ट नहीं हुआ और अब वह लड़की बड़ी प्रसन्न और पूर्ण स्वस्थ है।

देखा पाठकों यह है मेरे सत्यसनातनधर्म और हमारे शास्त्र पुराणोंका और श्राद्ध तर्पण, गायत्रीमंत्र और भगवती श्रीगंगाजीकी कृपाका और पूज्य भूदेव ब्राह्मणोंके शुभाशीर्वादका एक अद्‌भुत विलक्षण चमत्कार जो हमने आपके सामने रखा है। जिस लड़कीको बड़े बड़े डाक्टर भी अच्छा न कर सके उसे शास्त्रीय कर्मके द्वारा पूज्य भूदेव ब्राह्मणोंने एक दिनमें ही करके उस लड़कीको तो प्रेतसे छुटकारा दिला दिया और इधर उस प्रेतात्माकी भी सद्‌गति करा दी। इससे बढ़कर सनातनधर्मका और शास्त्रपुराणोंकी सत्यताका प्रत्यक्ष प्रमाण और क्या चाहिये। क्या अब भी अपने सत्य सनातनधर्मकी शरणमें जाकर अपने स्वर्गीय पूज्य दादा दादी, माता पिता, नाना नानी आदि पितरोंके निमित्त श्राद्ध तर्पण जलदान, पिण्डदान आदि शुभ कर्म कर उन्हें सुख शान्ति पहुंचाने और उनकी सद्‌गति करानेका प्रयत्न नहीं करोगे ? और इस प्रकार शास्त्रानुसार कर्म कर अपना और अपने कुलका उद्धार नहीं करोगे ? पत्ता—पिलखुवा जिला मेरठ

ज्योतिषका प्रारम्भिक शिक्षण—(१)

[ले०—श्री राधाकृष्ण शर्मा]

[इस लेखमें विद्वान् लेखकने तारीखोंसे राशि निश्चित की है। यह पाश्चात्यपद्धति है। भारतीय पद्धतिके अनुसार जन्मनक्षत्रानुसार राशि मानी जाति है। एक महीने तक एक राशि नहीं रहती। २$\frac{1}{4}$ दिनमें बदल जाती है। २१ मार्चसे २० अप्रैल तक सूर्य सायनगणनासे मेषमें रहता है अतः इस अवधिमें जन्में प्राणियोंकी पाश्चात्यपद्धति वाले मेष राशि मानते हैं। पाठक भ्रममें न पड़ें इसलिए हमें स्पष्टीकरण करना पड़ा।
—सम्पादक]

गत श्रावणके अंकमें मेरे ही द्वारा लिखित लेख 'ज्योतिष कैसे सीखें ?" के संदर्भमें यत्र-तत्रसे अनेक प्रशंसापत्र प्राप्त हुए, जिनमें और आगे सीखनेकी जिज्ञासा प्रकट की गई, तथा माननीय श्री त्रिवेदीजीकी आज्ञा शिरोधार्य कर मैं इस लेखमें बारहों राशियोंका सूक्ष्ममें परिचय दे रहा हूँ, निःसन्देह पाठक पसन्द करेंगे।

राशि परिचय

मेष :—अर्थात् मेढ़ा स्वयं बलिदानका प्रतीक है। यह रशि नववर्षके प्रारम्भिक मास का प्रतिनिधित्व करती है। यह राशि नेतृत्वकी भी प्रतीक है। इसे अज, विश्व, प्रथम, क्रिय, तुवर, आद्य, छाग, एरिस, एडक बरे, हमल व वस्त आदि भी कहते हैं। यह अंग्रेजी पद्धति द्वारा १ से ३० डिग्री तक होती है। स्वयं इस

राशिमें ४ घड़ी १५ पल होते हैं तथा सूर्य इस राशि पर ३० दिन ५५ घटी ३० पल रहता है।

यह लघुकाय एवं प्रवासी पुरुष राशि है। धातु संज्ञक व पूर्व दिशाकी स्वामिनी है। अग्नितत्व, क्षत्रियवर्ण तथा रक्त-पीत वर्ण (रंग) युक्त है। स्वभावसे क्रूर व चञ्चल, चर लक्ष्य वाली, युवावस्था, रात्रि बली, लम्बा कद, क्षत्रिय जाति, पृष्ठोदयी, चतुष्पदी, पर्वताचारी, रजोगुणी, पित्त प्रकृति प्रधान, राशिका वास पाटल देश है। इसका स्वामी मंगल, वार मंगल व अंक एक है। अल्प संतति तथा साहस अभिमान व मित्र प्रेम युक्त राशि है। इसका संबन्ध शिरसे होनेके कारण मुख, मस्तिष्क व स्नायुजालसे इसका संबंध है। इसमें द्रव्य ऊनी वस्त्र, लाल रंगके धान्य, सरसों, दाल, मसूर, रक्त चंदन, स्वर्ण, लाल गेहूँ, तांबा लोह आदि है। यह राशि लौकिक ज्योतिष जगत्में इंग्लैण्ड, डेनमार्क, जर्मनी, स्विटजरलैण्ड, सीरिया, फ्रांस आदि देशोंका प्रतिनिधित्व करती है।

परिचयात्मक अक्षर चू चे चो ला ली लू ले लो अ है तथा इसकी शान्ति हितार्थ १०००० जप "ॐ क्रां क्रीं क्रौं स: भौमाय नम:" मन्त्रसे जब दो घटी दिन शेष रहे निम्न यंत्र सहित करना उत्तम फलदायी रहता है।

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

मेष राशि हेतु कार्तिक मास, १,६,११ तिथि, सूर्य वार, मघा नक्षत्र, विष्कंभ योग, बव करण, पहला प्रहर तथा प्रथम चन्द्रमा घातक रहता है।

वृष :—२१ अप्रेलसे २० मईके मध्य जन्म लेने वाले जातककी राशि वृष होती है। इसे टरनेस, वृषभ, तावुरी, भद्र, ताखुरु, गोकुल, द्वितीयगत्व, सोर, बली आदि कहते हैं। ई. उ. ए. वो. वा. वी. वू. वे. वो नामाक्षरसे इसे पहचान सकते हैं। मेष राशिके पूर्वमें यह राशि नभ मण्डलमें स्थित है तथा पृथ्वी पर विषुवत् रेखासे २०° तक। प्रभाव क्षेत्र ३०° से ६०° तक है एवं चेहरे, कपोल परका इससे विचार किया जाता है। इसका परिचायक चिह्न बैल उपजाऊपनका प्रतीक है। यह आज्ञाकारिता व सेवाका परिचायक है। शुभ कार्य प्रारंभ करने हेतु वृष राशिका मास अत्युत्तम होता है।

यह लघु काय युक्त, स्त्री राशि, जड़ संज्ञक है। यह दक्षिण दिशामें पर्वतकी चोटी पर वास करती है। साथ ही साथ कृषि भूमि, गोशाला या वनमें वास करती है। यह राशि ४ घटी ४५ पलकी होती है। सूर्य इस राशि पर ३१ दिन २४ घटी ५६ पल रहता है। यह कोमल-स्थिर व शान्त स्वभावकी, युवावस्था युक्त गौर वर्ण, पृथ्वी तत्वसे युक्त, रात्रि बली कान्ति रहित, वात-प्रकृति, चार चरण धारी, महा शब्दकारी, विषमोदयी, मध्यम संतति, शुभकारक, वैश्य वर्ण व शिथिल शरीर है। यह अर्द्ध जल राशि, स्वार्थी, समझ-बूझसे कार्य करनेवाली सांसारिककार्योंमें दक्ष, आयरलैण्ड, परशिया, हालेण्ड, जिओर्जिया आदिका प्रतिनिधत्व करती है। ब्राह्मण जातिकी सम राशि वृषके शान्ति हेतु—"ॐ द्रां द्रीं द्रौं, स: शुक्राय नम:" मन्त्रसे सूर्योदयके समय ६००० जप निम्न यंत्रसे युक्त करना चाहिये।

वृश राशिको मार्गशीर्ष मास ५, १०, १५

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	६

तिथि, शनिचर वार, हस्त नक्षत्र, शुक्लयोग, शकुनि करण ४ था प्रहर व ५वां चन्द्रमा शुभ नहीं होता।

मिथुन :—इसे जेमिनी, जितुम, नृयुक् यम, दोपेकर, जौजा, द्वन्द्व, युग एवं तृतीय भी कहा जाता है। २१ मई से २० जून तक जन्म लेने वाले व्यक्तिकी राशि मिथुन होती है। यह राशि ६० से ९० डिग्री तक दोनों कंधों पर रहती है। यह राशिमण्डलमें स्थित दो प्रकाशमान् ताराओं जिनमें एक कम व दूसरा अधिक प्रकाश देता है, के संयोगसे निर्मित है। पाश्चात्य ज्योतिषवेत्ता इसका चित्र जुड़वाँ बच्चे मानते हैं। यह एकता, अनुरूपता, बुद्धि-मत्ता, साहस, शौर्य व उत्साहकी प्रतीक मानी जाती है। पृथ्वी पर विषुवत् रेखासे २४° तक इसकी स्थिति मानी जाती है।

यह राशि ५ घटी १५ पलकी होती है। विषम राशि एवं स्वामी बुध, द्विस्वभाव, पुल्लिग संज्ञक राशि है। सूर्य इस राशि पर ३१ दिन ३७ घटी ३२ पल रहता है। यह पश्चिम दिशाकी स्वामिनी, वायु तत्वसे युक्त, हरित वर्ण, पुरुष राशि, द्विस्वभाव, विषमोदयी, उष्ण, शूद्र वर्ण महाशब्द कारी, चिकनी, दिन बली, मध्यम सन्तवि व शिथिल शरीर राशि है।

इस विषम राशिका आकार एक स्त्री-पुरुषके भोगी जोड़े जैसा है। स्त्रीके करमें वीणा तथा पुरुषके हाथमें गदा तथा दोनों गायन-वादन क्रीड़ा करते हुए दिखायी देते हैं। निवास-स्थान पश्चिम दिशामें, द्यूतःक्रीड़ा स्थानों, रति एवं विहार पृथ्वी पर है।

प्राकृतिक स्वभाव विद्याव्यसनी एवं शिल्प दक्षता है। इससे कन्धों, भुजाओं, हाथ, फेफड़ों स्तन, श्वाससे सम्बन्ध है। पहिचान अक्षर का की कू घ ङ छ के को ह है। इमका वास चर देश, वार बुध व अंक ५ है।

इस राशिको हास्य, नृत्य, गायन, वाद्य, शिल्प, वैज्ञानिक अनुसंधान, वायुयान यात्रा, नपुंसक व्यक्तिका स्वामित्व प्राप्त है।

मिथुन राशिके द्रव्य ज्वार, बाजरा मूंग, मोठ, मूंगफली, कपास, जूट, केशर, कस्तूरी कागज, हल्दी, सम्पादन, प्रकाशन. रेल्वे व कला आदि है। इसे बेल्जियम, U.S.A. उत्तरी अफ्रीका व वेल्सका प्रतिनिधित्व प्राप्त है।

इसे आषाढ़ मास २.७.१२ तिथि, चन्द्र-वार, स्वाति नक्षत्र परिध योग, चतुष्पद करण, तीसरा प्रहर व ६वां चंद्रमा घातक है। इसका यन्त्र एवं मन्त्र ॐ ब्रां, ब्रीं, ब्रौं सः बुधाय नमः।

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

इसके १९००० मंत्रोंका जाप ५ घटी शेष दिन रहे तब करना चाहिए।

कर्क:—कर्क राशिका कर्कट (केंकड़ा) एक जलचर है। इसका संबंध समुद्र एवं समुद्र तटके निकट माना गया है। यह ९० से १२० डिग्री तक सीने पर रहती है। यह वर्षाकारक वायु मण्डलका निर्माण करनेमें सहायक होती है। यह सहानुभूति एवं सुकुमारताके साथ ही

साथ प्रजासत्ता एवं मिलनसारिताकी प्रतीक मानी जाती है। पृथ्वी पर इसका स्थान उत्तरसे विषुवत् रेखाकी ओर २४° से २०° तक माना गया है।

पर्यायवाचीके रूपमें इसे कसर, कुलीर, कर्कटक, कर्कट, आटक, खरमंग एवं फारसीमें सरतान कहते हैं। २१ जूनसे २० जुलायी तक जन्म लेने वाले जातककी राशि कर्क होती है। यह चर, स्त्री जाति, सौम्य एवं कफ प्रकृतिसे युक्त जलचारी, समोदयी रात्रि बली, उत्तर-दिशाकी स्वामिनी, रक्त-धवल मिश्रित रंग, बहु चरण एवं बहु सन्तान वाली है। यह केंकड़ेके सदृश आकार वाली धातु संज्ञक राशि है। उत्तर दिशामें उपवन, वापी, तड़ाग जलाशय आदिके तट पर निवास होता है।

इसका प्राकृतिक स्वभाव सांसारिक, उन्नतिमें प्रयत्न शीलता, लज्जा, समय पालनका सूचक है। जाति शूद्र तथा इसका निवास चोल देश, स्वामी चन्द्रमा, वार सोम, एवं अंक दो है। यह राशि ५ घटी व ३ पलकी होती है। इसपर सूर्य ३१ दिन २२ घटी व ३५ पल रहता है। रात्रि बली, उत्तरदिशाकी स्वामिनी है। इसका मुख्य अंग स्थान हृदय है, किन्तु यह पेट व गुर्दैसे भी सम्बन्धित है।

मुख्य द्रव्य उत्तम प्रकारके अन्न, फल, किरानेका सामान, चाय, चांदी और पारा आदि है। राष्ट्रीय ज्योतिषमें चीन, स्काटलैंड, न्यूजीलैण्ड, कनाडा, रूस, अल्जीरिया न्यूयार्क, सिंध, काठियावाड़, कच्छ, गुजरात आदिका इसी राशिसे विचार किया जाता है।

पौष मास २-७-१२ तिथियाँ, बुधवार, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, १ला प्रहर २रा चंद्र व ७वां लग्न घातक है।

७	२	६
८	६	४
३	१०	५

इसका यंत्र यह है। तथा "ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।" मंत्रका जाप सन्ध्या समय ११००० मंत्रोंसे करना चाहिये।

सिंह—सिंह राशि सूर्य समान प्रचंड, सिंह के समान भयानक है। यह खेत-खलीहानोंको जीवन प्रदान कर, चारेकी व्यवस्थामें सहायक है। इसका चिह्न भी सिंह है। स्वातन्त्र्य प्रेम, शौर्य, प्रताप, उदारता व आत्मविश्वासकी प्रतीक है।

विषवत् रेखाकी ओर २० से १२° तक है। १२०° से १५०° तक हृदय पर यह राशि रहती है। यह राशि ५ घटी व १५ पलकी होती है। सूर्य इस राशिपर ३१ दिन २ घटी ५२ पल रहता है। २१ जुलाईसे २१ अगस्तके मध्य जन्मे जातककी राशि सिंह होती है। इसे लीयो (Leo) लेय, कंठीरव, मृगेन्द्र, हरि, शीर, असद् भी कहते हैं।

यह पुरुष जाति, स्थिर संज्ञक, अग्नि तत्व, दिनबली, पित्त प्रकृति, पीत वर्ण, उष्ण स्वभाव पूर्व दिशाकी स्वामिनी है। सूर्य इसका स्वामी है। इससे हृदयका विचार किया जाता है। इस चतुष्पद राशिका निवास पांडुदेश, रविवार व अंक १ व ४ है। अंग स्थान उदर, पीठ, रक्त, जिगर व दिल है। इसका सम्बन्ध मनोरंजनके कार्योंसे है।

देय द्रव्य पुष्ट अन्न, रस, पुष्ट त्वचा, बाघम्बर, मृगचर्म, गुड़, खांड, चना, पीतल व सोना है। इसकी शान्ति हेतु "ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः" मन्त्रका सूर्योदयके समय ७००० जप निम्न यंत्र सहित करना चाहिये।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

इटली, बोहेमिया, रूमानिया, फ्रांस, शिकागो, अफगानिस्तान, हिमाचल, बम्बई प्रदेशका प्रतिनिधित्व यह राशि करती है।

कन्या :—कन्या राशि अन्न या फलोंमें परिपक्वता लानेमें सहयोग देनेसे सम्बन्धित है। चिह्न इसका कुमारी कन्या है, यह चिरस्थायी स्नेह एवं विवेककी प्रतीक है। २२ अगस्तसे २२ सितम्बरके मध्य जन्म लेने वाले प्राणीकी राशि कन्या होती है। वीर्गो Virgo पाथोन, तन्वी, वरुणी, कुमारी, खुशे, सम्बला, रमणी, तरुणी, आदि भी कहते हैं। यह डिग्री १५० से १८० तक आमाशय पर रहते हुए उतनी ही डिग्री तक प्रभाव भी डालती है। यह राशि ५ घटी व ४ पलकी होती है। एवं सूर्य इस राशि पर ३० दिन २९ घटी ४ पल रहता है। पृथ्वी पर यह राशि उत्तरसे विषुवत् रेखाकी ओर १२° से ०° तक या विषुवत् रेखा तक स्थिर की गई है।

पिंगल वर्ण, स्त्री जाति, द्विस्वभाव, दक्षिण दिशाकी स्वामिनी, रात्रिबली राशि है। दीर्घ तनु, नौकामें धैर्य पूर्वक बैठ कर, धान व दीपक हाथमें लिये हुए, समस्त कलाओंसे पूर्ण एवं चतुर कुमारी कन्याके स्वरूप वाली राशि है। बुध इसका स्वामी है। विद्या व्यसनी एवं शिल्प दक्षता इसका प्राकृतिक गुण है। अपनी उन्नति की ओर यह विशेष ध्यान रखती है।

वायु एवं शीत प्रकृति, पृथ्वी तत्व और अल्प सन्तान वाली है, यह जीव संज्ञक, दक्षिण दिग्वासी, शस्य श्यामला भूमि, खेती-बाग बगीचा, स्त्री-पुरुषोंकी क्रीड़ास्थली तथा शिल्प-रचनाके स्थानोंपर यह राशि विचरती है। जातिसे शूद्र, वात प्रकृति, शीर्षोदय समराशि है।

इस द्विपद मानवीय राशिका वास केरल देश, वार बुध, स्वामी बुध व अंक पांच है। अंग स्थान कमर है और पेट तथा आंतोंसे सम्बन्ध है। इसे मातुल राशि भी कहते हैं। तथा पितामह कारक भी। घातरूपमें भाद्रपदकी ५,१०, १५ तिथि. शनिवार, श्रवण नक्षत्र शूल योग, कौलव करण प्रहर १ला, १०वां चन्द्र।

इस राशिके द्रव्य मूंग-मोठ-अलसी, सरसों, मटर, ज्वार, जौ, रुई, वस्त्रादि है। यह टर्की यूनान, ब्राजील, भारत, पेरिस आदिका प्रतिनिधित्व करती है। जप-मंत्र-यन्त्र आदि वही है जो मिथुन राशिके हैं। [क्रमशः]

फलित पर विचार

[ले०—श्री रघुवीरशरण शर्मा वैद्य आयुर्वेद बृहस्पति]

जन्मपत्र देखनेसे पहले नीचे लिखी बातों पर विचार कर लेना आवश्यक है।

लग्नेश उच्च राशिका हो, अपनी राशिका हो, मित्रराशिका हो, शुभ ग्रहोंके साथ हो, शुभ ग्रहोंकी पूर्ण दृष्टि हो, मूल त्रिकोणका हो, शुभ ग्रहोंके साथ हो, छठे आठवें बारहवें भावोंके स्वामियोंके साथ न बैठा हो और न इनका दृष्टि संबंध हो। लग्नेश स्वयं भी छठे, आठवें, बारहवें भावोंमें न बैठा हो। लग्नेश पापग्रहोंके बीचमें न हो, लग्नेशके २७ अंशसे अधिक न हों क्योंकि इतने अंशोंमें ग्रह अगले भावका भी फल करता है।

इसी प्रकार लग्न केन्द्रका हो (लग्न पर लग्नेश स्वयं बैठा हो) लग्न पर शुभ ग्रहोंकी पूर्ण दृष्टि हो, लग्न सन्धिका न हो, उक्त दोनों बातें लग्न और लग्नेश ठीक हों तो व्यक्तिका जन्म बहुत कुछ सफल रहता है।

जन्मपत्रमें लग्न ही मुख्य है, लग्न शरीर है, लग्न ही व्यक्ति है और जो ११ भाव हैं वे सब लग्नके सहायक हैं। या सम्बन्धित हैं अतः अन्य भावों पर भी बिचार कर लेना चाहिए। अन्य भावोंमें भी खास तौरसे केन्द्र और त्रिकोण। इनके अतिरिक्त ग्रह स्पष्ट भाव स्पष्ट, ग्रहोंकी दीप्तादि अवस्था, नवांश और द्रेष्काण पर भी विचार कर लेना चाहिए।

पूर्ण दृष्टि

सूर्य चन्द्र बुध और शुक्रकी सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि होती है। मंगलकी सप्तम चतुर्थ और अष्टम भाव पर। बृहस्पतिकी सप्तम पञ्चम और नवम भाव पर। शनिकी सप्तम तृतीय और दशम भाव पर। राहूकी सप्तम पञ्चम नवम और बारहवें भाव पर पूर्ण दृष्टि होती है।

"सुतमदन नवान्त्ये पूर्णदृष्टिश्च राहुः।"

उच्च और नीच

सूर्य मेष राशिके १० अंश तक। चन्द्रमा वृष राषिके ३ अंश तक। मंगल मकरके २८ अंश तक। बुध कन्याके १५ अंश तक। गुरु कर्कके ५ अंश तक। शुक्र मीनके २७ अंश तक और शनि तुलाके २० अंश तक उच्चका होता है। यदि ग्रह उक्त अंशोंसे अधिक अंश वाला हो तो उच्चका नहीं रहता। यह भी स्मरण रहे हर्षल वृश्चिकका उच्चका होता है। हरेक ग्रह अपनी उच्च राशिसे स्प्तम राशि पर उतने ही अंशों तक नीचका रहता है। जैसे सूर्य मेष का १० अंश तक उच्चका है, मेषसे सप्तम तुलाका १० अंश तक नीचका रहेगा।

ग्रहोंके मित्र सम और शत्रु

सूर्यके चन्द्र मंगल और बृहस्पति मित्र हैं। चन्द्रके सूर्य बुध मित्र हैं। मंगलके सूर्य चन्द्र और गुरु मित्र हैं। बुधके सूर्य और शुक्र मित्र हैं। बृहस्पतिके सूर्य चन्द्र और मंगल मित्र हैं। शुक्रके बुध और शनि मित्र हैं। शनिके बुध और शुक्र मित्र हैं। केतु तथा राहुके शुक्र शनि और बृहस्पति मित्र हैं।

सम—सूर्यके बुध, चन्द्रके मंगल गुरु शुक्र और शनि, मंगलके शुक्र और शनि, बुधके शनि

और गुरु, वृहस्पतिके शनि, शुक्रके मंगल और गुरु, शनिके बृहस्पति सम हैं अर्थात् न मित्र और **न शत्रु**।

शत्रु—सूर्यके शुक्र शनि राहु। चन्द्रमाके राहु। मंगलके बुध और राहु। बुधका चन्द्रमा। गुरुका शुक्र और बुध। शुक्रका सूर्य चन्द्रमा। शनिका सूर्य चन्द्र और मंगल शत्रु हैं।

"राहोस्तु मित्राणि कवीज्यमन्दाः।
केतोस्तथैवात्र वदन्ति तज्ज्ञाः॥"

आचार्य वराह मिहिरने लिखा है—

नीचेरिभेऽस्ते चारिदृष्टस्य
सर्वं वृथा यत्परिकीर्तितम्।
पुरतोऽन्धस्य भामिन्याः सविलास
कटाक्ष निरीक्षणम्॥
('वाराही संहिता' १०।५३।)

अर्थात् यदि ग्रह नीचका हो, या शत्रु राशिका हो, शत्रु ग्रहकी दृष्टि हो, या अस्त हो तो इनका बुरा भला कुछ भी फल नहीं होता। जैसे कि अन्धे पुरुष पर स्त्रीके विलास युक्त कटाक्षका कुछ भी असर नहीं होता।

मैं इस मतको स्वीकार नहीं करता, क्योंकि प्रत्यक्ष देखनेमें आता है कि इन सबका पूर्ण प्रभाव होता है। चाहे बुरा भले ही हो। हाँ, केवल अस्त ग्रहका प्रभाव अल्प होता है।

ग्रहोंकी अवस्था—दीप्त स्वस्थ प्रमुदित शान्त दीन अतिदुःखी विकल खल और कुपित ये ग्रहोंकी नौ अवस्था हैं। जिनका वर्णन इस प्रकार है—उच्च राशिका ग्रह दीप्त है, अपनी राशिका स्वस्थ है, अधिमित्र राशिका ग्रह मुदित है, मित्र राशिका शान्त है, सम राशिका दीन है, शत्रु राशिका दुःखी, पापी ग्रहके साथ विकल, पापी ग्रहोंकी राशिका खल, और सूर्यके साथ कुपित होता है।

प्रश्न—पापी ग्रहोंके साथ रहने वाले ग्रह की संज्ञा बिकल है, इसीमें सूर्यका भी समावेश हो जाता है। फिर सूर्यके साथ ग्रहकी संज्ञा कुपित क्यों? इसका समाधान होना चाहिए। इस सम्बन्धमें मुझे संकेत-कौमुदी-का लेख पसन्द है। वह इस प्रकार है 'संकेत कौमुदी'में लज्जित, गर्वित, क्षुधित, तृषित, मुदित, और क्षुब्ध नामसे ग्रहोंकी छः अवस्था लिखी हैं।

परगेहगतः खेटो राहुयुक्तो तथैव च।
रविमन्द कुजैर्युक्तो लज्जितो ग्रह एव सः॥
तुङ्गस्थानगतो वापि त्रिकोणेपि भवेच्च यः।
गर्वितोस्यै निगदितो मुनिभिः कृतनिश्चयैः॥
शत्रुगेहे शत्रुदृष्टो शत्रुयुक्तो भवेद्यदि।
क्षुधितः स च विज्ञेयः शनियुक्तो तथैव च॥
जन्मराशौ स्थितः खेटः शत्रुणा चावलोकितः।
शुभग्रहाः न पश्यन्ति तृषितः स उदाहृतः॥
मित्रगेहे मित्रयुक्तो मित्रेण चावलोकितः।
गुरुणा सहितो यश्च मुदितः स प्रकीर्तितः॥
रविणा सहितो यश्च पापाः पश्यन्ति सर्वथा।
क्षुभितं तं विजानीयात् शत्रुणा यदि वीक्षितः॥

जो ग्रह दूसरेकी राशिमें बैठा हो उसके साथ सूर्य मंगल शनि राहु और केतु बैठे हों वह लज्जित है।

जो ग्रह उच्च राशिका हो, अथवा त्रिकोण (५-९) भावमें बैठा हो वह गर्वित हैं।

जो ग्रह शत्रुकी राशिमें हो शत्रु ग्रहकी उसपर दृष्टि हो या शत्रु ग्रह उसके साथ बैठा हो वह क्षुधित है।

जो ग्रह जन्मकी राशि पर हो, शत्रु ग्रह की दृष्टि न हो वह तृषित है।

मित्रकी राशिपर हो मित्र ग्रहकी दृष्टि हो या मित्र ग्रहके साथ बैठा हो या उसके साथ वृहस्पति बैठा हो वह मुदित है। जो ग्रह सूर्यके साथ हो, पाप ग्रहोंकी दृष्टि हो अथवा शत्रु ग्रहकी दृष्टि हो वह क्षुभित या कुपित है।

वक्तव्य—'संकेत-कौमुदी' मेरे पास संवत् १९३४ की हस्तलिखित है। ऋषि पाराशरने उच्च ग्रहोंको पूर्ण बली और स्वगृहीको आधा बली माना है।

स्वोच्चे शुभं बलं पूर्णं त्रिकोणे पाद वर्जितम्।
स्वर्क्षे चार्धं मित्रगेहे पादमात्रं प्रकीर्तितम्॥

परन्तु अंग्रेज ज्योतिषी रफलने लिखा है कि यदि ग्रह स्वगृही हो तो बहुत बलवान् और शुभ होता है। उच्चस्थ ग्रह भी शुभ और बलवान् होता है, किन्तु स्वगृहीसे कम होता है। मित्र राशिमें ग्रह सामान्य बलवान् होता है और शुभ भी होता है।

हर्ष स्थान सूर्यका नवम, चन्द्रमाका तीसरा, मंगलका छठा, बुधका पहला, बृहस्पति का ग्यारहवां, शुक्रका पञ्चम, और शनिका बारहवां स्थान हर्ष स्थान है। हर्ष स्थानका ग्रह शुभ फल देता है।

बृहत् पाराशरी होरामें लिखा है कि—

यद् यद् भागवतो राहुः केतुश्च जनने नृणाम्।
यद्यद् भावश संयुक्तस्तत् फलं प्रदिशेहलम्॥
(बृ. पा. हो. पू. खं. अ. १३)

राहु और केतु जिसकी राशि पर हों और जिस भावेशके साथ बैठे हों तो उन्हींका फल करते हैं, अपना कुछ नहीं।

उक्त कथनको मैं स्वीकार नहीं करता क्योंकि इनके शुभाशुभ फल प्रत्यक्ष देखनेमें आते हैं।

राशि स्वामी राशियोंके स्वामियोंको सभी जानते हैं। यहां पर केवल केतुके सम्बन्धमें लिखना है। राहुको कन्याका और केतुको मिथुनका स्वामी कहा है।

"राहु कन्या गृहं प्रोक्तं केतोश्च मिथुनं-स्मृतम्।" (ताजिक नीलकंठी।) किन्तु ग्रन्थान्तरमें केतुको मीनका स्वामी लिखा है।

तत् सप्तमं वा शिखिना गृहीतं गृहं तन्मीन गृहामिधानम्। 'प्रश्न भैरव' ग्रहोंके फलका समय—

आदौ फलप्रदो भौमः रवी मध्ये सितेज्यकौ।
सर्वदा ज्ञः शशीमन्द दशावसाने फलप्रदौ॥
(बृ.पा.हो.उ.खं.अ. ६)

सूर्य और मंगलदशाके प्रथम भागमें, शुक्र और बृहस्पति दशाके मध्यमें, बुध दशाके आरम्भ से अन्त तक, चन्द्रमा और शनि दशाके अन्त भागमें शुभ अशुभ फल करते हैं। यही नियम गोचर ग्रहके सम्बन्धमें भी है।

भवनादि गतौ फलदौ रवि
भौमौ मध्यगो च गुरु शुक्रौ।
अन्तगतौ शनिशशिनौ
सदैव फलदः शशांकसुतः॥
(वसिष्ठ संहिता १८।१५)

लग्नेश अष्टमेश और षष्ठेश

अष्टमेश और षष्ठेशके सम्बन्धमें यह विशेषता है कि यदि जन्म लग्नमें मेष राशि तुला राशि हो तो अष्टमेशका दोष नहीं रहता॥ इसी प्रकार जन्मलग्नमें वृश्चिक राशि हो अथवा वृष हो तो षष्ठेशका दोष नहीं रहता।[1] इसी प्रकार सूर्य और चन्द्रमाको अष्टमेशका दोष नहीं

[1] अष्टमाधिपतिर्दोषस्तुला मेषे न हि क्वचित्।
अलौ षष्ठेश दोषो न वृषभोपि न दोष भाक्॥
(बृ.पा हो.पू.खं.अ. १३)

रहता अर्थात् अष्टम स्थानमें सिंह राशि हो तो सूर्य अशुभ फल नहीं करता और अष्टम स्थानमें कर्क राशि हो तो चन्द्रमा अशुभ फल नहीं करता ।[१]

प्रसङ्ग वश यह भी कह दूँ कि चन्द्र और सूर्य मारक भी नहीं होते ।

"चन्द्रसूर्य विना सर्वे मारकाः मारकाधिपाः ।" (मध्यपाराशरी) मङ्गल दशमेश हो और पञ्चमेश भी हो तो शुभ फल करता है । केवल दशमेश होनेसे नहीं करता ।[२]

गुरु पञ्चममें शुभ होता है, मंगल छठे और तीसरेमें शुभ होता है छठे स्थानमें मंगल शत्रुओंका नाश करता है । तीसरे स्थानमें मंगल पराक्रमी उत्साही और समाजमें प्रतिष्ठित बनाता है । मेरे विचारसे तीसरे स्थानमें सूर्यादि सभी पापग्रह शुभ रहते हैं । इनमें मंगल अधिक अच्छा रहता है ।

ज्योतिषके किसी ग्रन्थमें लिखा है—
अग्रजातं रविर्हन्ती पृष्ठजातं शनैश्चरः ।
जातं जातं कुजो हन्ति सहजस्थो भवेद्यदि ।

यदि जातकके तीसरे घरमें सूर्य हो तो पहले बहिन भाइयोंको मारता है । यदि शनि हो तो बादमें होने वाले बहिन भाइयोंको मारता है । और यदि मंगल हो तो जो-जो पैदा होंगे उन सभीको मार देगा ।

मैं इस कथनको सर्वांशमें असत्य मानता हूँ । क्योंकि मैंने सैकड़ों कुण्डलियां देखी हैं, तीसरे स्थानमें शुभ ग्रह हो या पाप ग्रह सबके बहिन भाइयोंकी न्यूनाधिकांशमें मृत्यु होती है, गर्भ स्राव होते हैं, और गर्भपात भी होते । ऐसा मेरा अनुभव है ।

स्मरण रहे प्रकृतिका यह नियम है कि जितने पैदा होते हैं वे सभी जीवित नहीं रह सकते । यह नियम न केवल मनुष्योंके लिए है बल्कि पशु पक्षी आदि सभी प्राणियोंके लिए तथा वृक्षोंके लिए भी है ।

लघु पाराशरीमें लिखा है कि—
'न दिशन्ति शुभं नृणां सौम्याः केन्द्राधिपा यदि ।'

अर्थात् शुभ ग्रह (चन्द्र बुध बृहस्पति शुक्र यदि केन्द्र (१-४-७-१०) के स्वामी हों तो जातकको अच्छा फल नहीं देते । मैं इस कथनसे भी सहमत नहीं हूँ । क्योंकि मेरे पास अनेक महापुरुषोंकी कुण्डलियां हैं, जिनके केन्द्र पति शुभ ग्रह हैं ।

महामान्य मदनमोहन मालवीयका जन्म लग्न कर्क है, जिसका स्वामी चन्द्रमा है, चतुर्थ स्थानमें तुला है इसका स्वामी शुक्र है । कर्क लग्न ही भगवान् राम तथा लोकमान्य तिलक का है । एक बात और याद रख लीजिए कि कोई राशि या लग्न ऐसा नहीं है जिसके चारों केन्द्र स्थान पाप ग्रह राशिके हों । इसके विपरीत मिथुन कन्या धनु और मीन ऐसे लग्न हैं जिनके चारों केन्द्र स्थानों पर सौम्य ग्रहोंकी राशियां हैं और इनमें जन्मे मनुष्योंने महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किये हैं, जिनके कुछ उदाहरण ये हैं—

१. महामहोपाध्याय शिवकुमार शास्त्री[३]

---

१ न रन्ध्रेशत्व दोषस्तु सूर्याचन्द्रमसोर्भवेत् ।
(लघु पाराशरी १०)

२ कुजस्य कर्मनेतृत्वे प्रयुक्तं शुभ कारिता ।
त्रिकोणस्यापि नेतृत्वे न कर्मशत्व मात्रतः ।
(लघुपाराशरी)

३ जब मैं काशीमें पढ़ता था तब अनेक बार इनके दर्शन किये थे । —लेखक ।

(काशी) इनका मीन लग्न है। प्रसिद्ध उपन्यास-कार बाबू देवकीनन्दन खत्रीऔर 'भारतभारती आदि अनेक ग्रन्थोंके लेखक, राज्यसभाके सदस्य स्व० श्रीमैथिलीशरण गुप्तका जन्म लग्न मिथुन है। जोधपुरके महाराजा अभयसिंह पुत्र अजीतसिंह (जन्म संवत् १७५६) का जन्म लग्न मिथुन है।

यहां एक बात और आ अटकी यह कि लघु पाराशरीमें लिखा है कि—

धर्मकर्माधिनेतारो रन्ध्रलाभाधिपौ यदि।
तयोः सम्बन्ध मात्रेण न योगं लभते नरः॥

अर्थात् यदि भाग्येश और दशमेश अष्टमेश और लाभेश भी हों तो राजयोग भंग हो जाता हैं।

स्पष्टीकरण—यह योग केवल शनिग्रह पर घटता है। यदि जन्म लग्न मिथुन है तो शनि भग्येश भी होगा और अष्टमेश भी होगा। यदि जन्म लग्न मेष है तो शनि दशमेश और लाभेश होगा। यहाँ पर मिथुन लग्न है अतः शनि भग्येश भी है और अष्टमेश भी फिर भी राज और जोधपुर जैसे बड़े राजका राजा।

नोट :—ज्योतिष मेरा व्यसन है, धनोपार्जन मैं चिकित्सासे करता हूँ। अगले लेखमें भी अनुभवकी बात लिखूंगा।

पता—पो० जालखेड़ा जि० बुलन्दशहर (उ०प्र०)

वेद और विमान

[लेखक :—श्री एच. एस. मास्टर]

अमेरिकन महिला ह्वीलर विल्लाक्सने "Sublimity of the Vedas" पृष्ठ ८३ में लिखा है कि वैदिक ऋषियोंको विद्युत्-रेडियो-एलेक्ट्रन-विमान आदि सभी बातोंका ज्ञान था। अपने "त्रयी-चतुष्टय" में भारत प्रसिद्ध वेद-विद्वान् स्व० पं० सत्यव्रत्त सामश्रमीने भी लिखा है कि वेदोंमें सारे विज्ञान सूक्ष्म रूपसे विद्यमान हैं। यहां देखना है कि क्या वेदोंमें विमानकी बातें पायी जाती हैं ? मैं अपनी अल्पमति अनुसार कुछ विवरण प्रस्तुत करता हूँ और आशा है विद्वान्लोग इसपर और प्रकाश डालेंगे।

(१) ऋग्वेद १।३४।२ में अश्विनी-कुमारोंके ऐसे रथका उल्लेख है जो तीन चक्कों और तीन स्तम्भों वाला है। तीनों खम्भें अवलम्बनके लिये हैं। यह भी लिखा है कि "चन्द्रमा का वेनाके साथ विवाहके समय इस रथको लोगोंने पहले-पहल जाना" क्या यह कोई अद्भुत रथ है या विमान ? परन्तु रथमें न तो तीन चक्के ही रहते हैं न तीन खम्भे ही।

(२) ऋग्वेद १।३४।१२ में त्रिकोण और त्रिलोकमें चलने वाले रथका उल्लेख है। क्या यह त्रिलोकचारी विमान है ? रथ तो त्रिकोण नहीं होता और न त्रिलोकोंमें चल ही सकता है।

(३) ऋग्वेद १।११२।१२ में अश्विनी-कुमारोंके "अश्वरहितरथ" का उल्लेख है। इस को विजयके लिये चलानेकी बात लिखी है। अश्वरहितरथ तो यान्त्रिक ही हो सकता है। रथका अर्थ यान या सवारी भी होता है। तो क्या यह विमान ही है ? आगे ऋग्वेद १।११८।१ में तो और भी स्पष्ट विवरण मिलता है,

पूरा मंत्र इस प्रकार है :—

आवां रथो अश्विना श्येन पत्त्वा सुमृलीकः स्ववां यात्ववार्ङ् । यो मर्त्यस्य मनसो जवीयान् त्रिबन्धुरो वृषणा वातरंहाः ॥

अर्थ :—अश्विद्वय, तुम्हारा बाज पक्षीकी तरह शीघ्रगन्ता, सुखकर और सम्पन्न रथ हमारे सम्मुख आवे। अभिष्टवर्षक-द्वय तुम्हारा रथ मनुष्यके मनकी तरह वेगवान् त्रिविध बन्धनोंसे मुक्त और वायुवेगी है।

बाजपक्षी-मन और वायुकी तरह गति-वाला रथ घोड़ोंका नहीं हो सकता, यह कोई यान्त्रिक कलपुर्जोंका बना हुआ दिखता है।

(४) ऋग्वेद ४।३६।१ में तो स्पष्ट ही आकाशचारी रथका उल्लेख है। मंत्र इस प्रकार है :—

"अनश्वो जातो अनभीशुरुक्थ्यो रथस्त्रिचक्रः परिवर्ततेस्यः महतद्वो देवस्यप्रवाचनं द्यामृभवः पृथिवीं यच्च पुष्यथ।

अर्थ :—ऋभुओं, तुम्हारा कर्म स्तुत्य है। तुम्हारे द्वारा प्रदत्त अश्विनीकुमारोंका त्रिचक्ररथ अश्वके बिना और लगामके बिना अन्तरिक्ष (आकाश) में परिभ्रमण करता है। जिसके द्वारा तुम लोग द्यावा पृथिवीका पोषण करते हो, वह रथ-निर्माणरूप महान् कार्य तुम लोगोंके देवत्वको प्रसिद्ध करता है। अश्वके बिना आकाशचारी रथ क्या है? कदाचित् कोई भी उत्तर देगा "विमान"

ऋभु और अश्विनीकुमार विमान बनाते थे और वैज्ञानिक भी थे। अश्विनीकुमार अच्छे वैद्य भी थे। ऋग्वेद १।१८२।५ से विदित होता है कि इन्होंने पंखोंवाली एक नाव भी बनाई थी। वेदोंकी अनेक शाखायें नष्ट हो चुकी हैं, न मालूम उनमें क्या-क्या ज्ञान भरा था? वेदका अर्थ ज्ञान है और उपनिषदोंके अनुसार ज्ञान और विज्ञानमें कोई भेद नहीं है। आर्य जातिमें धर्म और विज्ञानका कभी झगड़ा नहीं हुआ। दोनों साथ-साथ ही पनपते चले गये। इसलिये आर्यजातिमें कभी ऐसा समय नहीं आया कि धार्मिकोंकी ओरसे वैज्ञानिकों पर अत्याचार हुआ हो। ईसाइयोंमें तथा अन्य धर्मोंमें ये बातें बनी हैं :—

"Court of inquisition" नामकी विशेष अदालत सन् १४८१ में विज्ञानवादियों का दमन करनेके लिये ईसाइयोंने स्थापित की थी। जिसमें ईसाई मतके विरुद्ध, विज्ञानके किसी सिद्धान्तका प्रचार करने वाले वैज्ञानिकों पर अभियोग लगाकर उन्हें सजा दी जाती थी। यही नहीं, नाना तरहकी यन्त्रणाएँ देकर उनसे स्वीकार कराया जाता था कि **"उनका सिद्धान्त झूठा है"**? उक्त अदालतकी आज्ञासे प्रथम वर्षमें ही २००० विद्वान् जलाये गये! इस अदालतका अध्यक्ष **"तारकीमाडा"** नामका मनुष्य १८ वर्षों तक रहा। इसके समयमें १०२२० वैज्ञानिक और उनके भक्त जीते जी जला दिये गये और ८७३२७ मनुष्योंको अन्य प्रकारके दंडोंसे दंडित किया गया। दूर दर्शक यन्त्र (Telescope) के आविष्कारक गैलेलियोको इसीलिये जेलमें ठूंस दिया गया कि वह पृथिवीका भ्रमण करना याने घूमना बताता था। ब्रूनोको इसीलिये जीवित ही जला दिया गया कि वह सृष्टिमें पृथिवीकी तरह अनेक दूसरे लोक-लोकान्तर बतलाता था। परन्तु अत्याचार कब तक चल सकता है? उनमें विज्ञानकी विजय हुई।

इष्ट दंड और लग्न

[ले०—श्री तिलकधारी उपाध्याय एम.ए. ज्योतिर्विद]

नींवकी ईंटकी तरह लग्नका महत्त्व फल कथनमें द्रष्टव्य है। जिस तरह मकानकी दृढ़ता उसकी नींव पर अवलंबित है, उसी तरह फलाफलकी सफलता लग्न पर निर्भर है। लग्न अशुद्ध है तो भविष्य-कथन शुद्ध कैसे हो सकता है? लग्नकी शुद्धि इष्टदंड पर निर्भर करता है। जन्म समयका निर्णय स्वतः विवादास्पद विषय रहा है। संतानके भूमिष्ठ होने, प्रथम क्रंदन और नालच्छेदनमेंसे किसको जन्म-समय माना जाय, प्रथम विवाद तो यही है। समयमापक यंत्रोंसे शत-प्रतिशत शुद्ध समय निर्णय की आशा नहीं रहती। हर समय और सब जगह शुद्ध घड़ी मिलती भी नहीं। पंचांग और पञ्जिकाओंको भी लोगोंने अपनी जीविकोपार्ज़नका एक साधन बना लिया है। परिणाम यह होता है कि एक पञ्जिका दूसरीसे मिलती ही नहीं। इस कारण यह अत्यावश्यक है कि फल कहनेके पूर्व गणितसे अथवा अन्य नियमोंसे लग्न निश्चय कर लेना चाहिए।

सर्वसम्मत विचार तो यही है कि जन्म समयका निर्णय प्रथम क्रंदनसे लिया जाना चाहिए। इष्टदंड शोधनके लिए तत्त्व सिद्धान्त एवं फल कुण्डलीका आश्रय अपरिहार्य है। लग्न शोधनके लिए चार नियमोंका सहारा लिया जा सकता है। प्रथम नियमके अनुसार प्राणपदादि द्वारा इष्ट दंड एवं लग्नकी शुद्धिकी जाती है। महर्षि पराशरने लिखा है कि मनुष्य का जन्म होना हर समय सम्भव नहीं है। समस्त जीवधारियोंका जन्म उसी समय होता है, जब कालचक्रमें समय समय पर प्राण देनेकी शक्ति आती है। वह प्राण शक्ति अन्य कई कारणोंसे सम्मिलित होकर कभी मनुष्य, कभी पशु, कभी पक्षी, और कभी कीट-सर्पादि उत्पादित करती है।

पंद्रह पल समयका नाम प्राण है। अतः एक दंडमें चार प्राण होते हैं। यदि सूर्य चर राशिमें बैठा है तो उसीसे, परन्तु यदि चर राशि में न रहे तो उमसे पंचम या नवम राशि जो चर हो उसी राशिसे एक राशिमें एक-एक प्राण होगा। वृहत्पाराशर होरामें लिखा है :—

> घटी चतुर्गुणा कार्या तिथ्याप्तैश्च पलैर्युता।
> दिनकरेणापहृतं शेषं प्राणपदं स्मृतम् ॥
> शेषात्पलांता द्विगुणी विधाय राश्यंशसूर्यर्क्ष—
> नियोजिताय। तत्रापि तद्राशिचरान् क्रमेण
> लग्नांश प्राणांश पदैक्यता स्यात् ॥

पाराशर मतानुसार प्राणपद साधनोपरांत दो बातें देखी जा सकती हैं। पहली तो यह कि अमुक इष्टदंडसे गणित द्वारा लग्न ठीक आता है। दूसरी बात यह बतायी है कि उस प्राणपदसे किस जीवके जन्मका वोध होता है। प्राणांश और लग्नांश एक ही होता है। अतः दोनोंमें अन्तर आने पर प्राणांशको आवश्यकतानुसार घटाकर अथवा बढ़ाकर लग्नांशसे मिलाया जा सकता है। प्राणपदसे त्रिकोण, प्राणपदका स्थान अथवा उसके सप्तमके त्रिकोणमें लग्न पड़ता हो तो मनुष्यका जन्म समझना चाहिए।

द्वितीय नियमानुसार इष्टदंड, सूर्य स्थित

नक्षत्र, जन्मकालीन चंद्रमा, मांदी, गुलिक, स्त्री-पुरुष जन्म योग इत्यादि द्वारा लग्नका संशोधन किया जाता है। प्रसूतिका गृहके द्वारसे भी लग्नका निर्णय किया जाता है। इसका विचार तीसरे नियममें आता है। चौथे नियममें जातक के शरीर गठनादिसे लग्नका निर्णय किया जाता है।

किन्तु 'तत्त्व-सिद्धान्त'के नियम सबसे विलक्षण हैं। इनके माध्यमसे इष्टकालकी शुद्धि के साथ-साथ जातकका लिंग-निर्देश भी हो जाता है संसार पंच महाभूतोंका बना है। ये पंचमहाभूत प्रतिदिन सूर्योदयसे लेकर दूसरे दिनके सूर्योदय तक आठ वार चक्कर काट लेते हैं। इनकी गति दो प्रकारकी होती है—आरोह गति और अवरोह गति। आरोह गति में पृथ्वी, आपः, तेज, वायु और आकाश क्रमागत रूपमें आते हैं। अवरोह गतिमें आकाश, वायु, तेज, आपः, और पृथ्वीका क्रम होता है। प्रत्येक तत्त्व निश्चित समय तक चलता है। पृथ्वीका समय छः मिनट है। इसी तरह आपः बारह मिनट, तेज अठारह मिनट, वायु चौबीस मिनट तथा आकाश तीस मिनट तक रहता है। पृथ्वीसे आकाश तक डेढ़ घंटा समय लगता है। इस तरह एक आरोह और एक अवरोहमें तीन घंटा समय लगेगा। इस तीन घंटेमें तत्त्वोंका एक चक्र पूरा हो जाता है। विचारका विषय यह है कि क्या प्रतिदिन तत्त्वोंका आरोह एक ही तरहसे आरम्भ होता है? इस संबंधमें 'जातक फलचिंतामणि'के अनुसार रविवार और मंगलवारको तेज तत्त्व, सोमवार और शुक्रवार को जल तत्त्व, बुधवारको पृथ्वी तत्त्व, बृहस्पति वारको आकाश तत्त्व और शनिवारको वायु तत्त्व सूर्योदयके समयसे व्यतीत होने लगता है। प्रथम तत्त्वके बाद आरोह क्रमके अनुसार सभी तत्त्व बारी-बारीसे आते हैं। पुनः अवरोह उसी भांति आता है।

इष्ट दंडसे यह जाना जा सकता है कि जातकके जन्म समय कौन तत्त्व भुक्तमान् था। प्रत्येक तत्त्वसे जातकके लिंगका ज्ञान होता है। उदाहरणतः तेज तत्त्व पुरुषका वाचक है। उसी तरह पृथ्वी और आकाशसे भी पुरुषका ही ज्ञान होता है। जल और वायु तत्त्वसे स्त्री जातककी सूचना मिलती है। इस तरह तत्त्व निरूपणके बाद जातकके लिंग एवं तत्त्व लिंगमें यदि अन्तर हो तो इष्ट दंड ठीक नहीं हैं। उसे आगे-पीछे कर जातकके लिंगसे मिलाकर ठीक करना चाहिए।

तत्त्वोंके आरोह एवं अवरोहके संधिकालमें जन्म होनेसे नपुंसक जातक उत्पन्न होता है। आरोह क्रमका वह तत्त्व जिससे अवरोह क्रम भी शुरु होता है, बतलाता है कि नपुंसक स्त्रीकारक है अथवा पुरुषकारक। यदि संधि तत्त्व पुरुषवाचक है तो स्त्री नपुंसकका जन्म होगा और संधि तत्त्वके स्त्रीवाचक होनेपर नर नपुंसकका जन्म होगा।

किन्तु तत्त्व-सिद्धान्तका और अधिक विश्लेषण करना जरूरी है। दशा-भुक्तिकी तरह तत्त्व अन्तरा तथा तत्त्व अन्तरान्तरा निकालकर भी विचार करना पड़ता है। तत्त्व, अन्तरतत्त्व और अन्तरान्तरा तत्त्व तीनोंसे यदि एक ही लिंग स्पष्ट हो तो जातकका वही लिंग होता है। पुरुषका जन्म तभी संभव है जब तत्त्व, अन्तर तत्त्व और अन्तरान्तर तत्त्व एक हों। तत्त्व भिन्न-भिन्न हों तो पशु-पक्षी, कीट-पतंग, पेड़-पौधोंको जन्म लेना समझना चाहिए।

निष्कर्ष यहाँके मनुष्य जन्मके लिए विशिष्ट समय वही है जब तीनों तत्त्व एक वर्गके हों। तीनों पुंलिग होंगे तो बालकका जन्म होगा और यदि तीनों स्त्रीलिंग हो तो बालिका उत्पन्न होगी। इतना ही नहीं, तत्त्वोंके आधार पर गठनादि विषयों पर विचारकर भी इष्ट दंडकी श्रुति एवं लग्नकी सत्यताका परीक्षण किया जा सकता है।

आरोह तत्त्वोंमें जन्म ग्रहण करने वाला जातक जीवनमें उत्तरोत्तर विकासको प्राप्त करता है, जबकि अवरोह तत्त्वका प्रभाव है कि जातक सदा नीचेको गिरते हैं। इनके जीवनमें बचपनके दिन ही भले होते हैं, शेष जीवन उलझनों, असफलताओं एवं कष्टोंमें व्यतीत होता है। यदि किसी जातकका जन्म पृथ्वी तत्त्वमें हुआ है तो वह हट्टा-कट्टा, स्वार्थी और अर्थ लोलुप होता है। तेज तत्त्वमें जन्म लिए जातकका व्यक्तित्व प्रभावोत्पादक आकर्षक एवं शक्ति सम्पन्न होता है। प्राय: वे राजनेता अभियंता, कूटनीतिज्ञ एवं प्रशासक होते हैं। आकाश तत्त्व वाले चिंतक, अन्वेषक, विज्ञानविद् एवं दार्शनिक होते हैं। जलतत्त्व वाले देखनेमें सुन्दर, परन्तु चंचल स्वभावके होते हैं। वायु तत्त्व वाले दुबले-पतले होते तो हैं, पर उनकी बुद्धि बड़ी प्रखर होती है। जल तत्त्वके जातक मोटे ताजे होते हैं, किन्तु तेज तत्त्व एव वायु तत्त्व वाले कृशकाय होते हैं। पृथ्वी तत्त्व वाले मजबूत होते हैं।

सुतरां तत्त्वोंके विश्लेषण एवं मननके द्वारा इष्ट दंडको ठीक कर लग्न निश्चित कर लेना चाहिए, तथा लग्न एवं तत्त्वके आधार गठनादिकी विशिष्टताओंका विचार कर उसकी शुद्धिकी जांच की जानी चाहिए।

पता—मदनपुर जि० शाहाबाद, आरा बिहार]

सामुद्रिक विज्ञान

अंगूठा-अंगुलियाँ और नख एक अध्ययन

[ले०—श्री पं० राधा कृष्ण शर्मा ज्योतिर्विद]

अंगूठेका महत्व हस्त विद्या विशारदोंके लिए सर्वोपरि है। अंगूठा सामुद्रिक अध्ययनका प्रमुख केन्द्र व आधार है। अंगूठा नैसर्गिक इच्छाशक्तिका केन्द्र है: अतः इसे महत्ता देना नितान्त आवश्यक है। तीन भागों अथवा तीन अस्थि खण्डोंसे इसका निर्माण होता है। वह भाग जो हथेलीके अग्रभागसे जुड़ा रहता है वहां शुक्रका पर्वत स्थित होता है। शुक्र प्रेम व वासनाका केन्द्र है, तात्पर्य यह कि शुक्रके पर्वत द्वारा इनका अध्ययन किया जाता है। ऊपरका नाखून वाला भाग इच्छा शक्तिको स्पष्ट करता है तथा मध्यका भाग तार्किक शक्तिको दर्शाता है। यह इच्छा शक्ति नैसर्गिक तथा मस्तिष्क रेखा द्वारा सूचित इच्छा शक्ति मानसिक होती है।

लम्बा व सुन्दर अंगूठा दृढ़ताका द्योतक है। इच्छा शक्ति प्रबल होती है। चरित्र उज्ज्वल होता है। छोटा अंगूठा हीनताका द्योतक होता है, व्यक्तित्व प्रभावशाली नहीं होता। साधारणतया अंगूठा तर्जनीके जड़से अर्थात् तर्जनी जहां हथेलीके अग्र भागसे जुड़ी रहती है उससे कुछ आगे तक रहता है। इसीसे उसकी लम्बाई छोटाईका ज्ञान किया जाना चाहिए। लम्बे अंगूठे वाले व्यक्ति व्यावहारिक, आदर्शप्रिय व स्वहितरत रहने वाले होते हैं, जबकि छोटे अंगूठे वाले प्राणी भौतिकवादी कामुक सौन्दर्योपासक व भावुक होते हैं। बड़े अंगूठे वाले व्यक्ति सफल होते हैं एवं छोटे अंगूठे वाले भौतिक रूपमें सफल होते हैं।

अंगूठा यदि लचकीला है—सरलतासे पीछेकी ओर झुकने वाला है तो वह व्यक्ति अवश्य सफलता प्राप्त करता है। प्रतिभाशाली होता है। इनकी रुचियां व व्यवहार स्पष्ट होते हैं, परिस्थितियां इन पर हावी नहीं हो पातीं। ये सतर्क पर लापरवाह, किसी बातको प्रमाणके अभावमें न मानने वाले होते हैं। परन्तु अंगूठेका अधिक लचकीलापन विपरीत गुण प्रकट करता है। वे निर्धन व अप्रिय होते हैं।

कठोर नहीं झुकने वाले अंगूठेके मालिक सन्देही, दृढ़ विचारोंसे युक्त, स्वार्थी, तथा कम मित्रों वाले होते हैं। धन संग्रहके लिए ये पागल रहते हैं। कंजूसी इनका प्रधान लक्षण है। संयम व न्याय इनके विभूषण हैं। हृदयमें दयाका अभाव तथा भावुकता इनके निकट नहीं फटकती।

सामान्यसे ऊपर उठा अंगूठा मूर्खता, अज्ञानता नीचताका हामी है, पर नीचेको आधारित अंगूठा मानवीय गुणोंका विकास दिखाता है।

अविकसित अंगुष्ठ मांसल अनुपातहीन आकृतिका होता है। ऐसा प्राणी पशु तुल्य, गिरे चरित्र, निर्बल, तर्क शून्य इच्छा रहित, अतिसाधारण, असामाजिक, सभ्यतासे दूर, दुष्ट होता है। दबे अंगूठे स्नायु शक्तिको प्रकट करते हैं। जिन अंगूठोंका ऊपरी भाग चौड़ा नाखून चोकोर हो वे दृढ़ इच्छाशक्ति वाले,

शक्तिसम्पन्न होते हैं। ये अंगूठे मांसल होते हैं। एक सी लम्बाई वाले अंगूठे वर्गाकार या कलात्मक हाथोंमें होते हैं जो व्यवहार कुशलता व बौद्धिक बलके सूचक हैं।

वे व्यक्ति जिनके अंगूठे कोणात्मक स्वरूप लिए हों प्रभावोत्पादकता व सुरुचिताको दर्शाते हैं। वर्गाकार अंगूठे तर्क शक्तिको प्रकट करते हैं। चौड़े सिरे वाले अंगूठे मौलिकता, स्वतन्त्रता व उच्छृ खलताको प्रकट करते हैं। आयताकार व कुछ दबे अंगूठे इच्छा शक्तिकी तीव्रताको प्रकटाते हैं। गेंदके सदृश गोल, मांस युक्त, सकरे नाखून वाले अंगूठे अपराध प्रकृतिके जनक हैं। ये डाकू, तस्कर, खूनी, व लुटेरे होते हैं। अस्थिरता, खूंखारपन व दुष्टता, क्रोध इनके गुण हैं। विश्वासघाती होते हैं।

अंगूठेसे अलग ४ अंगुलियां होती हैं जो ३-३ खण्डोंमें विभक्त होती हैं। अंगूठेके पास तर्जनी, फिर मध्यमा, अनामिका व कनिष्ठा कहलाती हैं। इनके पर्वत क्रमश: गुरु. शनि, सूर्य, बुध अर्थात् जहाँसे अंगुलियां प्रारंभ होती हैं, होत हैं। कौनसा पर्वत गुण युक्त या गुणहीन है इसका ज्ञान आकृति अंगुलियोंकी पुष्टता मासलतासे परिलक्षित होता है।

सुन्दर, चिकनाई लिए हुए, पुष्ट अंगुलियां पर्वतोंमें वृद्धि करती है, जबकि बेडोल, टेड़ी-मेढ़ी, कुरूप, खुरदरी व दुर्बल अंगुलियां इनके विपरीत अर्थात् पर्वतोंके हीनताकी द्योतक हैं।

स्वाभाविक रूपसे अंगुलियां लम्बी होती हैं। शनिकी अंगुली सबसे बड़ी अर्थात् मध्यमा सबसे बड़ी होती हैं। तर्जनी शनिके अंतिम खण्डके मध्य तक पहुंचने वाली, अनामिका लगभग इसी नापकी। कनिष्ठा-सूर्यके अंतिम पुरके प्रारंभ तक पहुंचने वाली साधारणतया होती है।

तर्जनी यदि लम्बी हो तो वह शासकीय भावना उत्पन्न करती है। ये लोकप्रिय, ख्याति उपार्जित करने वाले, सम्मान प्राप्त करने वाले होते हैं, परन्तु गुरुकी अंगुली यदि छोटी हो तो विपरीत गुण प्राणीमें समझने चाहिएं।

मध्यमा अंगुली यदि साधारणसे लम्बी हो तो वह व्यक्ति एकान्तप्रिय, मननशील गंभीर तथा विचारशील होता है। यदि शनिकी अंगुली छोटी हो तो उपरोक्तके विपरीत गुण होते हैं।

अनामिका अंगुली यश कामनाकी द्योतक है। यह यदि लम्बी हो तो व्यक्तित्वमें जीवटता व भाग्यवादिता होती है. तथा साधारणसे छोटी हो तो इनसे अरुचि स्पष्ट होती है। लम्बी अनामिका जुआरीपन व साहसकी भी द्योतक है।

कनिष्ठा अर्थात् बुध वाली अंगुली वाचालता व विचारशीलता प्रकट करती है। यह यदि छोटी हो तो जातक मानसिक शक्तियोंका दुरुपयोग करता है।

हथेलीके अनुपातमें छोटी अंगुलियाँ पाशविक प्रवृत्तिको स्पष्ट करती है पर लम्बी बौद्धिक परिष्कर्ताको।

हथेलीमें सभी अगुलियां एक क्रममें जुड़ी हों तो शुभ हैं। 'यदि पर्वत धँसा हुआ है अर्थात् अंगुली क्रममेंसे नीचे दबी हो पर्वतका गुण समाप्त हो जाता है, इसके विपरीत पर्वत बढ़ा हुआ हो तो उसके गुण बढ़ जाते हैं।

यदि अंगुलियोंके मध्य रिक्त स्थान हो तो उसका भी अपना महत्व है। अंगूठे व तर्जनी

के मध्य अधिक दूरी दया, प्रेम, विश्वास श्रद्धा व विभिन्न मानवीय गुणोंको प्रकट करती है। गुरु व शनिकी अंगुलियोंके मध्य अधिक अन्तर विचार-स्वातन्त्र्यका परिचायक है, तथा अनामिका व मध्यमाके बीचकी दूरी औपचारिकता, लापरवाही, अविश्वासको प्रकट करती है। सूर्य व बुधके मध्यकी दूरी मनमाने कार्यको प्रकट करती है। सभी अंगुलियोंके बीचकी दूरी निर्ममता, कार्य स्वतन्त्रता तथा सबके पास पास होने पर प्रभावोत्पादकता, सतर्कता, सामाजिकता, भविष्यके प्रति विश्वास व चिन्ता परम्परावादी व विश्वासोंमें जकड़ेपनका भान होता है।

झुकी अंगुलीका पर्वत पड़ौसी पर्वतसे प्रभावित होता है।

चौड़े व फैले हुए अंगुलीके सिरे व्यावहारिकताके परिचायक हैं। जातक प्रतिभाशाली, स्वतन्त्र विचारशक्तिसे युक्त व व्यावहारिक पक्षमें प्रबल होते हैं। वर्गाकार सिरे क्रमिकता, सुनियोजितता व चतुरताके द्योतक होते हैं। तर्क व प्रमाणके आधार पर ये किसी भी बात को मान लेते हैं। काव्य, इतिहास व विज्ञान जाननेके इच्छुक होते हैं। कोणरूप सिरे अधिकांशतः स्त्रियोंमें होते हैं, इनमें कला प्रभाव व आदर्शका गुण मिलता है। ये अव्यावहारिक व असफल होते हैं। नुकीले सिरे उपरोक्त गुणों व अवगुणोंको अति तक पहुंचा देते हैं। ये दिवास्वप्न देखते हैं। कल्पना लोकमें विचरते रहते हैं।

अंगुलियोंके पौर ३ विश्वोंका प्रतिनिधित्व करते हैं। ऊपर मानसिक, बीचमें व्यावहारिक व नीचे भौतिक विश्व होता है। ३ पौर दो जोड़ोंसे निर्मित होते हैं। प्रथम जोड़ मानसिक क्रमबद्धता व दूसरा भौतिक उपलब्धियोंके प्रति चाहका प्रतिनिधित्व करते हैं। दार्शनिक हाथोंका लक्षण ही ये गांठें हैं। गंठीली अंगुलियां विवेक, विचारशीलता, अध्ययनप्रियता व गंभीरताकी परिचायक हैं।

प्रथम गांठ यदि विकसित हो तो वह प्रतिभाशाली, मानसिक रूपसे दक्ष व अच्छे व्यक्तित्व वाला व्यक्ति होता है। ज्यादा बढ़ी हुई गांठे भौतिकवादसे परे ले जाती हैं। लापरवाही व आर्थिक दृष्टिमें उदासीन होते हैं।

गांठ रहित, चिकनी अंगुली विश्लेषणात्मकताकी अपेक्षा आस्थावान् दर्शाती है। भावपरम्पराएं व दूसरोंके भावोंसे प्रभावित होते हैं। ये दृढ़निश्चयी व तर्क वितर्क नहीं करते। ये धर्म भीरु होते हैं। आत्मशक्ति प्रबल होती है। कलाकार होते हैं।

उल्टी ओरसे देखने पर यदि अंगुलियां पीछेकी ओर मुड़ी दीखे तो वे व्यक्ति स्वतन्त्र, सफल, स्वच्छ मष्तिष्क वाले होते हैं। हथेली की ओर झुकी अंगुलियाँ संदेहको पुष्ट करती हैं।

नख, अंगुलियों व अंगूठेके सिरोंकी रक्षा करते हैं। इनकी बनावट, रंग, सतहके अध्ययन से स्वास्थ्य व शारीरिक रोगका ज्ञान होता है। फेफड़ों, दिल व रक्तकी रुग्णताका ज्ञान भली प्रकार हो जाता है।

जो नाखून मुलायम, चिकने व गुलाबी हैं वे अच्छे स्वास्थ्यके परिचायक हैं। मृत समान खुरदरे, दरारयुक्त नख अस्वस्थताके द्योतक होते हैं। सतह पर रेखाएं स्नायु दुर्बलताकी प्रतीक हैं। ये रेखाएं जब आधारके प्रति समानान्तर हो तो रुधिर विकारका संकेत मिलता है।

रत्न धारण—

मानवके लिए स्वास्थ्य तथा लाभवर्द्धक

[ले०—वैद्य श्री प्रकाशचंद्र 'पाहवां' आयुर्वेदाचार्य साहित्यरत्न]

मानव जीवनपर रत्न धारणसे क्या प्रतिक्रिया होती है ? यह तो ज्योतिषका थोड़ा भी ज्ञान रखने वाले भली-भांति जानते हैं। फिर भी पढ़े-लिखे लोग यह तो जानते ही हैं कि समुद्रमें पानी पर चंद्रमाकी किरणें ही ज्वार-भाटेका कारण होती हैं और संपूर्ण समुद्र में उथल-पुथल मच जाती है । उसी प्रकार मानवके शरीरमें रत्न-धारण अपना प्रभाव व्यक्त करता है।

रत्नोंका प्रभाव मानव पर कैसे पड़ता है ? इस विषय पर अधिक वाद-विवाद न कर इतना ही लिखना पर्याप्त है कि आजके वैज्ञानिक युगमें इस प्रकारके यंत्रोंका आविष्कार हो गया है कि जिससे एक चिड़ियाके उड़ने मात्रसे पृथ्वी पर क्या प्रभाव पड़ सकता है ? यह पता लगा लिया जाता है । जब एक चिड़ियाके 'उड़नवेग' का प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है तो शरीर पर रत्न-धारणसे उसका प्रभाव क्यों नहीं पड़ सकता ?

लम्बे नाखून फेफड़ों व वक्षकी दुर्बलता दिखाते हैं। कुछ छोटे नाखून वाले व्यक्तियोंमें गले व स्वांस नलिकाका रोग होता है। छोटे नाखून यदि मांसमें दबे हो तो स्नायु अवस्थाओं के द्योतक हैं। चपटे नख लकवेका ज्ञान देते हैं।

नीला रंग रक्तका अशुद्ध प्रवाह दिखाता है। नाखूनों पर श्वेत दाग स्नायविक दुर्बलता, काले दाग रक्तकी अशुद्धता दिखाते हैं।

पता—सी.जी. ३२ हाईकोर्ट कालोनी जोधपुर]

एक बार मेरे मित्र, जिनको कि ज्योतिष-विषय पर पूर्ण अधिकार है, नीलम लेकर किसी को धारण कराने हेतु दूसरे गांवके लिए बसमें बैठकर रवाना हुए । रास्तेमें बसमें बैठे हुए दो मनुष्योंमें झगड़ा हो गया। झगड़ा इतना बढ़ गया कि आपसमें मारपीट हो गई जिससे मेरे मित्र (पंडितजी) के भी चोट आ गई। शहर नजदीक आ गया था। जहां पहुँचकर बस थाने पर रुकी और मारपीटकी रिपोर्ट हुई। थानेदारने संबंधित दोषियोंको रोकनेके साथ मेरे मित्र पंडितजीको भी रोक लिया और उन पर भी मारपीटका झूठा अभियोग लगा दिया।

पंडितजीने कुछ सोचा और थानेदारसे पेशाबका बहाना कर नजदीक पेड़के पास बैठ गये। नीलम जेबसे निकाला और एक थोड़ा-सा खड्डा खोदकर नीलम उसमें गाड़ दिया तथा कुछ निशान बना दिया और वापस थानेदारके पास आ गये । जब थानेदारने उनका नाम व पता आदि पूछा तो थानेदारने उन्हें उसी समय छोड़ दिया । यह सब नीलम का ही प्रभाव जानना चाहिए ।

एक संपन्न परिवारकी एक स्त्रीने एक अंगूठीमें हीरे एवं माणिक्यको एक साथ जड़ित कराकर धारण किया । थोड़े दिनों बाद ही उसको क्षय (टी.बी.) हो गया। जब वह स्त्री मेरे पास चिकित्सा हेतु आई तो मैंने उस जड़ाव को पहने देखा। मैंने उसकी चिकित्साके साथ उसे

भी उतार देनेका परामर्श दिया। मेरे कथनानुसार उसने उसे उतार दिया। थोड़े ही दिनोंमें वह ठीक हो गई। अब प्रश्न यह है कि उस हीरे एवं माणिक्यके जड़ावको मैंने क्योंकर उतरवा दिया ?

हीरा शुक्र ग्रह पर लाभदायक है और माणिक्य सूर्यग्रह पर लाभदायक होता है। सूर्य एवं शुक्र ग्रह दोनोंकी आपसमें शत्रुता है। अतः दोनोंके लाभदायक रत्न शरीर पर एक साथ मिलकर धारण करनेसे बुरा असर दिखाया।

रत्नोंका प्रभाव

रत्नोंकी उत्पत्ति बलि दत्य एवं दधिचिके शरीरसे हुई और उनके शरीरके जिस-जिस अंग से जिस-जिस रत्नकी उत्पत्ति हुई उस-उस रत्नसे मानव शरीरके उस-उस अगमें अधिक उपयोग होता है।

हीरा:—अस्थिसे उत्पन्न हुआ। यह अस्थि रोगनाशक एवं शुक्रग्रह पर लाभदायक है। मेरी व्यक्तिगत रायसे हीरेके साथ माणिक्य एवं मोती दोनों या इन दोनोंमेंसे एक भी धारण न करें। क्योंकि शुक्रग्रहका रवि और चंद्रमा ग्रह शत्रु हैं। रवि पर माणिक्य एवं चन्द्रमा पर 'मोती' लाभदायक होता है। किंतु शत्रु ग्रहके रत्न एक साथ धारण करनेसे शरीर पर कुछ दूसरे ही प्रभाव डाल सकते हैं।

मोती:—दंतसे पैदा हुआ है। ये दंतरोग नाशक एवं कैलशियमकी न्यूनतामें अधिक लाभदायक होते हैं। अधिकतर दंतरोग कैलशियमकी कमीके कारण ही देखे गये हैं। यह चंद्रग्रह पर लाभदायक है। इसके साथ 'गोमेद' रत्न न पहिनें। क्योंकि 'गोमेद' राहु ग्रह पर लाभदायक है और राहु तथा चंद्रमामें शत्रुता है। अतः दोनों ग्रहोंके रत्न एक साथ धारण राहु तथा चंद्रमामें शत्रुता है। अतः दोनों ग्रहों के रत्न एक साथ धारण करनेसे खराव असर दिखा सकते हैं।

माणिक्य: यह 'रक्त' से पैदा हुआ है। अतः यह रक्त रोगनाशक, रक्तवर्द्धक, ब्लड-प्रेशरके लिये बहुत लाभदायक है। इसे सूर्य ग्रह पर धारण करना चाहिये। सूर्यके शनि, राहु, शुक्र ग्रह शत्रु हैं। इनके लाभदायक रत्न क्रमशः नीलम, गोमेद, हीरा हैं जिन्हें माणिकके साथ धारण नहीं करना चाहिए।

पन्ना (हरा):—यह 'पित्त' से पैदा हुआ, पित्तरोग नाशक एवं बुध ग्रह पर लाभदायक बुधका शत्रु चंद्रमा, चंद्रमाका रत्न मोती। इसलिए पन्ना एवं मोती दोनों एक साथ शरीर पर धारण न करें।

इन्द्रनील (नीला)—यह 'नेत्र से' उत्पन्न एवं नेत्र रोगनाशक है।

लहसूनिया—'यह 'स्वर' से उत्पन्न। स्वर भंगमें लाभदायक एवं वातव्याधिनाशक है। यह 'केतु' ग्रह पर लाभदायक माना गया है।

पुखराज—'चर्म' से उत्पन्न हुआ। अतः चर्मरोग नाशक है। यह बृहस्पति ग्रह पर लाभदायक होता है। बृहस्पतिके बुध एवं शुक्र ग्रह शत्रु हैं। अतः इन दोनोंके लाभदायक रत्न पन्ना और हीरा पुखराजके साथमें शरीरमें धारण न करें।

वैक्रांत: 'नाखून' से उत्पन्न हुआ। यह नखरोग नाशक है एवं अधिकतर 'बृहस्पति' ग्रह पर ही लाभदायक होता है।

गोमेद: 'वीर्य' से उत्पन्न हुआ। मूत्र

रोग एवं वीर्य संबंधित समस्त प्रमेहादिकमें अधिक लाभदायक होता है।

लाजावर्त :—'तेज' से उत्पन्न हुआ। पांडु रोगमें विशेष लाभदायक एवं 'राहु' ग्रह पर धारण योग्य।

अकीक :—'कफ' से उत्पन्न। कांतिप्रद।

स्फटिक :—'चर्बी'से उत्पन्न। क्षय रोग निवारणार्थ विशेष रूपसे।

नीलम :—'चर्बीसे उत्पन्न। त्रिदोषनाशक एवं प्लीहा निवारणार्थ। शनि ग्रह पर लाभदायक एवं शनिके नीलमके साथ शत्रु-ग्रह रवि एवं चंद्रमाके माणिक एवं मोती अनिष्टकर।

इस प्रकार रत्नोंका प्रभाव शरीर पर होता है। यदि इन रत्नोंको शास्त्रीय विधिसे आभूषणमें धारण किया जावे तो मानवके लिए शोभावर्द्धनके साथ-साथ स्वास्थ्य एवं लाभप्रद हो सकते हैं।

अनिल भवन, भीलवाड़ा (राजस्थान)

ज्योतिषका महत्व

[लेखक :—डा० हरिकृष्ण छँगाणी, ज्योतिषाचार्य, एम.ए., डी. लिट.]

वेदके छः अङ्ग हैं, जिनमें ज्योतिष-शास्त्र भी उसका अङ्ग है। ज्योतिष शब्दका अर्थ है प्रकाश। प्रकाशसे हमारा तात्पर्य ईश्वरीय प्रकाशसे है, जिससे समस्त चराचर जगत् प्रकाशित है। इस प्रकाशका सम्बन्ध नेत्रसे भी है, उस जगन्नियन्ता परमात्माका नेत्र सूर्य है :—"चक्षोः सूर्योऽजायत।" इसके अतिरिक्त "ज्योतिषं वेद चक्षुः" कह कर ज्योतिषको वेद पुरुषका नेत्र कहा गया है। सम्पूर्ण अङ्गोंके रहते हुए भी नेत्रहीन कुछ नहीं कर सकता, उसी प्रकार बिना ज्योतिषके (ईश्वरीय प्रकाश के) सूर्य-चन्द्रके अभावमें लौकिक-पार-लौकिक कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता।

ज्योतिष-शास्त्र मानव-समाजको शुभ कर्मों में प्रवृत्त होने और अशुभ कर्मोंसे विरत होनेका उपदेशक होनेके कारण प्रभु-सम्मत शास्त्रकी कोटिमें आता है। इस शास्त्रकी सफलतामें ऋषियोंका यह उद्घोष "सफलं ज्यौतिषं शास्त्रं, चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ" अवश्य ही सर्वसम्मत सम्माननीय है।

इस शास्त्रके मुख्यतया ३ भेद हैं :—

१ सिद्धान्त, २ संहिता और ३ होरा।

ये ज्यतिषके तीन स्कन्ध हैं, जैसा कि "सिद्धान्त संहिता होरा, ज्योतिष-शास्त्रं त्रयात्मकम्" इस उक्तिसे ज्ञात होता है।

१ सिद्धान्त :—जिसके द्वारा ग्रहोंकी आकाशीय स्थितिका निर्धारण किया जाता है उसे सिद्धान्त कहते हैं। इसमें काल गणना, ग्रहगति गणना, अंक गणित, बीज गणित, रेखा गणित, पृथ्वी, नक्षत्र और ग्रहोंकी संस्थाका निरूपण तथा ग्रहवेधके लिए यन्त्रों आदिका निर्माण इत्यादि अनेक विषयों पर विचार किया गया है।

२. संहिता :—ग्रहोंकी तात्कालिक स्थिति से सुभिक्ष और दुर्भिक्ष अर्थात् समृद्धि और अकाल आदि सार्वभौम शुभाशुभ फलोंका आदेश किया जाता है उसे संहिता कहते हैं। इसमें स्वर, मुहूर्त, शकुन, पुरुष, स्त्री, गज, अश्व आदिके लक्षण, वास्तुविद्या प्रभृति अनेक विषयोंका वर्णन किया गया है।

३ होरा :- प्राणिमात्रके जन्मकालिक ग्रह स्थितिवश उसके जीवन कालमें घटित होने वाली अतीत, अनागत और वर्तमान बातोंका आदेश किया जाता है, उसे जातक कहते हैं, उसी जातकका दूसरा नाम होरा भी है। अंग्रेजी के Hour शब्दसे उसके स्वरूप और अर्थकी समता होनेके कारण कतिपय महानुभाव इसे ग्रीक भाषाका शब्द मानते हैं, किन्तु वराहमिहिरने इसे संस्कृत शब्द ही माना है। उनके मतानुसार 'अहोरात्र' शब्दमेंसे आदि और अन्तके वर्णोंको हटा देनेसे होरा शब्द बनता है। इसी होराके अन्तर्गत अरबी भाषासे अनूदित "ताजिक शास्त्र" भी है। 'होरा' में प्राणियोंकी जन्मकाल सम्बन्धी ग्रहस्थितिसे जीवनमें घटित होने वाले शुभाशुभ कार्योंका निर्देश किया गया है।

रात्रिके समय आकाश मण्डलके नीले वितान पर आभासित प्रकाश पिण्ड, प्रतिदिन अपनी ओर हमारे नेत्रोंको आकृष्ट करते हैं, इनके अन्तर्गत गम्भीर रहस्यकी जिज्ञासा हेतु मानव-मनीषा सर्वदा प्रयत्नशील रही है। उसे इस विषयमें ज्यों २ सफलता मिलती गई है, त्यों त्यों इसमें रहस्यमय श्रृङ्खलाओंका समावेश होता गया है।

सुदूर आकाशमें भ्रमणशील ग्रह पिण्डोंका भूतल निवासियों पर प्रभाव पड़ता है। ये ग्रह पिण्ड प्राणियोंके भाग्य नियन्ता हैं। 'वराहमिहिर' कहते हैं कि—"पूर्व जन्ममें जो शुभाशुभ कर्म किया जाता है, उसको यह शास्त्र उसी प्रकार स्पष्ट कर देता है, जिस प्रकार धनान्धकारमें अदृश्य पदार्थोंको दीपक प्रकाशित कर देता है। ग्रहों एवं राशियोंका तथा नक्षत्रों का मानव जीवनसे शाश्वतिक सम्बन्ध है, जो वर्तमानसे भी सिद्ध हो चुका है। भास्कराचार्य ने कहा है कि :—

"सूर्यात्मा दिनकृन्मनश्चहिमगुः
सत्वं कुजो ज्ञो गिरा।
जीवो ज्ञानमथो सितश्च मदनः
दुःखं दिनेशात्मजः॥"

सूर्यका सम्बन्ध आत्मासे, मनका सम्बन्ध चन्द्रमासे, शक्तिका सम्बन्ध मंगलसे, वाणीका सम्बन्ध बुधसे, ज्ञानका सम्बन्ध गुरुसे, कामका सम्बन्ध शुक्रसे और दुःखका सम्बन्ध शनिसे है।

ग्रहोंका प्रभाव मानव-जीवन पर पड़ता है, यह कल्पना नहीं —प्रत्यक्ष सत्य है। समुद्रमें ज्वार-भाटाका कारण चन्द्रमा ही माना जाता है। इस तथ्यको सभी वैज्ञानिक स्वीकार कर चुके हैं। वराहमिहिरने मनुष्य, पशु-पक्षी, स्थावर-जंगम सब पर ग्रहोंका प्रभाव बताया है। वनस्पतियों पर चन्द्र व सूर्यका प्रभाव प्रत्यक्ष है। कुमुद रात्रिमें ही खिलता है। दिन में वह सम्पुटित हो जाता है। कमल दिनमें खिलता है और रात्रिमें सम्पुटित हो जाता है।

अतः यह सिद्ध हो जाता है कि ग्रहोंका मनुष्य, पशु-पक्षी, स्थावर और जंगम सभी पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए ज्योतिषका मानव-जीवनमें अत्यधिक महत्व है।

—छंगाणी मुहल्ला फलोदी राजस्थान]

अपूर्व शक्ति प्राप्त करनेका अद्भुत प्रयोग

[ले०—श्री पं० रामचन्द्र शर्मा, शास्त्री विद्यादिवाकर, जोधपुर निवासी]

रात्रिको लगभग ९ बजे शुचिर्भूत (शुद्ध होकर) किसी एकान्त स्थानमें जहाँ चित्तको शान्ति मिले, प्रसन्नता प्राप्त हो ऐसी जगह एक पवित्र आसन बिछाकर उस पर सुखासन पर बैठ जाओ। आसन बदलो मत। बाहरकी कोई आवाज भी सुनाई न दे इसलिये कर्णमुद्रा से अथवा किसी और प्रकारसे कान बंद कर लो और चित्तको एकाग्र कर शान्तिसे उस दिव्य ध्वनिको सुनो जो सारे संसारमें गूंज रही है। यह ध्वनि तुम्हारे हृदय-मन्दिरमें हो रही है। हृदय-मन्दिर ही चित्ति शक्तिका निवासस्थान है। तुम अपनी मन:स्थितिको उस महान् शक्तिसे संयुक्त कर लो जिससे संसारकी समस्त शक्तियां प्रभावित हो रही हैं। यह कल्पना करो कि तुम सदा शक्तिसे ही रहते हो। ऊपर. नीचे, दायें बायें सब तरफ शक्ति ही शक्ति देखते रहो, और मन:पूर्वक दयामयी जननीको अपने सामने प्रत्यक्ष मान कर आंखें बंद करके ध्यानसे दर्शन करो और प्रार्थना करो।

ॐ आं ह्रीं क्रों दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजंतोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्रयदु:खभयहारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥

दयामयी जननी, आनन्दमयी स्नेहमयी अमृतमयी माँ! तुम्हारी जय हो। माँ, तुम ज्ञानमयी बुद्धिमयी और शक्तिमयी हो। माता मुझे शक्ति और बुद्धिका वर दो। मेरी वाणी और बुद्धि पवित्र करो। मेरे अन्तरमें अखंड ज्ञानका भण्डार खोल दो, मेरे जीवनको यशस्वी और सफल बना दो माँ!

"दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः" इस उपरोक्त मंत्रका अनेक बार पाठ करके पूर्ण श्रद्धाके साथ भगवती माताका ध्यान करके फिरसे एक बार उसी प्रार्थनाको दोहराओ और (कान खोलकर) शुभ्र और पवित्र बिस्तर पर उसी ध्यानमें मग्न होते हुये सो जाओ। किसी से बात मत करो, प्रात:काल जागने पर बिस्तर से उठनेसे पहिले मन ही मन मन्त्रका जप करते हुये माता भगवतीका ध्यान करो और अपनी उसी प्रार्थनाको (दुर्गेस्मृता) दोहरा दो।

इस प्रकार विधिसहित (धूपदीपके साथ) एक मास तक साधना करके देखो, तुम्हें विलक्षण शक्ति बल और बुद्धि मिलेगी। दिन पर दिन जगज्जननीसे तुम्हारा सम्बन्ध निकटका हो जायगा। जब तुम्हारे हृदयमें यह विश्वास हो जावे, तुम्हारी अन्तरात्मामें यह श्रद्धा और भावना निर्माण हो जावे कि तुम पर माताकी कृपा हो गयी है, तब तुम्हें जिन-जिन कामनाओं को पूर्ण करना हो, माँसे कह दो, वह तुम्हारी कामनापूर्ण करेगी। विद्या, धन, ऐश्वर्य यश, ये सब तुम्हें अनायास ही मिल जायेंगे। इस उपासनासे तुम्हें आश्चर्यजनक शक्तिकी जागृति होगी और तुममें असाध्यसे भी असाध्य कार्यको साध्य करनेकी असीम शक्ति निर्माण हो जावेगी।

अगले अंकमें दूसरा महत्वपूर्ण प्रयोग प्रकाशित होगा।

पता—३/३/६३५ महाकाली स्ट्रीट, सिकन्द्राबाद (आंध्र)

मुकदमेमें विजय दिलाने वाला भैरव-प्रयोग

[ले०—श्री भँवर लाल जोशी]

श्मशान स्थित भैरव प्रतिमाके संमुख सायंकाल स्नान करके मृगछालाका आसन बिछाकर आसन शुद्धि और स्वस्तिवाचन पूर्वक संकल्प बोलकर पहले शक्ति भैरवीका किसी भी मंत्रसे ध्यान करके षोडषोपचार पूजा श्री भैरव देवताकी करके सिन्दूरका चोला चमेली के तेलमें चढ़ावे। पुष्पोंमें अर्क पुष्प और धतूरा का फूल काममें लेवें। चतुर्मुख दीपकी उड़द दही और घृत गुड़ और जटामांसी युक्त एक बली प्रति दिन देवे। सप्तदश (१७) दिनात्मक यह प्रयोग है। हरिद्रा कुंकुम और काजलसे प्रतिमाके सामने, १५, २०, २४ यह तीन संख्या लिखे। पहली हरिद्रासे, दूसरी कुंकुमसे, तीसरी काजलसे। मालाका ध्यान पूजा करके।

"क्रां क्रीं सिं लिं हूं त्वं पं
यं दं भ्रीं भ्रूं पं लं"

इस त्रयोदशाक्षर मंत्रकी २१ माला प्रति दिन जपकर अन्तमें 'स्तव सार्वभौम" सत्यव्रत शर्मा रचितका एक पाठ करे। अन्तमें १७वें दिन २१ बालकोंको भोजन करवाएं, जिसमें गुलगुला एवं पकौड़ी तैलकी हो और एक-एक रुपया व एक-एक केला फल उनको दें। कैसा भी मुकदमा हो प्रयोगके १ मास बाद निश्चित विजय होगी।

शल्यशोधनकी क्रिया जिसमें भूमिगत खराबी निकाली जाती है ऐसा स्वयंका अनुभूत प्रयोग आगामी अङ्कमें दूंगा।

पता—रींगस (राजस्थान)

निर्बलकी हाय—एक सच्ची घटना

[ले०—श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त साहित्यविशारद]

निर्बलको न सताइये जाकी मोटी हाय।
मुई खालकी सांस सौं लोह भस्म हो जाय॥

(कबीर)

महात्मा कबीर कहते हैं कि मुई खाल (धौंकनी) की सांस (हवा) से लोहा भी भस्म हो जाता है। तब और किसीकी तो बात ही क्या है। निर्बलको सताना नहीं चाहिये। यह कहानी सच्ची है। केवल पात्रोंके नाम बदले गये हैं।

(१)

गाड़ी स्टेशनसे छूट चुकी थी, परन्तु प्लेट फार्मसे पार नहीं हुई थी। तभी एक स्त्री गाड़ी में चढ़नेके लिये भागती हुई दिखाई दी। गार्ड ने पुकार कर रोका—"मत भागो, गाड़ीमें नहीं चढ़ सकोगी" परन्तु स्त्री हिम्मतसे लपक कर गार्डके डब्बेमें ही चढ़ गई। गार्डको बहुत क्रोध आया, परन्तु अब उसको धक्का भी नहीं दिया जा सकता था। आखिर, दरवाजा खोलकर उसे अन्दर बिठा लिया। स्त्रीने कनखियोंसे गार्डकी ओर देखते हुये धन्यवाद स्वरूप कहा— बाबूजी, आपकी कृपासे मैं अपनी ड्यूटी पर पहुंच जाऊंगी। वरना गैर हाजिर हो जाती।"

"तुम कहां ? क्या काम करती हो ?"

"मैं देहलीमें अध्यापिका हूँ" स्त्रीने कहा।

"कितने सालसे आप अध्यापन कार्य करती हैं ?" गार्डने पूछा। स्त्रीने रोनी सूरत बनाते हुये उत्तर दिया "मुझे नौकरीको क्या आग लगानी थी। परन्तु भाग्यका लिखा नहीं टलता। यदि वह जीवित रहते तो मुझे क्यों पराई तावेदारी करनी पड़ती ?"

गार्डने कहा—क्या आपने शादीसे पहले ही शिक्षा प्राप्त कर ली थी, या उनके मरनेके बाद पढ़ी हो ?

मैंने मिडिल तक तो पहिले ही पढ़ लिया था। विवाहके पीछे सात आठ वर्ष सुख पूर्वक बीते। परन्तु जब मेरे उपर अचानक बिपत्तिका पहाड़ टूट पड़ा और मैं लावारिस हो गई तो उदर पूर्तिके लिये नौकरी करनी पड़ी। एक वर्ष तक नौकरी करके मैं पक्की नौकरीके लिये नारमल स्कूल (ट्रेनिंग स्कूल) में प्रबिष्ट हो गई। अब मैं पक्की नौकरी पर लग गई हूँ।

गार्डने मुस्कराकर मीठी चुटकी लेते हुये कहा 'अच्छा तो अब आप 'ट्रेण्ड' हो गई हैं।'

स्त्रीने शर्माते हुये 'हां' कह दिया।

गाड़ी तेजीसे भाग रही थी। साथ ही गार्ड साहबका दिल भी छलांगे भर रहा था। वह स्त्रीसे खुलकर बातें करनेके लिये सोच रहा था, तभी बेवाने कहा, बाबूजी मैं आपको अपना हितकारी समझकर एक प्रार्थना करती हूँ।

गार्ड बोला—कहिये क्या आज्ञा है ?

स्त्रीने कहा - मैं बुकिंग आफिसमें पहुँची तब वह बन्द हो चुका था, टिकट नहीं ले सकी। मेरे पास देहलीकी टिकट नहीं है। गार्डको अपना जादू चलानेका एक नुस्खा मिल गया। और हँसते हुये कहा कुछ परवाह नहीं आरामसे बैठी रहो, कोई पूछेगा तो मैं कह दूंगा—यह हमारी एक रिश्तेदार है। परन्तु यह बताओ

मेरी रिश्तेदारी बताने पर तुम बुरा तो नहीं मानोगी ? स्त्रीने नीची आंखें करते हुये उत्तर दिया—इतनी सी बातका समर्थन करनेमें क्या बुराई हो सकती है। गार्डने ललचाई हुई आंखों से देखते हुये कहा—"तो क्या रिश्तेदारी बताऊं ?"

स्त्रीने लापरवाहीसे मुँह फेरते हुये उत्तर दिया—बस रिश्तेदार शब्द ही काफी होगा।

'आप तो मेरी बात पर नाराज़ हो गईं।'

नहीं नाराज नहीं हुई, जरा हवा लेनेके लिये खिड़कीकी ओर मुँह कर लिया है।

अब गार्डने हिम्मत करके बेवाका हाथ पकड़ लिया और अपनी बगलमें बैठनेका संकेत किया।

बेवाने आंखें निकालते हुये कहा बाबूजी ! मैं डरपोक और नादान नहीं हूँ। आदमियतसे बातें करो, वरना चुप रहो। अगले स्टेशन पर दूसरे डब्बेमें बैठ जाऊंगी। और टी०टी० को टिकटके पैसे दे दूंगी। गार्डका मुँह उतर गया। तब तक अगला स्टेशन आ गया। और स्त्री वहांसे उतरकर दूसरी बोगीमें जा बैठी। गार्ड अपने मनमें पछताने लगा। चिड़िया जालमें आ गई थी। परन्तु मैंने अपनी मूर्खतासे उसे उड़ा दिया।

(२)

देहली जंकशनके प्लेटफार्म पर बड़ी भीड़ है। सभी यात्री अपना सामान उठाये गेटकी ओर जा रहे हैं। हर एक आगे निकलनेकी कोशिशमें है। हमारी कहानीकी हीरो (नायिका) भी भीड़में खड़ी सोच रही थी। दुगुना किराया देना पड़ेगा और लज्जित होना पड़ेगा। गेट पर पहुँचते ही टिकट कलैक्टरने टिकट मांगा। वह कुछ कहने भी नहीं पाई थी कि किसीने पीछेसे कहा इसकी टिकट मेरे पास है जाने दो। स्त्रीने गेटसे बाहिर पीछे फिरकर देखा तो वही गार्ड साहिब हैं। स्त्रीने गार्डसाहिबको धन्यवाद कहा।

गार्डने कहा—देखो, तुमने हमारा साथ छोड़ दिया। परन्तु हमने नहीं छोड़ा। चलो हम तुम्हारे मकान तक पहुंचा आते हैं। स्त्रीने कहा—बाबूजी ! क्षमा करें, मैं स्वयं चली जाऊँगी। परन्तु, गार्ड साहिब नहीं माने और पीछे-पीछे चलते गये। अध्यापिकाने एक गली में छोटासा मकान ले रखा था। वह अपने घरमें चली गई और गार्ड साहिब मकान देख कर वापिस आ गये।

परन्तु अब गार्ड साहिब फल फ्रूट सब्जी मिठाई आदि उपहारमें लेकर कभी-कभी आते और उपहार देकर चले जाते अध्यापिका लेनेसे इंकार करती तो कहते इन पर हमारा पैसा खर्च नहीं होता। रेल्वेमें इस प्रकारके कई पार्सल नीलाम होते रहते हैं। उन्हींमेंसे हम इच्छानुसार वस्तुएं निकाल लेते हैं। और यह उपहार दूसरे रिश्तेदारोंको भेज देते हैं। उसी प्रकार तुम्हें भी देने आये हैं। अध्यापिका उपहार रख लेती। मुहल्ला वाले समझते यह व्यक्ति अध्यापिकाका रिश्तेदार है। इसी प्रकार गार्ड साहिबका अध्यापिकाके घर आना-जाना बना रहा। एक दिन बाबूजी कुछ बहाना करके रातको ठहर गये और अध्यापिकाके सामने सच्ची सौगन्ध खाकर अपने आपको कुँवारा बताते हुये उससे पुनर्विवाहका प्रस्ताव किया। और कहा मैं आयुभर तुम्हारा पालन करूंगा। विवाहका प्रस्ताव सुनकर अध्यापिका कुछ नरम पड़ गई। और यही कहा अभी क्या जल्दी है।

आगे देखा जायेगा । गार्ड साहिब बोले मैं कब कहता हूं कि जल्दी है । समय पर सब कुछ हो जायेगा । अभी समाजसे छुपकर ही रहना चाहिये ।

(३)

दिन जाते देर नहीं लगती । कुछ मास आमोद प्रमोदमें गुजरे कि चंद्रबाला (अध्यापिकाका नाम) को देर तक कुरसी पर बैठना भार प्रतीत होने लगा । एक दिन उसने किसी नर्ससे पूछा तो उसने कहा तुम गर्भवती हो । एकदम दिल कांप गया । पर यह समझ कर सन्तोष कर लिया कि बाबूजी साथ हैं तो किस बातका डर है । मेरे माँ बाप और सुसराल वाले त्याग देंगे तो बाबूजीके साथ रहूँगी । पुनर्विवाह कोई दोष नहीं ।

आज फिर बाबू M.L. शर्मा चंद्रबालाके घर आये तो उसने मुस्कराते हुये गर्भ स्थितिका जिक्र किया और कहा कि अब शीघ्र ही रीति पूर्वक विवाह हो जाना चाहिये । शर्माजी का दिल धड़कने लगा । भर्राई हुई आवाजमें कहा – 'चन्दो ! मुझे विश्वास नहीं था कि अभी गर्भस्थापन हो जायेगा ।' "बाबूजी ! आप तो कुछ उदास हो गये । चिंताकी क्या बात है ? क्या बच्चेके पालन पोषणका फिक्र करने लगे ? अभी तो मुझे भी बेतन मिलता है !"

बातको उड़ाते हुए शर्माजी बोले, नहीं चिंता कुछ नहीं । बहुत शीघ्र गर्भ ठहर गया यह अचरजकी बात है । अभी तो कुछ मास और आमोद प्रमोदमें गुजरते । चंद्रोंने कहा अब भी आनंदसे गुजरेगी । रातको बाबूजी वहां ही ठहरे और सुबह अपने काम पर चले गये । परन्तु शर्माजीके ऊपर उसे कुछ सन्देह हो गया ।

स्कूलसे छुट्टी पाते ही चन्द्रबाला जंकशन गई, जब वह कहीं दिखाई नहीं दिये तो एक कर्मचारीसे पूछा—"बाबू एम०एल० शर्मा कौन सी गाड़ीसे आयेंगे ?"

"कौन बाबू एम०एल० शर्मा ?" कर्मचारी ने कहा ।

"अजी ! वह जो गार्ड हैं"

वह तो आज ही गाड़ी लेकर गये हैं, कल आयेंगे ।

दूसरे दिन फिर चन्द्रबाला स्टेशन पर आई । गेट पर ही शर्माजीसे भेंट हो गई । चन्द्रोने नमस्ते कहा, परन्तु शर्माजी नमस्तेका जवाब लापरवाहीसे देते हुये आगे बढ़ गये और कुछ नहीं बोले ।

चन्द्रबालाके बदनमें काटो तो खून नहीं । शर्माजीका मनोभाव ताड़ गई । और शर्माजीके पीछे-पीछे चल पड़ी ।

"कहां जा रही हो—"? शर्माजी बोले ।

'आपका साथ छोड़कर कहां जाऊंगी, जब आप मेरा साथ नहीं छोड़ते थे तो क्या मैं अब आपका साथ छोड़ दूंगी"

शर्माजीने बातको उड़ाते हुये कहा "चंदो अब तुम अपने मकान पर जाओ । मैंने एक सप्ताहकी छुट्टी ली है । छुट्टीके बाद आकर कुछ प्रोग्राम बनाऊंगा"

"एक सप्ताह काटना मुझे बहुत कठिन होगा । एक दिन मेरे यहां ठहरकर चले जाना ।"

"नहीं नहीं मुझे जाना बहुत जरूरी है, घरसे तार आया है । मेरी वाइफ सख्त बीमार है ।"

चन्द्रो एकदम चौंक पड़ी, "आप तो कहते थे मैं अविवाहित हूँ"

शर्माजीने उसी प्रकार लापरवाहीसे कहा "मुझे ज़्यादा फ़ुरसत नहीं है।" और लम्बे-लम्बे कदम उठाते हुये आगे खिसक गये। चन्द्रो कलेजे पर हाथ धरकर रह गई।

एक सप्ताहकी बजाय तीन सप्ताह बीत गये, परन्तु शर्माजीके न आने पर चंद्रबालाको विश्वास हो गया अब वह नहीं आयेंगे, मेरे लिए विपत्तिका बीज बो गये। हे भगवान्! अब क्या होगा!!

(४)

स्कूल और मुहल्लेमें चंद्रोके अनुचित गर्भ-धारणकी चर्चा होने लगी। पुलिसको पता लगा तो उसने गर्भपातकी रोक थामके लिये अध्यापिकाकी जमानत ले ली। शिक्षा विभागने चन्द्रबालाको व्यभिचारका दोष लगाकर नौकरी से हटा दिया। जिस जमानेकी बात कह रहे हैं उस समय गर्भपात महापाप समझा जाता था। गवरन्मेंट उसपर कत्लका केस कायम करके दंडित करती थी। और समाज, धर्म तथा ईश्वरके यहां भी वह महापातकी माना जाता था। आज तो वह बातें स्वप्न हो गई हैं। बड़े-बड़े नगरोंमें तो गर्भ गिराने वाले डाक्टर नियुक्त हो गये हैं। और व्यभिचार वर्द्धक लूप, फ्रेंच लैदर औषधियाँ आदि कई अनुचित प्रयोग प्रचारित हो गये हैं। अस्तु।

चंद्रबाला अत्यन्त दुखी होकर अपना भविष्य सोच रही थी उसी समय उसे पोस्टमैन ने एक पत्र दिया जो उसके माता-पिताकी ओर से लिखा गया था कि "चंद्रबाला, तुमने बूढ़ेपन में हमारी नाक काट ली। हमें समाजमें मुँह दिखाने योग्य नहीं छोड़ा। अपना काला मुँह करके चाहे जहां निकल जाना। हमारे यहां कभी न आना।" चन्द्रबालाको मानो बिच्छूने काटा हो, वह एकदम तिलमिला उठी। आव देखा न ताव, शर्माजीके विरुद्ध न्यायालयमें दावा दायर कर दिया। शर्माजीके पास अदालतके समन पहुंचे तो एकदम कांप गये।

अदालतमें चंद्रबालाने अपनी सम्पूर्ण कहानी विस्तारपूर्वक सुना दी। और सबको विश्वास दिला दिया कि बाबू एम०एल० शर्माने अपने आपको अविवाहित बताकर मुझे अपनी भार्या बनाया था। आयुपर्यन्त मेरे पालन पोषणका भी वचन दिया था। जब-जब मैंने पुनर्विवाहका प्रस्ताव पेश किया वह प्रेमकी बातें बनाकर टालते रहे। मेरा वर्तमान गर्भ शर्माजीके प्रेमका नतीजा है।

मुहल्ले वाले गवाहोंने कहा—हमने शर्माजी को चन्द्रबालाके घरपर कई बार आते देखा है। यह रातको भी कभी कभी वहां ही ठहरा करते थे। चन्द्रबाला इन्हें अपना नजदीकी रिश्तेदार बताया करती थी।

शर्माजीके गवाहोंने कहा—कि बाबूजी हमारे पड़ोसमें ही रहते हैं। अपनी ड्यूटीसे आकर घर पर ही रहते हैं, हमने कभी उनको रातमें बाहिर आते हुए नहीं देखा।

शर्माजीने कहा—मैं चन्द्रबालाको नहीं जानता कौन है? और कहां रहती है। यह झूठी है। मुझे व्यर्थ बदनाम करती है। मेरी इज्जतको धब्बा लगा रहीं है। श्रीमान् जज बहादुरकी आज्ञा हो तो मैं इसपर 'इज्जत हतक' का दावा कर दूं।

शर्माजीके वकीलने जिरह करते हुये कहा कि 'जब चंद्रबालासे शर्माजीका काफी अरसे तक मेलजोल रहा है तो शर्माजीने कभी कोई पत्र या परचा भी लिखा होगा। अपना

फोटो दिया होगा । या दोनोंका एक फोटो होगा । या कोई अपनी यादगारकी वस्तु ही होगी । चंद्रबाला कोई निशानी या तहरीरी सबूत पेश करे"

चन्द्रबाला हक्की बक्की रहकर अदालत की ओर देखती रह गई । अदालतने शर्माजी को निरपराध छोड़ दिया ।

चन्द्रबाला दांत पीसकर रह गई, एक सर्द आह निकली । और बाहिर निकलते हुये शर्माजीसे कहा—

"शर्माजी ! आप अदालतसे बरी हो गये, परन्तु भगवान्के घरसे बरी नहीं हो सकते । एक अबला बिधवाकी हायसे नहीं बच सकते । यदि आप सचाईको मान लेते तो थोड़ी बदनामी ही होती । मेरी प्राण-रक्षाका पुण्य प्राप्त होता । अब मेरा जीवन न रहेगा । मैं केवल इतना ही कहूँगी कि तीन दिनके अन्दर तुम रेलसे कटकर मर जाओगे ।" शर्माजी खिसियाने से होकर अदालतसे बाहिर तो आ गये, परन्तु दिल जोर-जोरसे धड़कने लगा ।

रातको ही शर्माजीको साधारण ज्वर हो गया । चिन्ताके मारे नींद भी नहीं आई । सुबह ही रेल्वे डाक्टरसे ज्वरकी दवा लाये और सिक रिपोर्ट Seck Report करके अवकाश ग्रहण कर लिया । परन्तु बुखार तेज हो गया । ध्यान आया कि यह चंदोके शापका फल है । मैं चन्दो के पास जाकर अपना अपराध मान लूंगा । और उसके चरणोंमें गिरकर क्षमा मांगूगा । और न्यायालयमें भी अपना अपराध स्वीकार करूंगा ।

स्कूल और मकान दोनों जगह ढूंढने पर भी चंद्रबालाका कुछ पता नहीं चला कि वह कहां है । शर्माजी लाचार होकर लौट आये । पापोंका फल प्राप्त होनेपर मानव उनसे बचनेका उपाय ढूंढता है । शर्माजी इसी चितामें रहने लगे । तीसरे दिन शर्माजीको फिर डाक्टरसे दवा लाकर रजिस्टरमें हाजिरी लिखना था । वह हस्पताल जा रहे थे । हस्पताल जानेमें रेल्वे लाइनको पार करना पड़ता था । सीधी सड़क से बहुत चक्कर लगता था ।

शर्माजीका शरीर ज्वरसे पीड़ित था और "दिल अबलाकी हायका शिकार" कुछ घ्यान न दिया । एक इंजन शंटिंग कर रहा था । ड्राइवरने शर्माजीको देखा । परन्तु दूर थे और रेल्वेके अनुभवी कर्मचारी शर्माजीका दिल दिमाग ठिकाने नहीं था । अचानक एक टक्कर लगी और दूर जा पड़े, खून खूनका शोर मच गया । शर्माजीको हस्पताल पहुंचाया गया । वह अन्तिम श्वास ले रहे थे । एक बार आंखें खोलकर देखा और कहा—चंदो ! मुझे क्षमा कर यह तेरी हायका फल है ।

लेखकका पता—खोरी (गुड़गावां]

एक आत्मकथ्यः (पूर्वार्द्ध)

लोक उपेक्षित ग्रह शनि (१)

[ले० श्री बालकृष्ण इन्दोरिया]

[इस लेखमें विद्वान् लेखकने शनि ग्रहके सम्बन्धमें पूरी जानकारी संवाद रूपमें दी है, जो ज्योतिश्शास्त्र जिज्ञासुओंके लिए बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी। शनिके स्वरूप, राशिकी गतिविधि, स्वभाव, गुणधर्म, शुभाशुभ फल और वस्तुमात्र एवं राष्ट्र पर शनिका जो प्रभाव संहिताग्रन्थों और होराशास्त्रमें लिखा है उन सबका इस लेखमें साहित्यिक भाषामें समन्वय है। —सम्पादक]

और पूरे तीस वर्षोंकी निरन्तर तपश्चर्या को भंग करते हुए शनिदेव स्वयं उपस्थित होकर आचार्य वराहमिहिरसे बोले—'अरे मिहिर! मेरा नाम सुनते ही लोग चौंक जाते हैं और घृणासे मुँह बिचकाने लगते हैं। सभी लोग मुझे अपना शत्रु मानते हैं। इधर तुम एक हो जो इतनी दीर्घ अवधिसे मेरी साधनामें तल्लीन हो। बोलो तुम मेरेसे क्या चाहते हो ? मैं तुम्हारी लगनपूर्वक साधना पर प्रसन्न हूँ।'

आचार्यवर बोले—'देवाधिदेव ! आपके बारेमें हम सबको अत्यल्प ज्ञान है जो लोगोंमें घृणाका आधार बन गया है। मैं तो निष्काम आपकी तपश्चर्यामें लीन था, तथापि एक नम्र निवेदन किए देता हूँ कि कृपा करके आप अपने बारेमें विभिन्न तथ्योंसे मुझे अवगत कराइये। आप तो वृद्ध विद्वान् ब्राह्मण हैं, दास पर कृपा कीजिये न।'

शनिदेव जमुहाई लेते हुए पुनः बोले—'मिहिर ! तुमने यह गूढ़ प्रश्न मेरे सन्मुख रखा है, तुम मेरे परम उपासक हो इसीलिये मैं तुम्हें अपनी आत्मकथाके कुछ गोपनीय पृष्ठ सुनाता हूँ। मेरी कथा सुनकर धैर्य और शान्तिसे विचार करना कि सभी असुन्दर वस्तुयें बुरी होती हैं, क्या ?'

शनिदेव कुछ पृष्ठोंको सन्मुख करते हुए श्रीमुखसे वाचन करते हुए बोले—'जब मेरा अवतरण हुआ तो ब्रह्मचक्रकी क्या स्थिति-परिस्थिति थी इसके लिये 'भृगु-संहिता' के पृष्ठांक ...पर लिखित कुण्डलीचक्रको देखिये। मैंने कुंभ लग्नमें जन्म लिया था। वृषारूढ़ केतु मंगलकी संगतिमें होकर मेरे सर्वाङ्ग सुखों का अन्त कर रहा था। मेरा सुखेश सूर्यके क्षेत्र में पूर्ण रूपसे अस्त था। बुध मेरे कर्क क्षेत्रमें होकर मुझे सर्वदोषी व सर्वविरोधी बना रहा था। सूर्य व शुक्र भी सिंहस्थ होकर मेरे तनको कुरूप बनानेके कारण बने। सूर्य मेरे सप्तम भाव पर स्थित होनेके कारण मैं आजन्म निर्पत्नी रहा और नपुंसक कहा जाता हूँ। मेरा चन्द्र व्ययमें होनेसे, षष्ठभाव पर पूर्ण दृष्टि होनेसे मैं 'शत्रुहन्ता' हूँ। बुध भी इसमें सहयोगी है। गुरु मेरे लग्नमें होनेसे निष्फल है। इसी गुरुके कारण ही मुझे निर्वासन मिला। इस कुण्डलीमें गुरु-चाण्डाल योग है। मेरा मातृईश (शुक्र) पिता (सूर्य) के प्रभावमें ग्रस्त होनेसे वह भी मेरा पोषण न कर सकी और मेरे जन्म लेते ही मुझे निर्जन निर्वासन मिला।'

'मैं देवाधिदेव आदित्य व उनकी प्रेमिका छायादेवीके पाप-संयोगका फल हूं। यही मेरी कुरूपताका कारण है। पितृवरने अपने दुष्पाप-कर्मको आवृत करनेके लिये मुझे तीभ गहन

प्रगाढ़ आवरणोंमें आवृत करके क्रूरता पूर्वक दूरस्थ जलप्लावित निर्जन प्रदेशमें प्रक्षालित कर दिया था । विधाताके भरोसे मैं जीवित तो रह गया, किन्तु मेरे एकांग निष्काम हो गये। दयालु ब्रह्माका मैं उपासक हूं। मैं एक पैरसे लंगड़ा हो गया और पंगुकी तरह चलने फिरनेमें असमर्थ हूं।'

'मेरी गति अति मन्द है। पितृवर जितना मार्ग एक माहमें चलते हैं मैं उतना मार्ग ही ढाई वर्षोंमें चल पाता हूँ, जो मार्ग वे एक वर्षमें पूरा करते हैं उसी मार्गको मैं तीस वर्षोंमें पूरा कर पाता हूँ। मेरा दूरस्थ निर्जन प्रदेश आपकी पृथ्वीसे लगभग अस्सी करोड़ मील है, मैं पितृवरसे साढ़े अठासी करोड़ मील दूर हूँ। मुझे जिन राशियोंका आधिपत्य मिला वह २७०° से ३३०° में मकर-कुम्भका क्षेत्र है । मेरी आकृतिका क्षेत्र ७१५०० मील है । तीन प्रगाढ़ आवरण मुझे आजतक ढके हुए हैं जिन्हें आप लोग 'वलय' कहते हैं । इनकी मोटाई लगभग ४० मील, चौड़ाई लगभग बीस हज़ार मील है । इन्हीं वलयोंके कारण मैं उदास-निस्तेज, सुस्त-फीका दिखाई देता हूँ।'

'पितृवरका दुर्मम क्रूर व्यवहार देखकर मैं अतिशय क्रोधाग्निमें प्रज्वलित होकर विधर्मी हो गया। दूरस्थ प्रदेशसे मेरी क्रूर दृष्टि जब उनपर (सूर्यपर) पड़ी तो वे कोढ़ी हो गये, उनका सारथि अरुण पंगु हो गया, उनके घोड़े अन्धे हो गये । इस स्थितिको तुम सायंकाल देख सकते हो जब पितृवर मेरी दिशा (पश्चिम) में अस्तंगत होते हैं । मेरे इस अधर्म कर्मकी आप चाहे जैसी आलोचना करें मैं तो इसके लिये प्रतिशोध-वृत्तिको ही दोषी मानता हूँ। मेरी गति असमर्थता एवं तमोगुणी आलस्य-वृत्तिको दाद दीजिये कि मैं कुछ और न कर सका अन्यथा इस भीषण प्रतिशोधवृत्तिके फलस्वरूप मुझे 'पितृहन्ता' की संज्ञा मिलती और यह आपकी सृष्टि....... ?'

'मैं भी पूर्वमें उदय होकर पश्चिममें अस्त होता हूं। कालपुरुषकी मैं पिंडलियाँ व घुटने हूँ, मैंने ही कालपुरुषको साध रखा है, चाहे मैं खुद लंगड़ा हूँ । इसी कारणसे आपलोग मुझे काल भी कहते हो। आपके पास एक चन्द्रमा है, मेरे पास आठ चन्द्रमा हैं जो आपके चन्द्रमा की तरह प्रकाश देते हैं । यह प्रकाश बहुत धूमिल है। वणिक (शुक्र) की तुला मेरा उच्च स्थान है, सेनापति (मंगल) की मेष मेरा नीचतम स्थान है। मैं '८' की संख्या पर पूर्ण आधिपत्य रखता हूँ।

'मुझे स्वरंग (काला) प्रिय है। मेरे नक्षत्र पुष्य, अनुराधा और उत्तराभाद्रपद है । लोहा मेरी धातु है, कोयला मेरा खनिज। उड़द व तिल मेरा अन्न है, नीलमणी मेरा रत्न है। भैंस-हाथी-कुत्ते मेरे पशु हैं। कौआ-कोयल मेरे पक्षी हैं। मुझे तिक्त (कषाय) रस प्रिय है। संध्याकाल, ऊसर भूमि, शिशिर ऋतु पर मेरा पूर्ण प्रभाव है । मैं स्वयं पोषित हूँ अतः अभिमानी और कठोर वृत्तिका हूँ। तल मेरा प्रिय द्रव है। मैं काला रुक्षकेशी, विस्तृत स्नायु वाला, कृश व जरायुक्त शरीरका, पिंगल व क्रूर आंखो वाला, लम्बे कदका काला-कुरूप वृद्ध ब्राह्मण हूँ। मेरी वाणी कठोर व अभिमानयुक्त है । मैं अपनी दृष्टि सदैव नीचेकी ओर रखता हूँ। भारतीय प्रकाण्ड ज्योतिषी वैद्यनाथने मैसूरसे देखकर मुझे चतुष्पदी बताया और जयदेवने कश्मीरसे अवलोकन करके मुझे पक्षी स्वरूपा कहा था। दोनोंने जिस कोणसे मुझे

देखा वैसा ही बताया है। मैं वस्तुतः चतुष्पद-पक्षी हूँ। मेरा मूलत्रिकोण कुंभका बीस अंश है। मेरे दीप्तांश नौ है। वैडूर्यरत्न, बाणफूल या अलसीके फूल जैसे निर्मल नीलेरंगमें जब मैं प्रकाशित होता हूँ तो आप सबको शुभ फलका दाता होता हूँ। मुझे सभी लोग मारक व अशुभ मानते हैं। पाश्चात्य-ज्योतिषी मुझे 'दुर्दिन लाने वाला' (इविल फेट ब्रिगर) कहते हैं। भारतीय-ज्योतिषियोंने मुझे कोण, यम, अर्कपुत्र छायात्मज, असित, नील, पंगु, काल, दैन्य, मन्द, पापग्रह आदि कहा है।'

'मेरा स्थान स्नायु, कूड़ाकरकट, फटे जीर्ण वस्त्र हैं। रेगिस्तानी जंगल, पर्वत, अज्ञात-घाटियां, गुफा व गह्वर, कब्रस्तान, चर्चका मैदान, कोयले-लोहेकी खदानें, खण्डहर, मैली बदबूदार जगह, कार्यालय आदि मेरे प्रिय स्थान हैं। मेरी दृष्टि अपनी स्थितिसे तीसरे-सातवें-दशवें भाव पर पूर्ण पड़ती है। मेरा आधिपत्य क्षेत्र मकर विषुवत् रेखासे दक्षिणमें २४° से २०° तकमें हैं और कुंभ २०° से १२° तकमें हैं। मेरे द्वारा प्रभावित देश अलबानियां, मेक्सिको, बल्गारिया, स्वीडन, सूडान, जापान और भारतमें पंजाब-बंगालके क्षेत्र, हेम्बर्ग आदि हैं। मेरी दैनिक गति ८ कला ५ विकला है अर्थात् मैं अपनी धूरी पर एक चक्र दश घंटा सोलह मिनटमें पूरा कर लेता हूँ।'

'मुझे किसीसे शत्रुता नहीं है। गहन प्रति-शोधमें मुझे तो पितृवर सूर्य चन्द्रमा व मंगलसे वैर है। मुझे आश्चर्य है कि इससे लोग क्यों चिढ़ते हैं? मैं तो अपने पिता-मौसी व उनके रक्षक (सेनापति) का दुश्चिंतक हूँ। जो इनके कृपापात्र हैं उनको तो मैं निश्चय ही दुःख देता हूँ। अपने सभी प्रयत्नोंसे मैं इनको क्षति पहुंचाना चाहता हूँ। वृष-तुला लग्नके जातकोंको मैं सदैव प्रश्रय देता हूँ क्योंकि पितृवर (सूर्य) मातृवरा (चन्द्र) इनके प्रति उदासीन रहते हैं। स्पष्ट रूपसे समझें कि मैं अपनी वृत्तिके अनुसार आप लोगोंमेंसे अपने परायेका विभाजन करता हूँ। जो लोग सूर्य-चन्द्र-मंगलके कृपापात्र हैं वे मेरे निश्चय ही शत्रु (पराये) हैं, जो इनके द्वारा सताये हुए हैं वे मेरे परमप्रिय (अपने) हैं।'

'मैं उच्चस्थ होने पर जातकके भावानुसार उसे आकस्मिक लाभ दिलाता हूँ। नीचस्थ होने पर अपव्यय, मद्यपान, दुराचारी बनाकर उसी भावका बिगाड़क हो जाता हूँ। स्वगृही होनेपर मैं पराक्रम क्रोध एवं उग्र स्वभावी बनाकर उसे लाभान्वित करता हूँ। मित्रगृही होनेपर मैं व्यय-पराश्रयी, कुटिल व दुश्चरित्री बना देता हूँ। शत्रुक्षेत्री होने पर अपव्ययी, निरर्थकश्रमी, दुःखी-दरिद्री, आलसी और घोर संकटोंका दाता होता हूँ।'

'मेरा पृथ्वी तत्त्वका चर क्षेत्र मकर है और वायु तत्त्वका स्थिर क्षेत्र कुंभ। मैं अस्त होनेके ३८ दिनों बाद उदय होता हूँ उदयके १०५ दिनों बाद वक्री, वक्रीके १३५ दिनों बाद मार्गी, मार्गीके १०५ दिनों बाद पश्चिममें अस्त होता हूँ। यही मेरी गति और उदय-अस्तका रहस्यात्मक तथ्य है। मुझे सप्ताहका अंतिम दिन मिला है यह मेरे नाम पर प्रचलित है। मैं शिशिर ऋतुके कृष्णपक्षमें, वक्री गतिमें, शनिवारको पूर्ण बलवान् होता हूँ। तुला कुंभमें मेरी स्थिति उपयुक्त नहीं है, क्योंकि ये राशियां उत्पातकारक हैं।'

'मेरी प्रकृति गंभीर है अतः मुझे एकान्त-प्रिय है। मेरा व्यक्तित्व गहन अन्तर्मुखी है

अतः मेरे मस्तिष्क व हृदयकी थाह पाना सबके लिये दुष्कर है। मैं वायु प्रधान शीत ग्रह हूं। मेरे मित्रोंकी संख्या अत्यल्प है। मेरेसे प्रभावी जातक आकस्मिक रूपमें आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाते हैं। वे प्रचार-प्रसारसे सर्वथा विरत रहकर कर्मठता पूर्वक कार्यरत रहते हैं। मैं रूखा व कठोर दीखने पर भी मेरा हृदय कोमल किशलयके समान है। सुखदुखकी सर्वांगीण अनुभूतियां जो मेरे जातकोंको होती हैं संभवतः कोई उतना भुक्तभोगी नहीं होता। मेरे जातकों को पैसा प्यारा होता है, अतः धन-संचयकी वृत्तिकी पूर्तिमें वे कठोर परिश्रमी होते हैं। जिस कार्यमें लग जाते हैं भूतकी तरह अथक कार्य करते हैं। खाना-पीना, आमोद-प्रमोद सब कुछ भूल जाते हैं। कार्य ही इनका मनोरंजन होता है, कार्य ही इनकी पूजा।'

'मेरे जातकोंमें व्ययवृत्ति कमजोर व भौतिक तत्त्वकी प्रधानता होती है। मैं स्वयं प्यादा सेवक हूँ अतः मेरे जातक भी सेवाशील होते हैं। मैं व्यसनी हूँ। नियन्त्रण फिसला कि व्यसन बढ़ा, चाहे शराब, भाँग, अफीम, तम्बाखु आदि कुछ भी क्यों न हो। मैं जब शौक बढ़ते देखता हूँ तो व्यसन रूपी अपना घर बना लेता हूँ, फिर तो आलस्य, अकर्मण्यता, शिथिलताको पंजीभूत कर लेता हूँ। मेरे जातक अल्पायुमें ही चतुर, अनुभवी एवं परिस्थितियोंके पारखी हो जाते हैं। मैं मनुष्योंको पहिचाननेकी अद्‌भुत क्षमता इन्हें देता हूँ। मैं संकोची स्वभावका होते हुए भी पराश्रित नहीं हूँ। मेरे अपने भी 'सेल्फमैड मैन' अर्थात् 'स्वनिर्मित व्यक्तित्व' कहलाते हैं। मेरे प्रभावके कुछ व्यक्ति तो अति प्रसिद्ध हुए हैं—जार्ज-बर्नाडशा, जाकिर हुसैन, हैदर अली, राजगोपालाचार्य, माओत्सेतुंग, कार्लमार्क्स आदि।'

'मेरे अधिकतर जातक तेल, लोहे व कोयले के व्यवसायमें, बैंक ब्याजके धन्धेमें, रेल्वे व प्रिंटिंग प्रेसोंमें, भूमि नापनेके विभागमें, भूराजस्व एवं पुलिस विभागमें लगे हुए हैं। क्षय मेरे द्वारा प्रदत्त रोग है। मेरी बृहत्-कल्याणीसे सभी परिचित हैं, इसमें (साढ़ेसाती) मेरी कृपा हो तो सब ग्रहोंके शुभफल मैं अकेला देकर विश्ववन्द्य बना सकता हूँ। यदि मेरी अकृपा हो तो मैं क्या से क्या दिखा सकता हूँ। मेरी लघु-कल्याणी (अढ़ैया) भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं होती। विंशोत्तरी दशाचक्रमें मेरे दशावर्ष उन्नीस हैं। मैं लगभग ३० से ४६ वर्षोंकी वय में अपना पूर्ण प्रभाव देता हूँ। मैं मुक्तिमार्गका प्रवर्तक हूँ। मेरी ही स्थितिको देखकर ज्योतिषी पूर्वजन्मका स्पष्ट आभास पा सकते हैं।'

'मैं प्रसन्न बहुत कम होता हूँ, क्योंकि आडम्बर और कृत्रिमता मेरे सामने नहीं रह पाती। मेरा उपासक लौकिक सुख एवं भौतिक सुविधाओंसे निवृत्त होकर ही मेरी उपासना करता है। मैं प्रसन्न होकर अपनोंको प्रव्रज्यामें अनुरक्त कर देता हूँ। कष्ट निवारणके लिये कुछ भक्तोंने शनि-स्त्रोत्र, मंत्र, जप, दान आदि की व्यवस्था की है। मेरे एक परमभक्तने मुझे प्रसन्न किया था। उसने पंचधातुकी मेरी मूरत बनवाकर गुग्गुल-धूप और शुद्ध तिलतेलका दीपक जलाकर प्रति शनिवारको व्रत करते हुए तेल चुपड़ी रोटियां कुत्तों कौओंको खिलाया करता था। तेलमें तले पदार्थोंको ब्राह्मणों, शनि-द्विजोंमें वितरण करते हुए वह भक्त निम्न मंत्रका जाप किया करता था—

"नीलांजनाभं मिहिरेष्टपुत्रं
गुहेश्वरं पाशभुजङ्गपाणिम् ।
सुरासुराणां भयदं द्विबाहुं
स्मरेत् शनिं मानसपंकजेहम् ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ॥"

इन्हीं पंक्तियोंको सुनाते हुए शनिदेव अन्तर्ध्यान हो गये और आचार्य वराहमिहिर पुनः अपनी साधनामें तल्लीन थे। (क्रमशः)

[पता - किलेके पीछे, चूरु (राजस्थान)

व्यापार वाणी

(कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष)

[ले०— श्री पं० शंकरलाल गौड़ "शंभु कवि" तपस्थली दूरा आगरा]

कार्तिक मास

कार्तिक मासका प्रारंभ ५ अक्तूबर भौमवारको हुआ है। भारतीय फलित ग्रन्थोंमें इसका फल नेष्ट तथा दुर्घटनाओंका सूचक है। इस मासमें पांच मंगलवारोंका होना शुभ नहीं है। यथा :—यत्र मासे महीसूनोर्जायते पंच वासराः । रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभङ्गस्तदा भवेत् ॥" अर्थ स्पष्ट है कि जिस मासमें पांच मंगलवार होते हैं वे पृथ्वी पर रक्तकी नदी बहाते हैं, तथा किसी राष्ट्र कर्णधारके निधनके भी योग बताते हैं ! कार्तिक कृष्णा १ भौमवार के दिन ही तुला राशिपर कविवर महोदयका जाना व्यापार जगत्में ऊँचे भावोंको नीचा गिरा देते हैं। रुई चांदीमें तेजी होकर मंदी होती है। अन्नके भावमें घटाबढ़ी चलती है। शुभग्रहके योगसे मंदा मंदा ही सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। कार्तिक कृष्णा ७ रविवार ता० १० अक्तूबरको इसी सप्ताहमें इसी राशिपर बुध भी अपना अनुभूत नाटकीय परिवर्तन व्यापार संसारमें करते हुए दीखेंगे। तुलाका बुध हमेशा गेहूँ जौ चना गुड़ शक्कर खाण्ड अफीम बारदाना गोलामें तेजीके योग बताता है। चांदी सरसों अलसीमें मंदापन लाता है। प्रजाकष्टसे संत्रस्त विग्रह-विप्लव अधिकांश हुआ करते हैं। एक दिन पश्चात् अर्थात् सोमबारको शुक्रोदय पश्चिममें तथा चित्रा नक्षत्र पर रवि दोनों भय उत्पन्न करने वाले हैं। अतः जनताको चोर डकैतोंसे सतर्क रहना अनिवार्य है। लक्ष्मी पूजन व दीपोत्सव चन्द्रवारको है। जो अशुभ समयका मार्जन करने वाला प्रतीत होता है, कार्तिक मासकी द्वितीया तिथिको चन्द्र दर्शन उत्तर श्रृङ्गसे हो रहा है। जिसका फल शास्त्रोंके अनुसार शुभकारी है, प्रायः वस्तुओंको सम भाव पर ले जाया करता है। कार्तिक शुक्ला ५ रविवारको स्वात्यां रविः रुई में तेजी करते हैं। अन्य वस्तुओंमें घटाबढ़ी, इस दिन कुंभके भौम सर्व प्रकारके अन्न रसादि वस्तुओंमें तेजीके द्योतक हैं। कार्तिक शुक्ला ७ भौमवार ता० २६ को वृश्चिक राशिपर बुध बाजारके रुखको एकदम पलट देते हैं। वृश्चिके शुक्र १० शुक्रवारको व्यापारकी बिगड़ी हुई दशामें फिर सुधार करने वाले सिद्ध होते हैं। कार्तिक शुक्ला १५ भौमवारकी है जो हड़ताल छत्रान्दोलन तथा वायुयान रेल दुर्घटनाओंकी प्रतिपादक है।

मार्गशीर्ष

मार्गशीर्षका आरंभ शुभवारको हुआ है अतः शान्तिका वातावरण बना रहता है। विशाखा रविः धान्य रसकस किराना वस्तुओं पर विशेष तेजी आते ही साथ ही साथ देशमें धार्मिक नेताका निधन या धार्मिकक्षेत्रमें तहलका मचा देता है। १७ नवम्बर मार्गशीर्ष कृष्णा १४ भौमवारको वृश्चिक राशिपर संक्रान्तिका प्रवेश है इस दिन रिक्ता तिथि तथा भौम क्रूर वार भी है अतः खाद्यपदार्थोंमें तेजी आयेगी। मार्गशीर्ष मासकी शुक्ला २ शुक्रवारको चन्द्र दर्शन उत्तर श्रृङ्गसे है जो विशेष तेजीको रोक कर किंचित् मंदा ला देता है। एक दिन पीछे ही मैत्र रविः शीतप्रकोप तथा प्रकृति जन्य उपद्रवके प्रतिपादक हैं। २३ नवम्बर मार्गशीर्ष शुक्ला ५ सोमवारको धनुः राशिपर शुक्र अद्‌भुत फल प्रदर्शित तो करते ही हैं साथ ही साथ जनतामें विद्रोहकी भावना जागृत करते हैं। २६ ता० शुक्रवारको वृश्चिक राशि पर गुरु पश्चिम दिशामें अस्त हो रहे हैं। गिरते हुए भावोंको ऊंचे उठानेकी शक्ति रखते हैं, अतः रसकस किराना वस्तुओंमें घोर तेजी आ जाती है। मार्गशीर्ष शुक्ला १५ गुरुवार की सुख सौख्य तथा शान्तिकारक है। ऐसी पूर्णिमा हमेशा देशके मान सम्मानकी वृद्धि करती है ऐसा भारतीय ग्रन्थोंमें स्पष्ट रूपमें फल देखनेको आया है।

पौष मास

पौष मासका प्रारंभ भी शुक्र शुभवारमें हुआ है अतः मेरे दृष्टिकोणसे कोई विशेष अनिष्टकारी फल प्रतीत नहीं होता। सदा सुभिक्षका ही सूचक है। इस तिथिको ज्येष्ठा रविः रुई कपास ऊनी वस्त्र सूतीवस्त्र गुड़ खाण्ड रसकस पर विशेष तेजी लाते हैं। पौष कृष्णा पंचमी ता० ७ दिसम्बरको वृश्चिक राशि पर बुधदेव वक्रत्व दशामें हैं जो अन्नपर विशेष तेजी करते हैं अतः अमावस्या तक संग्रह करने वालोंको लाभ उठा लेना चाहिए। ऐसा ज्योतिर्विज्ञानानुसार शाश्वत रूपमें हमें स्पष्ट हो रहा है। ग्रहस्थिति धान्य पर तेजी करने वाली सिद्ध होती हैं। १९ दिसम्बर रविवारको चन्द्रदर्शन फिर उत्तर श्रृङ्गसे हो रहा है जो रुईमें प्रथम मंदी आकर तेजी आवे तथा १५ दिनमें गुड़ तेल सरसोंमें अच्छी तेजी आती है, रुई चन्द्रदर्शनसे इस मास विशेष तेजी पकड़ जाती है। पौष शुक्ला १५ तक हमें किसी बलिष्ठ ग्रहका परिवर्तन उदयास्त वक्री मार्गी अतिचार नहीं दीख रहा है। अतः विशेष किसी वस्तुके भाव तेजी मंदीमें नहीं जाते हैं सम भाव ही बना रहता है। पौष शुक्ला १५ शुक्रवारकी है जो जनतामें हर्षोल्लास तथा संकटको दूर करने वाली शान्ति वातावरण उत्पन्न करती है

वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य

[लेखक :—श्री प्रेमचन्द जैन ज्योतिषी]

प्रिय व्यापारी बन्धुओंसे निवेदन है कि आविष्कारकी इस व्यापारिक लाइनको बहुत ही ध्यानसे पढ़े व समझें । यह लायन उन व्यापारियोंके लिये लाभदायक सिद्ध होगी जो, वायदा तिलहन (अलसी, अरण्ड, बिनौला) का काम करते हैं । वैसे लम्बी व्यापारिक लायनमें हाजिर (Stok) में उत्तम मध्यम लागू हो सकेगी । व्यापारी भाई हमारे टिक पोइन्ट (Tik-Point) पर अपना ध्यान एक दम केन्द्रित करके पढ़ें। यदि समझमें न आये तो जबावी पत्र देकर पूछ लें । हमारी ज्योतिष पर आधारित व्यापारिक नई खोज (Discovries) से व्यापारिक लाइन बताई जा रही है। हम निरन्तर खोजमें लगे हुए हैं। यह खोज Dynamics of Plants & Calculation of Plane Trigno-Metry पर आधारित है।

जिस दिनसे हमारा चान्स (Line) शुरु होवे, किसी व्यापारिक भाईका चन्द्रमा उस दिन चौथा, आठवां बारहवां (४,८,१२,) हो, एवं दशा भी खराब चल रही हो, वे व्यापारी भाई उस चान्स (व्यापारिक लायन) में बिल्कुल काम न करें । सब जिम्मेदारियां व्यापारी अपने पर ही समझें ।

५-१०-७१ मंगलवारसे कार्तिक शुरू होता है। यहींसे व्यापारी बन्धु छोटा तेजीका व्यापार शुरु कर दें। वैसे बड़ी लायन व्यापारिक शुरु होगी २९-१०-७१ शुक्रवारसे।

वैज्ञानिक सिद्धान्तसे

(१) ता० २९-१०-१९७१ से २३-११-७१ तक इन २४ दिनोंमें अलसी वायदामें २०)२२) क्विन्टलकी तेजी आ जावेगी । इसी प्रकार हाजिर मालमें तेजी आ जावेगी । फिर भी व्यापारी भाई २९,३०,३१, अक्टूबर ७१ की व्यापारिक लाईन देखकर काम करें। जिधर बाजार चले वैसा काम करे, वैसे यहां तेजी चलेगी। इस चौबीस दिनकी लाइनसे फायदा अवश्य लें। इस लाइन पर काम करने वाले भाई चान्स समाप्त होनेके चार दिन पहले ही व्यापार समाप्त कर दें। यानी १९-११-७१ को, फिर स्वतंत्र दिमागसे बाजारकी लाइन देखते हुए काम करें। यहां पर बेजोड़ घटाबढ़ी चलेंगी ।

(२) यदि ता० २३,२४,२५ नवम्बर ७१ को तेजी रहती है तो समझ लो ८ दिसम्बर से २० दिस. ७१ तक १०,११) क्विन्टलकी तेजी और आवेगी। फिर भी लाइन देखें। क्योंकि हमें भी टिक पाइण्ट देखना है।

(३) ता० ७,८,९,१०,११ दिसम्बर ७१ तेजी रहती है तो २० दिसम्बर ७१ तक ऊंचे भाव होकर आगे जबर्दस्त भयंकर मंदी आवेगी करीब ४०-४५ दिनमें । यदि ७,८,९,१०,११, १२ दिसम्बर मन्दी चल रही हो, तो व्यापारी बन्धु २०-१२-७१ तक मंदीका व्यापार करें। और दिसम्बर ७१ के अन्तिम सप्ताह २५,२६, २७,२८ मंदीकी लाइन प्रतीत होती हो, तो आप भी बाजारके साथ चलते हुए मंदीका व्यापार चालू कर दें।

नोट :- कितनी ही बातें सही क्यों न निकले, व्यापारी बन्धु सदैव बाजारका रुख, राजकीय कारण ध्यानमें रखते हुए ही काम करें। जो व्यापारी भाई चांदी, गुड़की तेजी मंदी पूछना चाहे तो १०-२० वर्ष पुराने भावोंके रिकार्ड क्रम पूर्वक भेजें। क्योंकि इसके बारेमें हमारी कोई जानकारी नहीं है। हमारी तिलहनमें जो खोज चल रही है उसमें अभी थोड़ी सी कमी है, क्योंकि १० पोइन्टमेंसे सिर्फ अभी ७ अगस्त ७१ तक ६-७ पोइन्ट ही मिल सके हैं।

घीके लिये

(१) जो भाव घीके श्रावणमें गिर चुके हैं, वो तेजी वापिस आ सकती है कुंवारसे कार्तिक बदी ८ तक। क्योंकि यहांपर बुध-शुक्र शीघ्री, शनि बक्री है। ता० २९-९-७१ के बढ़े हुए भावोंमें घी बेचें। क्योंकि १३-१०-७१ से १०-१५ दिनमें घीके बाजारोंमें अच्छी मन्दी आ जावेगी। दीपावली त्योहारकी तेजीमें न रहें। क्योंकि हमारे सिद्धान्तसे ग्रहोंकी पोजिशन (Trigno-Metry & Dynamics) से ता० १३-१०-७१ से ३०-११-७१ तक मन्दीमें है।

(२) ५, ६ दिसम्बर १९७१ चार ६ दिन में २५ पैसे किलोकी तेजी आ भी सकती है, नहीं भी परन्तु तेजी चालू होगी ३०-१२-७१ से २५-२-७२ तक वो ही भाव टच होंगे जो कि पहले कुंवारमें हो चुके हैं। यहां पर दो महीनेमें घीमें अच्छी मन्दी आवेगी। तेजी इन तारीखोंके ४-५ के आस पास होगी। वे तारीखें यह हैं – (१) ३०-१२-७१ (२) १८-१-७२ (३) १५-२-७२ ऊँचा भाव होगा २५-२-७२ को कैसे भी ग्रहोंकी पोजिशन इस प्रकार बनेगी। ता० ३०-१२-७१ से २५-२-७२ तक (→Sino—16CoS36) To→(5S Sin55 20CoS 35) फिर बाजारमें ६-३-७२ से १०-१५ दिनमें घीमें गिरावट आ जावेगी।

त्रैमासिक राशिफल विमर्श

[लेखक :—ज्योतिर्विद् आचार्य श्री पं० कैलाशनाथ उपाध्याय]

कार्तिक मासका राशिफल

(ता० ५ अक्तूबरसे २ नवम्बर तक)

मेष

आठवां बृहस्पति बने बनाये कामों में विघ्न उपस्थित करेगा। झगड़े-झंझट और उदर-रोगसे कष्ट होगा। पुराने मित्रोंसे विरोध उत्पन्न होंगे। पत्नीसे झड़प होगी। व्याव-सायिक उन्नतिकी कोई आशा नहीं है। आर्थिक लाभकी दृष्टिसे चतुर्थ सप्ताह कुछ ठीक रहेगा। विद्यार्थियोंका बौद्धिक विकास नहीं हो पायेगा। ता० ५-१२-२१-२३ तथा १ नवम्बर कष्ट-कारक रहेगा।

वृष

आर्थिक लाभकी दृष्टिसे यह मास शुभ है। अपने उद्योग-व्यवसायमें भी तरक्की कर सकते हैं। विशेष व्यय और हानिसे दिमाग कुछ अशान्त रहेगा। फिर भी मनोरंजनके अवसर मिलेंगे। महिलाओंके लिए यह मास हर्ष, उल्लास एवं प्रसन्नताकारक है। इस मास में दूसरा और तीसरा सप्ताह ज्यादा अच्छा है।

मिथुन

व्यवसायमें कुछ परिवर्तनकारी योग है, अतः अपनी पुरुषार्थ शक्तिके अनुसार इस सुयोगसे लाभ उठावें। व्यापारमें कुछ हद तक अधिक धनलाभ भी हो सकता है। घर-परिवारके सुखोंका अभाव बना रहेगा। अनि-यन्त्रित खर्च बढ़ेंगे। ता० ५-८-१६-१८-२६ छोड़कर शेष दिन अच्छे रहेंगे।

कर्क

ता० ६ से शुक्र, ता० १४ से बुध तथा ता० १७ से सूर्य चतुर्थ भावमें पधारकर विघ्नबाधायें उपस्थित करेंगे। घर-परिवाकी अनेक समस्याएं पैदा होंगी। बन्धु-बान्धवों एवं मित्रोंसे विरोध भाव बढ़ेगा। धर्म पर अनास्था तथा बुरे कार्योंमें प्रवृत्ति बढ़ेगी। महिलाओंको पारिवारिक कष्टके साथ-साथ पति सन्तानसे चिढ़ रहेगा। इस मासका तीसरा सप्ताह कुछ अच्छा व्यतीत होगा।

सिंह

व्यापारिक विस्तार एवं साज-सजावटका अच्छा अवसर मिलेगा। समाजमें मान-प्रतिष्ठा, जन-प्रियता, नवीनवस्त्र-वैभव-सम्पत्तिकी प्राप्ति तथा सामान्य मनोकामनायें पूर्ण होंगी। शत्रुओं और शत्रु बाधाओंका शमन होगा। विद्यार्थियोंके लिए मास शुभ है। बुद्धि का विकास होगा। मित्रोंसे सुख प्राप्त होंगे। अक्टूबरका तीसरा सप्ताह भाग्यको चमकाने वाला है।

कन्या

शनि-राहुका त्रिकोण सम्बन्ध आम-दनीके लिए बाधक है, तथा व्यर्थकी परे-शानियां उत्पन्न हो जायेंगी। प्रेम-सम्बन्धमें असफलता, पारिवारिक शोक, धनहानि, स्वा-स्थ्य खराब तथा अपयश भी मिल सकता है। नौकरी वालोंको स्थानान्तरणके भी योग हैं। महिलाओंको शारिरिक दुर्बलता तथा मासिक धर्मकी खराबी रहेगी। ता० ६-१४-१६-२४

चिन्ता एवं परेशानीकारक हैं।

तुला

मासारंभमें बारहवें तथा उसके बाद जन्मस्थ सूर्य कष्टकारक रहेगा। अनावश्यक जोश, क्रोध एवं जल्दबाजीसे कष्ट तथा बना बनाया काम बिगड़ सकता है। आकस्मिक चोरी या बदनामीका सामना करना पड़ेगा। रुपये-पैसेका अभाव तथा सन्तान द्वारा दुख प्राप्त होगा। घरेलू कलह बना रहना स्वाभविक है। ता० ५, ७, १८, २६ छोड़कर अन्य दिनों में सुख प्राप्त होगा।

वृश्चिक

बारहवें सूर्य-बुध-शुक्रका योग ता० १७ के बाद हानिकारक तथा खर्च वढ़ाने वाला है, दुश्मनोंसे भी सतर्क रहें। मानसिक स्थितियोंकी वेदनाएं सतायेंगी। महत्वपूर्ण कार्योंके सम्पादनमें बिघ्नबाधायें आयेंगी। साधारण आमदनीका जरिया बना रहेगा। विद्यार्थियोंको बौद्धिक विकासका मौका मिलेगा महिलाओंका पारिवारिक जीवन दुख और परेशानियोंसे पूर्ण रहेगा। ता० ५-६-११-२०-२६ खराब है, सतर्क रहना जरूरी है।

धनुः

आर्थिक संकटोंका भयंकर रूपसे सामना करना पड़ेगा। दिलोदिमाग काबूमें नहीं रहेगा। कमरतोड़ खर्चका बोझ बढ़ेगा। अष्टम केतुका गुरुसे त्रिकोण सम्बन्ध व्यापारिक परेशानियां उत्पन्न कर रहा हैं, अतः इनकी शान्ति करावें। नौकरी वालोंकी आर्थिक व पारिवारिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। घरेलू झंझटोंसे हृयय कलुषित भी हो सकता है। कटु वाक्य भी सुनने पड़ेंगे। ता० ५-१२-१३-२१-२३ अनिष्टकारी हैं। खर्चाधिक्यसे बचें।

मकर

यह मास प्रत्येक दृष्टिसे शुभ है। सावधानी पूर्वक यदि व्यापारका कार्य करें तो लाभ उठा सकते हैं। पदोन्नति, स्थानान्तरण, छोटीमोटी यात्राएं तथा मनोरंजक कार्य-क्रमोंके अवसर प्राप्त होंगे। मित्रोंसे प्रसन्नता, फालतू खर्चकी वृद्धि, मन एवं धार्मिक आस्थाकी निश्चित ही वृद्धि होनी चाहिये। अक्टूबर मासका प्रथम सप्ताह अशुभ रहेगा।

कुम्भ

दिल बेचैन रहेगा। चारों ओर अन्धकार एवं निराशा ही दिखलाई पड़ेगी। व्यापारिक कामोंमें साधारण लाभ होगा। मासारम्भमें बारहवें मंगलकी युति राहुसे होने जा रही है, अतः शत्रु, रोग, व्ययाधिक्य तथा अपने मानसिक स्थिति पर नियन्त्रण रक्खें, अन्यथा विशेष कष्ट तथा परेशानियोंका सामना करना पड़ेगा। नौकरी, व्यवसाय, परिवार मित्र एवं यात्रा संबंधी न्यूनाधिक मात्रा में कठिनाइयां उपस्थित होंगी।

मीन

ता० १७ से अष्टम भावमें बुध-शुक्रसे सूर्यकी युति ज्यादा कष्टकारक रहेगी। विशेष रूपमें शारीरिक कष्ट प्राप्त होनेकी संभावना है। फिर भी कारोबारकी स्थिति कुछ हद तक सन्तोषजनक रहेगी। बुद्धिका विकास, धनागमन, शुभ संवादकी प्राप्ति, यात्राएं तथा पूजन पाठमें रुचि बढ़ेगी। विद्यार्थियों, महिलाओं तथा व्यापारियोंके लिए यह मास ठीक रहेगा। ता० ३-६-१६-२८ छोड़कर शेष तारीखें सामान्य हैं।

मार्गशीर्ष मासका राशिफल

(ता० ३ नवम्बर से २ दिसम्बर तक)

मेष

मास शुभ है। शान्ति और धैर्य-पूर्वक कार्य करने पर सफलता मिलती रहेगी। व्यापारके किसी अन्य मार्गोंसे धनप्राप्तिकी संभावना है। नौकरी सट्टा तथा जूआसे नुकसान होनेकी संभावना है। आकस्मिक चोरी अथवा अन्य विपत्तिसे कष्ट हो सकता है। खर्चकी स्थिति तगड़ी रहेगी। परिवार वालोंसे विग्रह और विद्रोंह भी हो सकता है। ईश्वर-भजन अवश्य करें। उत्तरार्द्धमें चौथा केतु एवं अष्टम सूर्य शुरुका बुरा प्रभाव पड़ेगा।

वृष

यदि आप सावधानी पूर्वक व्यापर, नौकरी, परिवार और सट्टा, मटकाका कार्य करें तो खर्च करने भरकी आमदनी कर सकते हैं। प्रत्येक कामोंमें साधारण सफलता मिलती रहेगी। शरीर अस्वस्थ होनेकी आशंका है। खर्च पर आप नियन्त्रण रक्खें। इस मासमें व्यापारिक उन्नतिकी कोई सम्भावना नहीं है। महिलाओंको उदरविकारसे कष्ट होगा। छठे स्थानमें नीच राशिका सूर्य जन्मस्थ शनिसे षडष्टक संबंध बना रहा है, यह अधिक नुक्-सानदायक है।

मिथुन

व्यवसायमें उन्नति होगी। रुका हुआ अथवा कर्ज दिया हुआ पैसा वापिस मिलेगा। मित्रोंसे मनोविनोद तथा बड़े लोगोंसे नवीन परिचय होगा। किसी शुभ कार्यमें पैसे अधिक खर्च होनेकी सम्भावना है। विद्यार्थियोंके लिए पढ़ाई-लिखाईका अच्छा अवसर है। इस मासमें ता० ५-१३-१५-२४ छोड़कर शेष तारीखें शुभ हैं।

कर्क

सूर्यका बुरा प्रभाव अपके व्यापार तथा वुद्धि पर पड़ेगा। शनि वक्री होनेसे आमदनी बहुत कम होगी। शत्रु सम्बन्धी वाद-विवाद तथा मुकदमेकी कार्यवाहीमें सतर्कतासे कार्य करें। नौकरी वालोंको उच्चाधिकारियोंसे कटु-शब्द सुनने पड़ेंगे। मान हानि तथा व्यर्थ खर्चका सामना करना पड़ेगा, महिलायें अपने स्वास्थ्य रक्षाकी ओर ध्यान दें, वरना ज्यादा कष्ट होगा। ता० ६-७-१४-२५-३० अशुभ एवं शेष दिन शुभ हैं।

सिंह

व्यापार, नौकरी तथा पराक्रमका विस्तार होगा। कुछ अनायास उन्नति होते-होते रुक जायेगी। अन्य साधनोंसे पैसोंकी प्राप्ति होगी। विद्यार्थियोंका बौद्धिक विकास होगा। शारीरिक बीमारियां दूर होंगी, किन्तु पारि-वारिक कलह एवं कलुषित वातावरणसे आपका मन खिन्न रहेगा। बारहवें केतु तथा चौथे गुरु-सूर्यकी शान्ति उत्तरार्द्धमें करानेसे अनिष्टकारी प्रभाव कम हो जायेगा।

कन्या

आपकी दृष्टि आर्थिक मामलों पर लगी रहेगी। साहस और उत्साह बना रहेगा। चिन्ता और परेशानियोंसे पीछा न छूटेगा। अप्रिय परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करेंगे। वांछित सफलता भी व्यापारादि कार्यों में प्राप्त हो सकती है। महिलाओं और विद्या-र्थियोंको बौद्धिक विकासका अवसर प्राप्त

होगा। दुश्मनोंके मक्रो फरेबसे हमेशा सावधान रहना चाहिये। ता० १०-२१-२८-३० छोड़कर अन्य दिन हितकर हैं।

तुला

नवीन वस्त्र-वैभवकी प्राप्ति होगी। अस्वाभाविक और चिन्ताजनक खर्चसे मुक्त नहीं हो सकेंगे। कारोबार बढ़ेगा, मित्रों अतिथियोंका आगमन होगा, घर-परिवारके सुख मिलते रहेंगे। रुके कामोंकी पूर्ति होगी। दुश्मनों तथा नादान मित्रोंकी घनिष्ठतासे अपमान हो सकता है। व्यापारी वर्ग यात्रादि कार्योंमें अधिक परिश्रम करें तो पूरी सफलता मिलेगी। ता० ५-६-१३-२२-२४ को कोई शुभ कार्य न करें।

वृश्चिक

किसी दर्दनाक समाचारसे हृदयको ठेस पहुँचेगी। एक व्यक्ति गुप्त शत्रुता करेगा, हानि भी हो सकती है। उत्तरार्द्ध में सूर्य-केतुका त्रिकोण संबंध स्वास्थ्यकी दृष्टिसे विशेष हानिकारक है। कलह-विवादके अवसर आयेंगे। कारोबार तथा नौकरी वालोंके सामने कर्जकी चिन्तायें सतायेंगी। विद्यार्थियों और महिलाओंको अपनी स्वास्थ्य रक्षापर अधिक ध्यान देना जरूरी है। 'श्री हरिः शरणम्' मंत्र का खूब जप करें। प्रथम और चतुर्थ सप्ताहमें सावधानी बरतनेकी ज्यादा जरूरत है।

धनुः

यह मास शुभ है। व्यापार बढ़ेगा, बिक्री बढ़ेगी, अन्य किसी मार्गसे भी आमदनी होगी। अचानक धन-हानि या मानहानिके भी योग हैं। मित्र और परिवार वालोंसे झगड़े-झंझट भी हो सकते हैं। पत्नीसे सहयोग और अन्य सुखोंकी प्राप्ति होगी। अष्टम केतु तथा बारहवें सूर्य गुरु खराब हैं। पूजन-पाठ और देवीकी आराधना करनेपर मनोकामनएं पूर्ण हो सकेंगी। तीसरे सप्ताहमें सावधानी रक्खें, खर्च अधिक होग।

मकर

कृष्णपक्षमें मित्रों और प्रियजनोंका समागम होगा। मनोरंजन और भ्रमणके अवसर प्राप्त होंगे। घर-परिवारका सुख और व्यापारादिका विस्तार होगा। यात्रायें होंगी, किन्तु शुक्लपक्षमें किसी अशोभनीय घटनासे मन खिन्न रहेगा। खर्चकी अधिकता एवं दौड़-धूप-चिन्ता बढ़ी चढ़ी रहेगी। महिलाओंके लिए सुखशान्तिमें यह मास बाधक है।

कुम्भ

व्यापारमें तो फायदा कम होगा, मगर रुके हुए पैसोंकी प्राप्ति हो सकती है। कोई निकटका परिचित व्यक्ति धोखा देगा, स्वास्थ्य सन्तोषजनक रहेगा। पूजन-पाठमें रुचि तथा साधु-सन्तोंका दर्शन होगा। कारोबारमें कोई हेर-फेर न करें, वर्ना तकलीफ बढ़ेगी। घर-परिवारके सुख अल्प मात्रामें पाप्त होंगे। अनिद्रा और बुरे स्वप्न अधिक होंगे। कृष्णपक्ष की अपेक्षा शुक्लपक्ष अधिक बेचैनी उत्पन्न करेगा।

मीन

मासारम्भमें अष्टम सूर्य नुकसान कराने वाला है, सावधानीसे कार्य करें। दिमाग काबूमें नहीं रहेगा। स्वास्थ्यमें गड़बड़ी तथा पेचिशके रोगसे कष्ट होगा। घर-बाहरसे झगड़े-झंझट होंगे, परन्तु मामले शीघ्र सुलझ जायेंगे। दिनचर्या अस्त-व्यस्त रहेगी। व्यापार नौकरी वाले आर्थिक संकटोंमें उलझे रहेंगे, खर्चकी

अधिकतासे बचना कठिन है। ता० ६-७-१५-२६-२८ अशुभ हैं। शेष दिन शुभ हैं।

पौष मासका राशिफल

(ता० ३ से ३१ दिसम्बर ७१ तक)

मेष

ता० १० से अष्टममें वक्री बुध खराब है। साथ ही गुरु सूर्य भी बिघ्नबाधाय उपस्थित करेगा। अस्वाभाविक भोग-विलासकी कामना जाग उठेगी। कष्टप्रद खर्च बढ़ेगा। व्यापारिक कामोंमें सावधानीसे काम लेना जरूरी है। दुकानदारीकी व्यवस्थामें कमी रहेगी। दुख-दायक समाचार प्राप्त होंगे। दुःस्वप्नों और अनिद्रासे शरीर पीड़ित रहेगा, इस मासमें ता० ५-६-१६-२४-२६ छोड़कर शेष दिन अच्छे हैं।

वृष

ता० २६ से अष्टम सूर्य आकर शनिसे षडष्टक सम्बन्ध करेगा, यह धनलाभ तथा व्यापारके लिए नुकसानदायक है। अनेक प्रकार के संघर्ष करने पड़ेंगे। व्यवसायकी रूपरेखा बदलनेसे कष्ट होगा। बीमारी, लाचारी, अपव्यय तथा आर्थिक समस्यायें इस मासकी विशेषता है। व्यापारियोंको सतर्क रहना जरूरी है। विद्यार्थियोंका अध्ययन कार्य अवरुद्ध हो जायेगा। शुक्लपक्ष अधिक खराब है।

मिथुन

विशेष परिश्रमसे कार्य करनेपर निश्चित लाभ होगा। सफलता पानेके लिए ता० ९-१४-२३ भाग्योदयकारक है। मेहनतमें रुचि न होगी। नौकरी वालोंको आवश्यक कार्यवश अवकाश लेना पड़ेगा। धार्मिक आस्था से बिगड़ता हुआ प्रत्येक कार्य अनायास बन जायेगा। मनोरंजन-भ्रमण तथा ठाट-बाटके अवसर प्राप्त होंगे। सरकारी उलझनोंसे सावधान रहें। दूसरा-तीसरा सप्ताह व्यापारके लिए हानिकारक है।

कर्क

नौकरी वालोंको यह मास स्थानान्तरण या पदोन्नतिका सूचक है। व्यापारिक दशा पहलेकी तरह चलती रहेगी। व्यापारिक परिवर्तनके योग पाये जाते हैं। लाभदायक यात्राका संयोग बनेगा। अर्थ लाभ होगा। शत्रुलोग परास्त हो जायेंगे। शुभ कामोंमें आपकी रुचि बढ़ेगी। बुरी भावनाओंका अन्त होगा। वायु विकार या विषैले जन्तुसे कष्ट होगा सतर्क रहें। पहले और दूसरे सप्ताहमें सावधानीसे व्यापार करें।

सिंह

कारोबारमें उन्नति होगी। दुश्मन हार मानेंगे। उच्च पुरुषोंकी मुलाकातसे कार्य सिद्ध होगा। रोजी-रोजगारमें मेहनत ज़्यादा करें तो कमानेका अच्छा चान्स है। यश-प्रतिष्ठा तथा प्रारब्धका विस्तार होगा। लोग आपसे खुश रहेंगे। महिलाओंको पारिवारिक झगड़े-झंझट मोल लेने पड़ेंगे। खर्च ज्यादा होगा। प्रथम सप्ताह खराब है। बारहवें केतुसे बचनेके लिए शिवकी आराधना करें।

कन्या

स्वास्थ्यकी दशा मध्यम रहेगी रोजी रोजगारमें अर्थलाभा होगा, किन्तु खर्चकी अधिकता बरकरार रहेगी। कोई नवीन योजना बनावेंगे, लेकिन उसमें सफल नहीं हो सकेंगे। मित्रोंसे मिलकर खुशी होगी। मामले-मुकदमों

में जीतहोनेकी आशा है । विद्यार्थीवर्ग खूब मन लगाकर विद्यार्जन करें तो प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण हो सकेंगे । उत्तरार्द्धमें चौथा सूर्य और भाग्यस्थ वक्री शनि भाग्योदयमें बाधक है। इनकी शान्ति करानेसे कार्य बनेगा ।

तुला

सावधानी पूर्वक कार्य करनेसे आर्थिक लाभका सुयोग मिलेगा । सन्तान तथा स्त्रीकी ओरसे खर्च बढ़ता जायेगा । पुरुषार्थसे काम करें, सफलता मिलती जायेगी । शत्रु परास्त होंगे । स्वास्थ्य सुधरेगा । व्यापारिक कामोंमें खूब तरक्की होगी । मित्रों द्वारा सन्तोषजनक सहयोग मिलेगा । परदेश यात्रा करनेपर कुछ शरीर कष्ट हो सकता है। ता० २-५-७-१५-१६-२१-२२-२६ ज्यादा लाभ-दायक है।

वृश्चिक

इस मासमें लेन-देनके सम्बन्धमें व्यर्थ विवाद बढ़ेगा । अकारण क्रोधकी मात्रा बढ़ेगी । सत्पुरुषोंकी संगतसे बौद्धिक विकास होगा । अरुचिकर भोजन और अनियमित निद्रा से शारीरिक कष्टकी सम्भावना है । शुक्लपक्षमें व्यापारिक दशा सुधर जायेगी, परन्तु अपने लोग हानि पहुंचायेंगे । तीसरा सप्ताह अशुभ है और शनि व्यापारमें बाधक है, अतः हनुमान् जीकी आराधना करें ।

धनुः

आपका मन सदैव अशान्त रहेगा, परन्तु व्यापार नौकरीकी दशा ठीक चलनी चाहिये । ऋणभारसे मुक्ति मिलना असंभव है । पारिवारिक कलह और विवाद कुछ दिनों के लिए शान्त हो जायेगा । उत्साह और बाहु-बल पर विश्वासके साथ संघर्षसे मुकाबला करते रहें तो हार्दिक इच्छायें अवश्य पूरी हो जायेंगी । इस मासमें गुरु बृहस्पतिकी शान्ति करानेसे स्थिति सुधरेगी ।

मकर

इस मासमें सप्तम-अष्टम सूर्य अशुभ फलकारक हैं । व्यापारियोंको अपने व्यापारमें सावधानी रखना जरूरी है । शत्रुओंका उत्पात बढ़ेगा । मानसिक स्थिति काबूमें नहीं रहेगी । महिलायें अपनी स्वास्थ्यरक्षाकी ओर ज्यादा ध्यान दें । विद्यार्थियोंकी पढ़ाई-लिखाई में भी बाधायें उपस्थित हो सकती हैं । ता० ५-६-९-१७ अशुभ रहेगी ।

कुम्भ

पैसे-पैसेके लिए परेशान रहेंगे । "जयश्री जगदम्ब त्राहिमां शरणागतम्" मन्त्रका खूब जप करें तो आर्थिक समस्या हल हो जायेगी । इधर-उधर भटकनेकी आवश्यकता नहीं होगी । व्यापारादि कार्योंमे मन लगाकर कार्य करें तो यथेष्ट सफलता मिलेगी । शुक्ल-पक्षमें स्वास्थ्यकी दृष्टिसे सतर्क रहना आवश्यक है, परेशानीकी हालतमें श्रीशिवजीकी आरा-धनासे संकट दूर हो सकता है ।

मीन

इस मासमें घरेलू चिन्तायें तथा घरकी प्रबलता अधिक रहेगी । व्यापारमें थोड़ी-बहुत सफलता मिलती रहेगी । किसी मित्रकी सहायतासे अर्थ लाभ भी होगा। आमोद-प्रमोद रसिक वार्ताएं तथा मनोरंजनके साधन उपस्थित होंगे । विद्यार्थियोंको सर-दर्द करेगा, तथा महिलाओंका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा । सट्टा-जूआसे बचना अनिवार्य है । सुन्दरकाण्ड रामायणका पाठ करनेसे व्या-पारिक कार्योंमें सफलता मिलेगी, तथा बिगड़ता कार्य बन जायेगा ।

पता—के० २१/= नारायणदीक्षितलेव वाराणसी — १ उ०प्र०]

शुक्र-शनिमें शत्रुता है, मित्रता नहीं

[ले०—श्री पं० हंसराजजी शर्मा कपिल ज्योतिषाचार्य]

महामान्य दैवज्ञोंसे सविनय प्रार्थना है कि परम्परा रुढ़ीवादको त्यागकर तटस्थ दृष्टिसे इस लेखानुसार अनुसन्धान कर इनमें शत्रुता स्वीकार करें, अथवा प्रबल युक्तियुक्त लेखसे शुक्रशनिमें मित्रता सिद्ध करें। इतस्ततः प्रमाण देनेका कष्ट न करें।

रूढ़ीवादके कारण फलित शास्त्रमें असफलता देखनेसे ज्योतिषशास्त्र अश्रद्धेय होता जा रहा है।

त्रुक्रग्रह: सौम्य, सुन्दर, लोकनिय र्न तिज्ञ है जिसके उदय हुए बिना मांगलिक कार्य नहीं किये जाते हैं। यह कामनियोंको किलासिनी बनाने वाला प्रान्तिवाद और रसिक होनेसे देवता और असुरोंमें प्रतिष्ठित होनेके कारण सूर्य चंद्रमाके बाद प्रकाचकतासे प्रतिष्ठित है। अतएव शनिको उसकी सर्वत्र लोकप्रियता और प्रतिष्ठा असह्य होनेसे ईर्ष्या थी। जिसका अर्थ है 'पराभ्युदयासहनाम्' अन्य पुरुषकी उन्नतिको न सहन करा. सर्वथा प्रयत्न करने पर भी शनि-लोकप्रिय और यशको नहीं पा सका। उपहास्यस्पद रह गया। महाकविकाली-दासजी रघुवंश काव्यकी रचना करते समय कह रहा था।

मन्दः कवियशः त्रार्थीगसिष्याभ्युपहास्याम्।
प्रांशुलभ्ये फलेलोभाहु द्वाहुरिव वामनः॥

अर्थात् जैसे 'मन्दः' शनैश्चर 'कवि' (उप्रावा भार्गवः कविः) शुक्रके 'यशः' को प्रार्थी चाहने वाला उपहासका पात्र हो जाता है एवम् मैं भी 'मंद' मन्दबुद्धि 'कवियशः' कवियोंके यशको चाहता हुआ उपहासको पाऊंगा। सदैव ही मित्र वा बन्धुके अभ्युदयसे ईर्ष्या नहीं होती है। प्रभुकी उन्नति नहीं सहन की जा सकती तब वह वैसा होना चाहता है। अतः सिद्ध होता है श्री कालिदासकी दृष्टि में शुक्र और शनि, परस्पर शत्रु हैं। मित्रता नहीं। यथा—

शुक्र	शनि
गौरवर्ण	कृष्णवर्ण
मृदु प्रकृति	पुरुष प्रकृति
अनुरागी	विरोधी
स्पष्टिका कारण	संहारक
सर्वत्रिय	सर्वद्वेषी
सहृदय	विवादी
नीतिज्ञ	सूढ़ मंद
सुखदाता	दुःखप्रद
जल तत्त्व	वायु तत्त्व
स्निग्ध	प्रोक्षक
नम्र स्वभाव	अहंकारी
शुभ	पापी
सौम्य मूर्ति	उग्रमूर्ति
सर्व हितैष	सर्व विद्वेषी
रजतनिधि	लोह-भंडार
भद्र कर्मः	अपघात ऐक्सीडंट कर
आत्मीयता	अहितकर
विद्योन्नति	विद्यावरोधी
बन्धुता	द्वैधीभाव

मित्रकी उन्नति और कीर्तिको सभी चाहते हैं अपना अभ्युदय और यशको प्रत्येक

पुरुष चाहता है। शत्रुसे ईर्ष्या लगी रहती है जैसे दुर्योधन, पाण्डवोंकी कीर्तिको न सहन कर स्वयं वैसा होना चाहता था। शुक्रने असुरोंका गुरु होनेपर भी राजनीतिकार होनेसे शत्रु बृहस्पतिके पुत्र कचको अपने शिष्य असुरोंकी उपेक्षा कर संजीवनी विद्या देदी थी। एवं गुण कर्म-स्वभाव दोनोमें परस्पर प्रतिकूल होनेसे सर्वथा शत्रुता माननीया है। और शनिकी महा दशाके अन्तर्गत शुक्र: के दायकालमें अनिष्ट और दूर यात्रा करनी पड़ती है एवम् शुक्रकी महा-दशान्तर्गत शनि-अनिष्ट विद्रोह और पृथक्ताको देता है। नीति-शास्त्रमें, बन्धु-मित्र-सुहृत्-सखा इन चारों पदोंमें समानता दृष्टिगोचर होनेपर भी अन्तर दिखाया है।

'अद्वैत सहनोबन्धुः—सुहृत् सानुमतस्तथा।
एकक्रियं भवेन्मित्रं समप्राणः सखा स्मृतः॥

बन्धु वह है जो अपने व्यक्तिके जुदे होने को नहीं सहन कर सकता, सुहृत् वह है जो अनुमत हो, मित्र वह है जिन दोनोंका काम एकसा हो, सखा वह है जो एक दूसरेका जीवना-धार हो, जैसे—अर्जुन कृष्ण, पतिपत्नी वायु और अग्नि, 'अग्निसखा शुक्रकी दशामें शनि और शनिकी दशामें शुक्र, अन्तरीय और बाह्य व्याधियोंकी और परिवर्तन भी करते रहते हैं।

अगले अंकमें मंगल शनिकी मित्रता सिद्ध करेंगे।

त्रैमासिक व्यापार दिग्दर्शन

[लेखक :—ज्योतिषरत्न श्री राजारामजैन अर्घकाण्ड-वाचस्पति]

कार्तिक मास

कार्तिक कृष्णा वा शुक्ला १ को सूर्य-चन्द्रपर कुण्डल (घेरा) दिखाई दे तो उ०प्र० राजस्थान पंजाब म०प्र० के व्यापारियोंको देखकर पत्रसे सूचना दे देना उचित होगा। यह योग तेलके बीजोंमें अच्छी तेजी लाता है । आज ता० ५ अक्टोबरको दिनके २ बजे पञ्चक समाप्त होंगे, यदि गत ५ दिनोंमें बराबर तेजी या मन्दा चला होगा तो एक मास तक वही रुख उस वस्तुका रहेगा। आज ता० ५ को सभी वस्तुयें तेज रहनेकी आशा है । ता० ६ की रातको तुलामें शुक्र (तुलांशे गुरु-शुक्र ता० ६ को ढाई बजे तक) तेलके बीज गुड़ खांडमें तेजी, सोना चांदी सर्वधातु अन्नादिको मन्दा करेगा। कृष्णा ४ गुरुवारी क्षय मन्दीकारक । ता० ७ को धनिष्ठा भौम मोटी तेजी-मन्दी करेगा। ता० ८ को सूर्य हर्षल युतिसे महोत्पात, शीत एकदम बढ़ेगा, मार्केटमें तूफानी चाल निकलेगी। आज ही सूर्य बुधकी बहिर्युति १ सप्ताह पूर्वसे तेजी का चमत्कार दिखा चुकेगी। ता० १० को रविवारमें आर्द्रा नक्षत्र नेताओंमें बैर बढ़ावेगा। ता० १२ को सोमवारकी रातमें पुनर्वसु नक्षत्र में नवमी तिथि आ जाने पर पश्चिमोदयी शुक्र द्वितीय मण्डलमें उदित होनेसे महान् वर्षा-कारक सिद्ध होगा। अस्तकी भांति पुन: मेघ-द्वारमें उदय घोर वर्षाकारक चलेगा, किन्तु मनुष्य सुखी, धान्यादि मन्दे करेगा । देवतागण में उदित होनेसे जालन्धर (पंजाब) में उत्पात दुर्भिक्ष, गुजरात कर्नाटकमें खेतीका विनाश, तुलाराशिमें उदित होनेसे, कभी तेजी कभी मन्दा घटाबढ़ी विशेष करेगा । पुनर्वसुमें उदित होनेसे मिष्ठ द्रव्योंका नाश (तेजी) करेगा। तिथि फलसे दुर्भिक्ष, देशोंमें युद्ध भय, मासफल से सभी वस्तुयें मन्दी, किन्तु २३।२४ सितम्बरसे चली लायन बदलेगी । तूफानी तेजी -मन्दा सभी वस्तुओंमें चलेगा । ता० १४ को तुलामें बुध होते ही शुक्र-बुध योग बादल वर्षा वायुवेग या शीत वृद्धि, गुड़ खांडमें मन्दीका झटका, अन्य वस्तुओंमें विचित्र चाल देगा। तुलांशे गुरु-बुध ता० १५ तक वर्षा हो जाने पर तेजी होगी। ता० १७ को सायं ५।४३ बजे रविवारमें श्री सूर्यदेव (गत संक्रान्तिसे चौथे ही बार व नक्षत्रमें रविवारी ३० मुहूर्ती रिक्ता तिथिमें भद्रा संयोगी संक्रान्ति बुध-शुक्रसे युक्त होकर) तुला राशिस्थ होंगे फलत: प्रजामें सुख, सभी वस्तुओं में तेजी लावेंगे। ता० १८ को स्वात्यां बुध मन्दीका झटका भी देगा।

दीपावली सोमवारीका फल

'सोम-शुक्र जो आय दिवाली।
जीवै रंक मरे भंडसाली।"

किन्तु आज मौसम शान्त रहना उत्तम है। वायुवेगसे सायंकाल दीपक बुझने लगें, बादल वर्षा हो तो तेजी। दीपावली वाले दिन जो-जो वस्तुयें तेज या मन्दी रहें वे आगे दो मास तक उसी लायन पर प्राय: चलती है, परीक्षित योग है। कार्तिक कृष्णा ३० मंगलवार ता० १६ अक्टोबर सन् ७१ को तुलाका चन्द्रमा सबेरे ६।४८ पर लगेगा, अमावस्या डेढ़ बजे तक रहेगी, मंगल मकरराशिमें पहलेसे ही चल रहा है इसका फल

यों लिखा है।

"अमावस्यां तुला चन्द्रे मकरे चेन्त्तु भूसुतः।
बिना चक्रं भवेच्चूर्णं वाणिज्यं निष्फलं भवेत्॥

विक्रम संवत् १९९४।२०११।२०२६ के पश्चात् अब यही योग संवत् २०२८ की कार्तिकी अमावसको आकर व्यापारमें निष्फलता अर्थात् व्यापारियोंकी बुद्धि दथावत् लाभ लेनेमें असमर्थ होगी। गुजराती कार्तिक मास (कार्तिक शुक्ला १ से मार्गशीर्ष कृष्णा ३० तक) में ५ बुधवार होनेसे उत्तम फल, अन्न तेलके बीजोंका भाव दुगुना तिगुना चौगुना तक अर्थात् २,३) ४) मन या २०)३०)४०) तक प्रति क्विण्टल तक भावोंके स्तरसे इस कालमें बढ़ना चाहिये। विश्वमें हलचल अथवा भूकम्प भय होगा। शुक्ला १ बुधवारी स्वानुभवसे रुई नया रेशम पाट कालीमिर्च अन्न तेलके बीज गुड़ आलू अदरख सोंठ हल्दी जिमीकन्द प्याज लहसुन साग सब्जी तेज, चांदी सोना संवत् २००८। ११।१४ की भान्ति मन्दे हो सकेंगे,। यहां अन्य योग तेजीके भी हैं अतः बाजारकी चालको देखकर व्यापार करना उचित होगा। किसी आचार्यके मतसे आगे फाल्गुन मासमें अत्यन्त मन्दा होकर तेजी होती है। शुक्ला १ बुधवारी की वृद्धि तुरन्त मन्दा करेगी। २१ अक्टोबरको सायं गुरुवारा ४५ मुहूर्ता उत्तार श्रृंगी चन्द्रोदय सभी वस्तुओंके बढ़े भावोंमें मन्दीका धमाका भी लावेगा। देशी घी भी मन्दा होगा। ता० २४ को मध्यान्हमें १२।१५ बजे कुम्भे भौम होते ही वक्री वृषे शनिसे पारस्परिक दृष्टि योग मन्दीका झटका देकर ६ अप्रैल सन् ४३ की भांति सोनासे मिट्टी पर्यन्त तूफानी तेजीका दौर चला दे तो आश्चर्य नहीं, शेयर्स भी तेज हो सकेंगे। कहीं अनावृष्टि तो कहीं घोर वर्षाका योग दो मास तक चलेगा। राज्य सत्ता पर संकट, महान् दुष्काण्ड, नेताओंका पतन वा अवसान भी सम्भव है। शुक्ला ५ रविवारीको ज्येष्ठा पश्चात् सवेरे ९ बजेसे मूल नक्षत्र संवत् २०२४ की भाँति तेलके बीज दाल अन्न गुड़ खांड रुई नया रेशम पाट कालीमिर्च आदिमें घोर तेजी लावे तो आश्चर्य नहीं। मालवामें ताऊन (प्लेग) दक्षिणमें उत्पात, पूर्वमें विग्रह, गुजरात में खलबली होगी, यह पुरातन आचार्योंके वचन हैं। शुक्ला ८ बुधवारी सभी वस्तुओंमें मन्दीका झटका भी देगी। शुक्ला ९ गुरुवारी गुड़ खांड को तेज करेगी। ता० २७ को पुष्ये केतु आगे रुई रेशम पाट कालीमिर्चको मन्दा कर सकेगा, चांदी सोना तेज होंगे। ता० २८ की रातसे पञ्चकारम्भ पांच दिनमें सीधी तेजी या मन्दी चले तो १ मास तक चला करती है। ३१ अक्टोबरको शीघ्री बृश्चिके शुक्र होते ही शीघ्री गुरुसे योग साथ ही वक्री शनिसे प्रतियोग घोर वर्षा और तेजीकारक है। ता० २८ की रातको पश्चिमोदयी बुध ता० २९ को बादल वर्षा वायुवेग या शीतकी वृद्धि भावोंमें असाधारण घटाबढ़ी, ता० २९ को चली लायन १ नवम्बर को बदल देगा।

२ नवम्बरको वृश्चिके बुध होते ही गुरु-शुक्र बुध योगका वक्री शनिसे प्रतियोग २७ अक्टोबर सन् १९१२ की भांति कहीं-कहीं ओलापात घोर वर्षा, चांदी अन्न तेलके बीजोंको प्रभावित करेगा। रुई नया रेशम पाट कालीमिर्चमें तेजी सम्भव है। शुक्ला १४ के क्षयसे सभी वस्तुयें तेज होंगी, किन्तु आज रुईके साथ की वस्तुयें मन्दी होंगी। कार्तिकी पूर्णिमा मंगलवारी अश्विनी संयोगी एक सप्ताहमें सभी खाद्य बस्तुओंको तेज करेगी। रुई रेशम (नाईलौन टैरेलीन टैरिकाट डैकोरीन) पाट कालीमिर्च ऊनमें तेजीका दौर चलेगा।

मार्गशीर्ष मास

कृष्णा १ बुधवारी (कार्तिक शुक्ला १ बुधवारीमें उल्लिखित वस्तुयें) सभी वस्तुयें तेज करेगी। आज शेयर्स चांदी सोनामें मन्दीका झटका भी होगा। ४ नवम्बरको गुरु-राहु त्रिरेकादशसे तेजी, साथ ही अनुभे बुधके साथ में गुरु-शुक्र भी इसी ही नक्षत्रमें ता० ७ तक हिन्द व्यापी वर्षा सम्भव, ता० ६ को २।४३ बजेसे कन्यांशे शुक्र-बुध कल तक बादल वर्षा करेंगे। कृष्णा ४ शनिवारी गुड़ खांडमें मन्दा करेगी। ता० ७ को ज्येष्ठामें गुरु ता० ८ की रातसे तुलांशे शुक्र-बुध ता० १० की शाम तक बादल वर्षा, ता० १० को बुधाष्टमी मन्दीका झटका देगी। ता० १०।११ को ब्रह्मऐन्द्र योग दोनों दिन एक ही चाल तेजी मन्दीकी रहे तो २६ दिन तक सीधी चलेगी। ता० ११ से वृश्चिकांशे शुक्र-बुध कल तक वर्षा कहीं-कहीं होगी। कृष्णा ९ गुरुवारी गुड़खांड तेज करेगी। ता० १३ को सवेरे ज्येष्ठा नक्षत्र में शुक्र सायं ज्येष्ठा नक्षत्रमें बुध यहां गुरु-शुक्र-बुधकी ज्येष्ठा नक्षत्रमें त्रिपुटी तीनों धनुर्ववांशमें चलने से बादल वर्षाका चमत्कार हिन्द व्यापी हो जानेकी आशा है। किन्तु कृष्णा ११ शनिवारी वर्षानाशक भी है। ता० १४ को प्रातः भौम व वक्री शनिका अंशात्मक केन्द्रयोग महान् दुष्काण्ड, गुड़ खांडमें तेजी, अन्य वस्तुओंमें २४।२५ अक्टोबरसे विपरीत चाल भी सम्भव है। आज ही २।४५ बजे गुरु-शुक्रको अंशात्मक युतिसे ओलापात, रातको ६।५४ बजे बुध-गुरु युति भी वर्षाकारक है। ता० १६ को मकरांशे शुक्र-बुध ता० १८ की शाम तक वर्षा होगी। आज ही सायं ५।२५ बजे श्री सूर्यदेव मंगलवार चतुर्दशीको वारात् ३, नक्षत्रात् ३, मुहूर्ता १५ नक्षत्रमें गुरु-शुक्र-बुध-सूर्य योगका वक्री शनिसे प्रतियोग करते हुये वृश्चिक राशिस्थ होंगे। फलतः सभी वस्तुओंकी चलती लायन मासार्ध पश्चात् बदलेगी। १७ नवम्बरको अमावसकी वृद्धि सभी खाद्य वस्तुओंमें तेजी लावेगी। मार्गशीष कृष्णामें तिथि वृद्धि कहीं युद्ध होनेकी सूचना देती है। सारांशतः २४ अक्टोबरसे नवम्बर मासके अन्त तक उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० के अतिरिक्त हिन्द व्यापी वर्षा होनेके प्रबल योग हैं, जो अधिक वर्षा होनेपर तेजी करेंगे। साथ ही सभी योगों पर शनि भौम केन्द्र योग विजयी होकर वर्षा नाश भी कर सकेगा। किन्तु वर्षा न हो ऐसी आशा बहुत कम है। १९ नवम्बरको शुक्रवारमें सायं १५ मुहूर्ता उत्तर श्रृङ्गी चन्द्रोदय रुई पाट नया रेशम चांदी-सोना तेज करेगा। ता० २४ को धनुषि शुक्र सायं ६।४७ बजे धनुषि बुध होकर शुक्र-बुध योग धनुराशि (अग्निराशि) में होकर मेषांशे शुक्र-बुध ता० २८ तक कभी-कभी कहीं-कहीं वर्षा भी लाने वाला योग है। यहींसे वृश्चिक राशिमें सूर्य-गुरु योग चलेगा जो चांदी सोना सर्वधातुमें तेजी, तेलके बीज गुड़ खांड दाल अन्न ज्वार बाजरा मक्कामें अकल्पित तेजी मन्दी कर देगा। ता० २४ की रातसे पञ्चकारम्भ ५ दिन तक सीधी तेजी या मन्दी चले तो १ मास तक चला करती है। ता० २५ की रातको सवा ग्यारह बजे सूर्य-नेपच्यून युतिसे शीतकी वृद्धि बादल वर्षाका चमत्कार प्रत्यक्ष दिखाई देगा। ता० २६ को सभी वस्तुयें मन्दी होंगी। ता० २७ को शुक्ला १० शनिवारीका क्षय देशी घी को तेज करेगा। आज ही पश्चिमास्तो गुरु अनाचारकी वृद्धि बादल वर्षा वायुवेग शीतवृद्धि, रुई, नया रेशम

पाट कालीमिर्च तेज, खाद्य वस्तुओंमें मन्दा सम्भव, चांदी सोनामें भी कोई चाल निकलेगी। ता० २८ को वक्री शनिकी नेपच्यूनसे प्रतियुति (दृष्टि) से महान् दुष्काण्ड, विश्व पर आर्थिक सङ्कट, किसी देशके सिक्केका अवमूल्यन, मार्केट में खलबली मचा देगा, नेताओंका पतन वा अवसान होगा। ता० ३० को ११।४८ बजे पूभायां भौम घटे भावोंको बढ़ावेगा।

पौष मास

३ दिसम्बरको बुध बक्री ता० ६ की रात को अस्त (शनि-बुध दोनों वक्री) बादल वर्षा वायुवेग शीतवृद्धि। ता० ३ को चली किसी वस्तुकी लायन ता० ७ को बदलेगी, जब कभी दिसम्बर मासमें जाड़ा कम पड़े तो शीतकालमें अच्छी वर्षा होती है। ता० १० को सायं ३।१७ बजे बुधग्रह शुक्रका साथ छोड़कर उलटा चलेगा जो ५।७ दिनमें वर्षा करेगा। वर्षाकालमें महान् वृष्टिकारक बन जाता है। यथा फल :—

उन्मार्ग गमनंकृत्वा यदा शुक्रं त्यजेद्बुधः।
तदा वर्षति पर्जन्यो दिनानि पञ्चसप्त वा॥

यहां वृश्चिक राशिमें गुरु-सूर्य-बुध योग भी वर्षाकारक है, जो मन्दी लाता है, किन्तु अधिक वर्षा हो जाने पर तेजी भी आ सकती है। कृष्णा वा शुक्ला ६।११ को प्रातः पूर्वमें मेघ गर्जना हो तो खेतीका विनाश, धान्यादि तत्काल तेज, केवल पश्चिमी वायु जोरसे चले, किन्तु वर्षा न हो तो भी तेजी आती है। वैसे पौष-मासमें उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० में दक्षिणी वायु चलते ही अच्छी वर्षा होती है। ता० १३ को कुम्भांशे गुरु-बुध ता० १५ तक बादल वर्षा वायुवेग शीतवृद्धि होगी।

ता० १६ को गुरुवारमें सवेरे ८ बजे श्री सूर्यदेव वारात् ३ नक्षत्रात् ३ (३० मुहूर्ता) में शुक्रसे युक्त साथ ही वृश्चिक जलीय राशिमें गुरु-बुध चलेंगे। साथ ही सायं ५।११ बजे जलीय राशि में मीने भौम (गुरु-दृष्ट) गुरु-भौमका राशि परिवर्तन योगसे बादल वर्षा ओलापात, उत्तम वर्षा होनेपर मन्दीका सूत्रपात, किन्तु चांदी सोना सर्वधातु गुड़ खांडमें तेजी ही होगी। कुहिया अमावस शुक्रवारी शुभ, किन्तु ज्येष्ठा नक्षत्र संयोगी ग्रीष्म कालीन उपजको खराब ही कर देगी। जो अगली फसल पर तेजी कर देगी। ता० १७ को चली लायन ता० १८ को बड़े जोर-शोरसे पूर्वोदयी बुध बादल वर्षा वायुवेग शीतवृद्धि करता हुआ एकदम बदल देगा। शुक्ला १ शनिवारी प्रायः तेजी लाया करती है। ता० १८ को मकरे शुक्र होते ही शुक्र-राहुयोग (शनि-शुक्रका राशि परिवर्तन योग) खेतीका विनाश, शेयर्स तेलके बीज गेहूं ज्वार बाजरा मक्का घी चावल दाल अन्नादि तेज, गुड़ खांड चीनी चांदी सोना सर्वधातुको मन्दा करेगा, किन्तु बाजारकी चाल देखकर ही कार्य करें। ता० १७ को चली लायन ता० २३ को मार्गी बुध बदल देगा, बादल वर्षा वायुवेग शीतकी वृद्धि भी करेगा। ता० २०।२१ को मकरे राहु-शुक्र-चन्द्र योग तुअर दाल अन्न तेलके बीज शेयर्स तेज हो सकेंगे। ता० २३ को पूर्वोदयी गुरु ता० २१ को चली लायनको बदल देगा। किन्तु तेजीकी ही आशा करें। अधिकाधिक तेजी-मन्दीकी बहु प्रचलित पुस्तकोंमें पूर्वास्तो गुरु-पश्चिमोदयी गुरु, शनि-भौम तीन ग्रहोंका छपा मिलता है, एक दूसरेकी नकल करते समय अकलसे अभी तक उन लोगोंने काम नहीं लिया कि यह तीनों ग्रह सदैव पश्चिममें ही अस्त और पूर्वमें ही तीनों उदय

हुआ करते हैं। हां बुध-शुक्र ये दो ग्रह पूर्व-पश्चिम दोनों ही दिशामें अस्त और दोनों ही पूर्व-पश्चिममें उदय होते रहते हैं। पूर्वमें अस्त होते समय शीघ्री गतिमें पश्चिममें मन्द गतिसे अस्त होते हैं। शुक्ला ५ बुधवारी शुक्ला ६ को रेवती नक्षत्र गुड़ खांड शक्कर घी तेल सरसों मूंगफली तिलका स्टाक करने वा रखनेकी राय नहीं देता। ता० २२ से पञ्चकारम्भ ५ दिन में मन्दा चले तो १ मास तक सीधा मन्दा, तेजी चले तो १ मास तक सीधी तेजी चला करती है। ता० २२-२३ को बादल वर्षा वायुवेग या शीतकी वृद्धि, रुई नया रेशम पाट कालीमिर्चमें अन्य वस्तुओंके साथ मन्दा ही चले आश्चर्य नहीं। चना दाल अन्न मन्दे होंगे। ता० २८ की रातको शुक्र राहुकी युति, ता० २९ को अच्छा मन्दा सभी वस्तुओंमें लावेगी, सोने से मिट्टी पर्यन्त सभी वस्तुयें मन्दी होंगी। शुक्ला १३ का क्षय देशी घी तेज कर सकेगा। पौषी पूर्णिमा शुक्रवारकी रातको १२ बजे बाद सन् १९७२ का प्रारम्भ होगा। शुक्रसे प्रभावित फैशनेबिल वस्तुयें, वस्त्र, तेल इत्र सैंट बिसात-खानेका सामान मौजा बनियान मन्दे होंगे। दश वर्षीय व्यापारिक नियमसे सन् १९३२।४२।५२।६२ की भांति सन् ७२ में भी सभी वस्तुओंमें सोनासे मिट्टी पर्यन्त अकल्पित मन्दी आजानेकी आशङ्का है। विशेषको तो सर्वज्ञ ही जाने। लाभ हानिका पूर्ण उत्तरदायित्व प्रयोक्ता पर ही रहेगा। आज दिनाङ्क ३० अगस्त ७१ को यह लेख लिखा है।

पता—मैनपुरी उ०प्र०]

बंगला देशके भविष्यका ज्योतिषीय अध्ययन

[लेखक :—श्री पशुपतिनाथ प्रसाद गुप्त, ज्योतिर्विद्]

बंगलादेशकी स्वाधीनताके जनक हैं श्री शेख मुजीबुर्रहमान जिनका शुभ जन्म सन् १९२० ई० की १७वीं मार्चको तामाईपुरा (फरीदपुर जिला)में १० बजकर ३८ मिनिट (रात्रि) में हुआ था, जबकि वृश्चिक लग्नका उदय हो रहा था। साथ ही साथ, चन्द्रमा था कुम्भ-राशिमें, क्योंकि इनका जन्म-नक्षत्र था धनिष्ठा।

विगत २६वीं मार्च, १९७१ ई० से श्री शेख-साहब तथा जनरल श्री याह्याखांके परस्पर सन्धि-वार्ताके विफल होनेके कारणवश दोनों पाकिस्तानों (पूर्वी तथा पश्चिमी) में गृह-युद्ध प्रारम्भ हुए हैं जिनके परिणामस्वरूप आज २२-७-७१ तक पूर्वी-पाकिस्तानमें नर-संहार पराकाष्ठा पर ही पहुँच चुका है।

श्रीशेखसाहब आजकल पश्चिमी पाकिस्तानके हाथों नजरबन्द हैं, तथा निकटभविष्य में ही सैनिक न्यायालयके आधीन इनके अपराधों की जांच होने वाली है। प्रायः सभीके-सभी राष्ट्रवासी इसकी आशंका कर रहे हैं कि श्री शेखसाहबको जनरल याह्याखांके हाथों प्राणदंड तो कहीं भुगतना न पड़े।

ऐसी द्विविधात्मक वस्तु-स्थितिमें हमें ज्योतिष-शास्त्रसे शेखसाहबके निकट-भविष्यमें राजनैतिक दृष्टिकोणका अध्ययन करनेमें पर्याप्त सहायता मिल सकती है।

सम्प्रति, शेख साहबके जीवनाभिनयमें शनिकी महादशामें राहुकी भुक्ति चलित है। वृश्चिकलग्नोत्पन्न होनेके कारणवश शनि है इनका तृतीयेश तथा चतुर्थेश एवं सौभाग्यसे यह शनि इनके जन्मपत्रमें राज्यभाव (दशम-भाव)में अवस्थित होकर चतुर्थभावको पूर्ण दृष्टिसे देख रहा है। चतुर्थभावगत राशि है शनिकी ही स्वमूल त्रिकोणराशि, अर्थात् कुम्भ-राशि। परमानन्दका विषय तो यह है कि शेखसाहबका जन्मकालीन चन्द्रमा इसी मूल त्रिकोणराशि (कुम्भराशि) में संस्थित है। यह सर्वविदित है कि दशवेंभाव (राज्यभाव) से सप्तम भाव होता है चतुर्थभाव जिससे जन-साधारण तथा गणतंत्रका निरूपण होता है। शनिकी इस भाव पर पूर्ण दृष्टि इसकी सम्पुष्टि कर रही है कि याह्याखां तथा भुट्टो मियां यद्यपि शेखसाहबका अन्त करनेके लिए सभी साधन प्रयुक्त करेंगे, लेकिन अन्ततोगत्वा इनकी जीवन रक्षा होकर ही रहेगी। शेखसाहबके जन्मपत्रमें राहु है बारहवें भावमें। बारहवें भावमें स्थित यह राहु इन्हें सभी कष्टों तथा मारक साधनोंसे अन्ततः मुक्त करेगा। आगामी १९७३ ई० की ९वीं जुलाई तक शनिकी महादशामें राहुकी अन्तर्दशा रहेगी।

मेरी समझमें शनि-सरीखे ऋणात्मक ग्रह की महादशामें राहु सरीखे ऋणात्मक ग्रह की अन्तर्दशाका अन्तिम फल धनात्मक तथा अनुकूल ही होगा।

ग्रह गोचरानुसार शेख साहबके जीवनमें विगत २९वीं एप्रिल, १९७१ ई० से शनिकी ढ़ैया चल रही है। शनिकी ढ़ैयामें शेख-साहबको मृत्यु तुल्य कष्टोंका सामना करना पड़ रहा है। लेकिन ढ़ैयैका यह शनि इनके जन्मपत्रमें शुक्रकी वृषराशिमें स्थित है। अतएव शुक्र-सरीखे स्वमित्रकी राशिमें स्थित होनेके

कारणवश शेखसाहबकी सुरक्षा अन्ततोगत्वा होगी ही। इस बंगबन्धुको मुक्ति मिलेगी ही। शनि निस्सन्देह इनकी सुरक्षा करेगा ही।

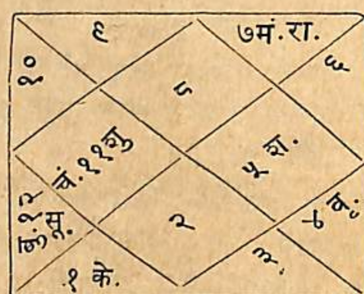
शेखसाहबके जन्मपत्रका सूक्ष्मावलोकन इसकी स्पष्ट अभिव्यंजना कर रहा है कि शेखसाहबका द्वितीयेश तथा पंचमेश अर्थात् बृहस्पति (गुरु) उच्चका होकर इनके नवमभाव (भाग्यभाव) में स्थित है जिससे कि निकटभविष्यमें ही इनके अपूर्व भाग्योदयकी पुष्टि कर रहा है। नवमस्थ गुरुकी पूर्ण दृष्टि इनके लग्नभाव, तृतीयभाव तथा पंचमभाव पर पड़ रही है जिससे शेखसाहबके अखण्ड सौभाग्यका परिचय प्राप्त हो रहा है, जो निकट भविष्यमें ही चरितार्थ होने वाला है। अर्वाचीन ग्रह गोचरानुकूल भी बृहस्पति इनके लग्न भावस्थ होकर इनके अपूर्व राजनैतिक भविष्यके अतिरिक्त इनकी जीवन सुरक्षाका अपार धनात्मक योग प्रकट कर रहा है। विपरीत राजयोगका समावेश सचमुच इसे स्पष्ट कर रहा है कि निकट भविष्यमें ही इन्हें बंगलादेशकी स्वाधीनताके प्रति मान्यता लाभ करनेमें पूर्ण सफलता मिलेगी। इनके कर्म-पथके सारे कंटक तथा विपरीत वातावरण यथाशीघ्र ही दूर होंगें। केतुका षष्ठस्थ होना शत्रुओं पर विजय लाभको ही प्रकट कर रहा है।

इनके जन्मपत्रमें चतुर्थभावस्थ शुक्र तथा चन्द्रमा तो उनके राजनैतिक साफल्यका सुयोग सर्जित कर रहे हैं। इनके पंचमभावमें बुध तथा सूर्यकी युति निश्चित रूपमें बुध-आदित्यसरीखे सुयोगकी रचना कर रही है। इनके समाधार पर शेखसाहबको प्राणदण्डसे सुरक्षा लाभ होगा ही।

मेरा अपना ज्योतिषीय निष्कर्ष है कि आगामी २३वीं अगस्त १९७१ ई० से २३वीं अक्तूबर १९७१ ई० के मध्य ही श्री शेख साहब सुरक्षित रूपसे पश्चिमी पाकिस्तानके चंगुलोंसे निकल आयेंगे। २३वीं जनवरी १९७२ ई० निश्चय ही बंगलादेशकी स्वाधीनता के इतिहासमें चिरस्मरणीय होगी। बंगलादेश में २३वीं जनवरी १९७२ ई० को गणराज्य दिवस बड़ी ही धूमधामसे मनाया जायेगा। इसी वङ्गबन्धु श्री शेख मुजीबुर्रहमानके राष्ट्रपतित्वमें बंगलादेशमें गणराज्य शासन प्रारम्भ हो जायगा।

अब वह समय प्रलम्ब दूर नहीं जबकि इस भूमंडलके अधिकांश राष्ट्र बंगला देशकी स्वाधीनताको मान्यता देंगे तथा शेखसाहबको मृत्युदंडगत होनेसे बचा ही लेंगे।

श्री शेखसाहबकी जन्मकुण्डलीको मैं अवतरित कर अपना यह ज्योतिषीय अध्ययन सहर्ष समाप्त करता हूँ।



पता—
सुडौली बाजार
जि० चम्पारन
(उ० बिहार)



त्रैमासिक व्यापारिक भविष्यफल

[लेखक :—श्री दुर्गा प्रसाद गुप्त साहित्य विशारद, खोरी–गुड़गांवां]

कार्तिक मास

बदी १ मंगलवारी है, इस मासमें रोग अग्नि भय तथा झगड़ोंसे प्रजाको कष्ट होगा। ता० ६ अक्टूबरको तुलाका शुक्र चावल, चांदी, रुई, कपास घी मन्दा करेगा। खेतीमें हानिके कारण अनाज तेज। शालकी लकड़ी बहुत तेज हो जायेगी। बदी ३ का क्षय मूंग मोठ उर्द दाल-अन्न और घी मन्दा करेगा। ता० ९ रुई मन्दी, तिलहन तेज। ता० १० चित्रायां रविः गेहूँ, धान्य जो चणा अरहर कपास सूत कपड़ा लाख चमड़ा तेज, ज्वरका प्रकोप। राजाओंमे विरोध भावना बढ़ेगी। ता० ११ को शुक्रोदय होगा। तीसरे मण्डलमें उदय होनेसे गल्ला खराब होनेकी आशंका। गल्ला बेचना चाहिये। सिंध गुजरातमें खेतीका नाश, रोगोंका उपद्रव। ता० १३ चांदी, सोना, रुई कपास सूत सन मन्दा। वर्षा होगी। कार्तिक बदी १३ शनिवारी उपद्रव एवं दुर्भिक्षकारक है। गल्ला तिलहन बारदाना तेज होगा। त्रयोदशीकी वृद्धि रविवारी आगे जौ, गेहूँ चणा तेज करेगी। रविवारी संक्रांति सोना चांदी, गुड़, खाण्ड तेल हल्दी धनिया जीरा तेज, चावल मकई उर्द मूंग बाजरा मन्दा। इसका प्रभाव २६ अक्टूबर से ५ नवम्बर तक होगा। दीपावली सोमवारी और अमावस्या मंगलवारी है यह अन्न तेज करेगी। सुदी ? बुधवारी है यह सभी खाद्य पदार्थ आलू अदरक प्याज शाक सब्जी भी तेज होगी। २२ की रात्रिको कुम्भे मौमः तेजीकारक हैं। विशाखाका शुक्र रुई, चांदी; चावल सोना सरसोंमें मन्दीके झटके आयेंगे। २६ को विशाखाका बुध रुईमें मन्दीका रियक्शन लायेगा। परन्तु बुध अस्त होनेसे तेजी भी हो सकती है। २८ को बुधोदय, सोना चांदी रुई सूत सन गुड़ गेहूँ मंदा करेगा। बुधका उदय ३६ दिनोंमें हुआ है, अस्तकालमें २३ सितम्बरसे चली हुई लाइन ११ अक्टूबरको पलट जायेगी। ३० अक्टूबर तिलहन पाट बारदाना लोहा जस्ता तेज रहेगा। वृश्चिके शुक्रः सुखशांति कारक है। गल्ला मन्दा, और रुईमे अच्छी मन्दीकी आशा हैं। ३१ को नक्षत्र क्षय गल्ला और रस पदार्थ तेज करेगा। कार्तिकमें शनि बक्री और गुरु अतिचारी होनेसे युद्धकी अशंका रहेगी।

मार्गशीर्ष मास

बुधवारी प्रतिपदा हर एक मासमें तेजी कारक होती है। आज रुई मन्दी और शेयर्स तेज रहेंगे। ५ नवम्बर शत भौम शांतिकारक है। गेहूँ, अलसी, गुड़ मसूर लालमिर्च आदि लाल रंगके पदार्थ मन्दे होंगे। ६ तारीख विशाखाका सूर्य सोना चांदी रुई सूत तेज करेगा। दक्षिणी इलाकोंमें हुल्लड़बाजी होगी। ता० १० बुधाष्टमी मन्दीकारक है। १३ को बुध गुरु शुक्र युति वर्षाकारक है। एकादशी शनिबारी है अतः वर्षाकी कमी और प्रजाको कष्ट तथा किसी राज्यमें मंत्रीमण्डल भी भंग हो सकता है। ता० १५ को रुई कपास सूत सन कपड़ा मन्दा रहेगा। १६ को वृश्चिक संक्रांति है। तीसरे वारमें होनेसे तेजी करेगी। गन्नेकी उपज उत्तम होगी। गुड़ खाण्ड मन्दा

कपड़ेके व्यापारियोंको लाभदायक। नारियलके व्यापारमें लाभ। १३ से २३ नवम्बर तक बुध सूरज गुरु शुक्र का राशि योग रहेगा। इस योग में धूल उड़ा करती हैं, अमावस्याकी वृद्धि मन्दी कारक है। रुई कपास मन्दी। युद्ध चर्चा चलेगी ता० १९ अनुराधायां रविः सोना चांदी मन्दा करेगा। गल्ला और रुई तेज।

शनिवारा चंद्रोदय एक मास में अनाज तेज और किसी राज्यमें मन्त्री-मण्डल भंग करेगा। २१ को सोना, चांदी, रुई तिल तेल खाण्ड मंदी रहेगी। २३ को धनुषि शुक्रः खेतीमें हानि, अन्न तेज, सोना चांदी रुई कपासकी आमद कम होनेसे तेजी आ सकती है। प्रजामें संगठन शक्ति बढ़ेगी। यहां कालयोग समाप्त हो जायेगा। २४ को बुधशुक्र युति जूटपाट बारदाना मंदा करेगी। २९ को गुरु अस्त होगा। भ्रष्टाचार बढ़ेगा। एक मास तक रुई मन्दी और गल्ला तेज रहेगा। सुदी १० का क्षय घीमें तेजी कारक है। सुदी ११ रविवारी है। रुई कपासका स्टाक बैशाखमें लाभ देगा। यह एक चांस है। २९ को पू०भा० का भौम रुई, सरसों, अलसी, मूंगफली, खोपरा, सोना चांदी ताम्बा तेज करेगा। १ दिसम्बरको कृत्तिका क्षय, रुई मन्दी, गुरुवारी अमावस्या मन्दीकारक है। परन्तु रोहिणी नक्षत्र आगे तेजी करेगा। आज ही बुध वक्री होगा रसकस तेज और गल्ला मन्दा। मंगसिर मासमें घीका भाव तेज रहेगा। गत मासकी भांति इस मासमें भी शनि वक्री और गुरु अतिचारी रहेगा।

पौष मास

इस मासमें पांच शुक्रवार होनेसे प्रजामें सुख शांति रहेगी। वदी २ गल्ला जूट बारदाना तिलहन तेज। वदी ४ का क्षय मूंग उर्द अरहर दाल अन्न तथा घी मन्दा करेगा। तीन दिन तक हर एक वस्तुमें मन्दीका झटका आएगा। ता० ९ बुध अस्त होकर गल्ला-सोना, चांदी ताम्बा रुई कपास तेज करेगा। ता० १० ज्येष्ठा का बुध गन्ना, चावल, घी तेल आदि रस पदार्थ तेज होंगे। वदी नौमी शनिवारी है। ता० २१ जून सन ७२ तक (सूर्य आर्द्रा प्रवेश तक) गल्ला संग्रह करके लाभ उठाते रहें। ता० १३ बाजार मन्दीमें चलेगा। १५ को उ०षा० का शुक्र रुई मन्दी करेगा। ता० १६ धनुः संक्रांति गुरुवारी मन्दीकारक है। तीसरे वारमें होनेसे तेजी करेगी। ओलोंसे खेतीमें हानि हो सकती है। चावल तेज, जौ, गेहूँ चना मटर मन्दा। मंगल मीनपर जानेसे घास चारा लकड़ी पशु तेज होंगे। अमावस्या शुक्रवारी मन्दा करेगी। परन्तु मूल नक्षत्र होनेसे संवत्का एक स्तम्भ कमजोर हो गया है। ज्येष्ठा उपरांत साढ़े आठ घड़ी मूलकी स्थिति आभासमात्र है। तेजीमें कुछ रोक लग जायेगी। शुक्रका मकर प्रवेश खेतीमें हानि करेगा। सरदी बढ़ेगी। घी तेल खांड गुड़ गेहूँमें अच्छी तेजीकी आशा है।

सुदी एकमको बुधका उदय अनावृष्टि दुर्भिक्ष और गायोंमें रोग करेगा। ता० १९ का चंद्रोदय नमक चावल चांदी मन्दी करेगा। ता० २० तिल, मूंगफली तेल रुई कपास सूत, सोना चांदी कांसी पीतलके बर्तन मन्दे रहेंगे। २२ की रात्रिको गुरुदेव उदय होंगे। वृश्चिकस्थ गुरुका उदय दुर्भिक्षकारक होता है। २३ को बाजारकी लाइन वदल जायेगी। २५ दिसम्बरको सीसा जस्ता, लोहा पाट बारदाना तिलहन तेल साबुन तेज। रुई, कपास, सूत कपड़ा मन्दा। २९ को पूषायां रविः तिल तैल गुड़ गूगल हल्दी लाख चपड़ा सन चांदीमें तेजी, रुई मन्दी

होगी। त्रयोदशीका क्षय घी तेज करेगा। पूर्णिमा शुक्रवारी मन्दीकारक है, परन्तु मृगशिर और आर्द्रा नक्षत्र आगे तेजी करेंगे। पौष शुक्लपक्षमें भी घी तैल तेज रहेगा।

शकुन विचार

कार्तिक मास

कार्तिक आर्द्रा वार रवि राजा युद्ध बिरोध।
रोहिणीको रविवार तो वर्षाका अवरोध॥
कातिक पड़वाको रहै सूरजके परिवेष।
सरसों अलसी तेल तिल, मँहगे बिके विशेष॥
कातिक कृष्णा त्रयोदशी जो आवै रविवार।
तो जौ गेहूँमें चलै तेजी बारम्बार॥

मार्गशीर्ष

मंगसिर लागत सप्तमी ना बादल ना गाज।
तो आगे वैशाखमें मन्दा रहै अनाज॥
बादलमें सूरज उगै मावस मंगशिर मास।
अन्न उपज कमती रहै मँहगा चारा घास॥

पौष

पौष वदी नवमी दिवस पूरब बादल गाज।
खेती नासै तेज हो चारा और अनाज॥
पड़वा दोयज पौष सुदि बादल बिजली देख।
वर्षासे खेती बढ़ै उपजै अन्न विशेष॥

पेटकी गैस और आंखके फ्लूकी अनुभूत चिकित्सा

[लेखक :—श्री डा० अमरनाथ जैन, मालरोड़ सोलन हि०प्र०]

मनुष्योंकी अपेक्षा पशु रोगग्रस्त कम होते हैं, कारण—मनुष्य, भोजन स्वास्थ्यके लिये नहीं अपितु स्वादके लिये खाता है और अन्य प्राणी स्वस्थ और जीवित रहनेके लिये खाते हैं, (होमियोपैथिक चिकित्सारत्न फुटनोट पृष्ठ ८८)।

चल रहे युगमें अधिक प्रतिशत मनुष्य पेटकी बिमारियोंमें उलझे हुए हैं। इस रोग पर ध्यान देते हुए अपने पाठकोंका ध्यान आकर्षित करता हूँ—चिकित्साके समय और कहीं भी दो चार व्यक्ति मिल बैठे हों तो उनमें अक्सर यही बात चल निकलती है कि—"मेरे पेटमें गैस बहुत बनती है, बहुत दवाइयां खाई हैं, न तो हाजमा ठीक होता है और नाहीं गैसका बनना बन्द होता है।" इत्यादि। इसी विचारको लक्ष्यमें रखते हुए मैंने अपनी पुस्तक होमियो० चि०र० पृष्ठ १३६ के फुटनोटमें लिखा है :—पाकाशय, यकृत और वायु (गैस) के रोगीको अम्लरस (एसिड) पैदा करने वाला भोजन अहितकर हुआ करता है।

पाठकोंके हितके लिये इस रोगमें जो-जो होमियोपैथिक और बायोकैमिक औषधियां अनुभवमें पूर्ण उतरी हैं उनके नाम यहां पोटैन्सी सहित लिखे जा रहे हैं। चारसे छः मात्रा प्रतिदिन रोग निर्मूल होने तक प्रयोग करके लाभ उठावें। कल्केरिया कार्ब ३०, लाईकोपोडियम ३०, नक्सवोमिका ३०, सल्फर ३०, नैट्रमफारस ६×, (विवरणके लिये "होमियोपैथिक चिकित्सारत्न" देखिये)

आंखका फ्लू—इस नये रोगके लिये होमियोपैथिक चिकित्सासे लाभ उठाना हो तो यूफेशिया ६ या ३० की चार-चार मात्रा प्रतिदिन लीजिये। यदि आंखमें लाली अधिक हो तो दिनमें उक्त दवाई प्रयोगके साथ बारीबारी से बैलेडोना ३० प्रयोग कीजिये, अवश्य लाभ होगा।

श्रीदुर्गा शप्तशती विषयक कुछ प्रश्न

[ले० – श्री अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव]

दर्शनकी प्रतिष्ठा और परवर्ती कालमें इस्लामके व्यापक प्रचारके परिणामस्वरूप जब कर्मकाण्ड, यज्ञयागादिके प्रति लोगोंकी आस्थामें न्यूनता आने लगी तो पण्डितों और पुरोहितोंने पौरोहित्य कार्यकी पुनः प्रतिष्ठाके उद्देश्यसे अनेक ग्रन्थोंके साथ माहात्म्य प्रकरण जोड़ दिया तथा अनेक स्वतन्त्र माहात्म्य ग्रन्थोंकी रचना की। सत्यनारायण व्रत कथा तथा अन्य पर्व-कथायें इसका प्रमाण है। वस्तुतः इन कथा-ग्रन्थोंमें केवल व्रतमाहात्म्य ही लिखा गया है। इस प्रवृत्तिका एक अन्य परिणाम यह भी हुआ कि यदि कोई पूर्व प्रचलित ग्रन्थ जनतामें पहलेसे प्रतिष्ठित हो चुका था तो परवर्ती ग्रन्थको उसी के अनुरूप प्रतिष्ठा प्रदान करनेके उद्देश्यसे उसमें तदनुरूप श्लोक अथवा माहात्म्य जोड़ा गया। दुर्गा सप्तशती और श्रीमद्भगवद्गीताके सम्बन्ध में भी कुछ ऐसा ही हुआ प्रतीत होता है। इसी सन्दर्भमें तथा कतिपय अन्य विशिष्टआधार पर यहां दुर्गा सप्तशतीके सम्बन्धमें ही कुछ प्रश्न दिये जा रहे हैं। विश्वाश है विद्वज्जन इन पर विचार कर समाधान प्रस्तुत करनेकी कृपा करेंगे।

१ दुर्गासप्तशती तथा श्रीमद्भगवद्गीताके अनेक श्लोकोंमें भाव साम्य स्पष्ट है। सप्तशती और गीताकी क्रमशः मन्त्र संख्या तथा श्लोक संख्या भी समान अर्थात् सात-सौ है। अनुमान किया जा सकता है कि दोनोंमेंसे किसी एक ने दूसरेका आधार अवश्य ग्रहण किया होगा। किन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि किसने किसका आधार ग्रहण किया है।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि रचना-काल की दृष्टि से मार्कण्डेय पुराण सबसे प्राचीन माना जाता है। कथाकी दृष्टिसे भी दुर्गा-सप्तशती मार्कण्डेय-पुराणका ही एक अंश है में स्वारोचिष् मन्वन्तरकी कथा है जबकि गीताकी कथावस्तु उसके बहुत पश्चात् की है। इस दृष्टिसे भगवद्गीताकी रचनामें दुर्गा सप्तशतीका आधार ग्रहण किया गया होगा, यह अनुमान लगाया जा सकता है।

जहां तक मन्त्र संख्या और श्लोक संख्या का प्रश्न है, इस सम्बन्धमें उल्लेख्य है कि महाभारत-भीष्मपर्वके तैंतालीसवें अध्यायमें गीता माहात्म्यके साथ निम्नलिखित श्लोक प्राप्त होता है:—

'षट्-शतानि सविंशानि श्लोकानि प्राह केशवः। अर्जुनः सप्तपञ्चाशत् सप्त-षष्टिं तु संजयः॥ धृतराष्ट्रः श्लोकमेकं गीतायाः मान मुच्यते।"

उपर्युक्त प्रमाणके आधार पर श्रीमद्भगवद्गीतामें सात सौ पैंतालीस श्लोक लिखे गये थे। प्राप्त सन्दर्भोंके अनुसार मुगल सम्राट अकबरके समयमें अबुल फजल और फैजीने तथा उसी समयके लगभग एक अन्य मुसलमान विद्वान् शाह अलीने श्रीमद्भगवद्गीताका अनुवाद किया था। इन विद्वानोंके अनुवादों में भी गीताके सात सौ पैंतालीस श्लोक ही दिये गये हैं, ऐसा कहा जाता है। इस प्रकार यह माना जा सकता है कि शङ्कर प्रभृति आचार्योंने दुर्गा सप्तशतीका आधार लेकर

गीताके मूल सात सौ पैंतालीस श्लोकोंमें से पैंतालीस कमकर सात सौ श्लोकोंका निर्धारण किया। इस प्रकार गीताकी श्लोक संख्या का आधार सप्तशती ही है।

२ दूसरा प्रश्न स्वयं सप्तशतीकी मन्त्र संख्या के सम्बन्धमें है। सात सौ मन्त्र संख्या निर्धारित करनेका आधार क्या हो सकता है, यह स्पष्ट नहीं। कात्यायनीतन्त्र तथा अन्य प्रचलित मतोंके अनुसार पाठभेद एवम् न्यूनाधिक श्लोकोंके होते हुये भी मन्त्र संख्या सात सौ ही किस आधार पर निर्धारित की गयी है? यद्यपि 'सप्तशती' स्वयं एक 'मालामन्त्र' के रूपमें प्रतिष्ठित है, तथापि सातसौकी गणना पूरी करनेके लिये 'मार्कण्डेय उवाच,' 'वैश्य उवाच,' 'राजोवाच' 'ऋषिरुवाच' की भी गणना मन्त्रोंमें की गई। यदि 'उवाच' को भी मन्त्र रूपमें स्वीकार किया जाता है तो इसका विनियोग, छन्द ऋषि देवता क्या हो सकते हैं? चतुर्थ अध्यायके तीसरे मन्त्रके पूर्व प्रयुक्त 'देवा ऊचुः' की गणना मन्त्रोंमें नहीं की गयी, किन्तु इसी अध्यायमें ही 'देवाऊचुः' को ही तेंतीसवें मन्त्र रूपमें स्वीकृत किया गया है। यदि 'देवा ऊचुः' मन्त्र स्वरूप है तो दोनों स्थानों पर इसे उसी रूपमें स्वीकार क्यों नहीं किया गया? इस प्रकार सप्तशतीकी मन्त्र संख्या का निर्धारण एवं उनके स्वरूपका निश्चयीकरण एक अत्यन्त जटिल प्रश्न बन जाता है।

३ सुरथ राजा, समाधि वैश्य और मेधा ऋषि का वर्णन अन्य किन पुराणोंमें उपलब्ध होता है? सामान्यतया पुराण कथायें परस्पर इतनी अधिक संश्लिष्ट हैं कि किसीभी कथा को न्यूनाधिक अंशमें प्रायः समस्त पुराणोंमें देखा जाता है। फिर भी सुरथ और समाधि की कथाको अन्य पुराणोंमें क्यों नहीं दिया गया?

४ सप्तशतीके पात्र किस सीमा तक ऐतिहासिक हैं? मैसूर राज्यमें प्रचलित विश्वासके अनुसार महिषासुर उसी भूखण्डका अधिपति रहा है। क्या इसी प्रकारके विश्वास अथवा जन-श्रुतियां शुम्भ, निशुम्भ आदि अन्य असुरोंके सम्बन्धमें प्रचलित हैं? इन सबका कोई ऐतिहासिक स्वरूप भी है अथवा यह सब पात्र काल्पनिक हैं?

५ दुर्गा सप्तशतीके मार्कण्डेय पुराणसे अलग हो कर स्वतन्त्र स्तोत्र-ग्रन्थके रूपमें प्रतिष्ठित होनेका समय क्या हो सकता है? इसको इस रूपमें प्रतिष्ठित करनेका श्रेय किस आचार्य को दिया जा सकता है?

सप्तशतीके सम्बन्धमें और भी अनेक प्रश्न हैं। किन्तु उनका विषय सर्वथा भिन्न होनेके कारण उनका उल्लेख यहां नहीं किया जा रहा। भास्करराय, शन्तनु, नागोजी भट्ट, गोपाल तथा श्रीधर प्रभृति आचार्योंने सप्तशती पर अपने भाष्योंकी रचना की है। इन भाष्यकारोंके समयका भी निर्धारण नहीं हो सका है।

यदि विद्वज्जन उपर्युक्त प्रश्नों पर विचार कर 'ज्योतिष्मती'के माध्यमसे अथवा वैयक्तिक पत्र-व्यवहार द्वारा समाधान करनेकी-कृपा करेंगे तो यह उनका विशेष अनुग्रह होगा। ।

लेखकका पता—४८/२८ टी.टी. नगर
भोपाल (म०प्र०)

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजय-पञ्चांग' से]

अक्टूबर १९७१ ई०

ता० ४ सोमवार– शरद् पूर्णिमा सत्यव्रत ।
५ मंगलवार शबरात (मुस्लिम त्योहार)
७ गुरुवार श्रीगणेश४ (करवा चौथ) व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० रात्रि ७।५८
११ सोमवार अहोई ८ व्रत ।
१४ गुरुवार–रमा एकादशी व्रत
१५ शुक्रवार–गोवत्सा, १२ निम्बार्क ११ व्रत
१६ शनिवार–प्रदोषव्रत धनतेरस, श्रीधन्वन्ततरि जयन्ती ।
१७ रविवार–नरकहरा रूप १४, तुलामें सूर्य संक्रांति पुण्यकाल ११।१९ उप.
१८ सोमवार–दीपमाला, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, श्रीमहावीर निर्वाणदिन, ।
१९ मंगलवार –अन्नकूट, गोवर्द्धन पूजा, बलीपूजन ।
२१ गुरुवार–यम २ भय्या दूज, चन्द्रदर्शन मु० ४५ विश्वकर्मा जयन्ती ।
२४ रविवार–पांडव५ ज्ञानपंचमी ।
२७ बुधवार गोपाष्टमी ।
२८ गुरुवार – आमला ९ कूष्माण्ड नवमी ।
३० शनिवार-प्रवोधिनी एकादशीव्रत भीष्मपंचकारंभ, चातुर्मासव्रत समाप्त ।
३१ रविवार–प्रदोषव्रत ।

नवम्बर १९७१ ई०

ता० १ सोमवार वैकुण्ठ चतुर्दशी
२ मंगलवार सत्यव्रत कार्तिकी पूर्णिमा मेला पुष्कर राज, रेणुकातीर्थ, गढगंगा, भीष्मपंचक समाप्त । जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य जयन्ती, श्रीनानक जयन्ती ।
५ शुक्रवार श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय- स्टे० टा० रात्रि ७।३६
९ मंगलवार–श्रीमहाकाल भैरवाष्टमी ।
१३ शनिवार–उत्पन्ना एकादशी व्रत ।
१४ रविवार–बालदिवस-जन्मदिन- श्री जवाहरलाल नेहरू ।
१५ सोमवार–सोमप्रदोष व्रत ।
१६ मंगलवार –वृश्चिकमें सूर्य संक्रान्ति, मेला पुरमंडल देविका स्नान जम्मू काश्मीर ।
१७ बुधवार – ला० लाजपतराय निधनदिवस अमावस्या ।
२० शनिवार–चन्द्रदर्शन मु० ३०
२१ रविवार ईदुलफितर (ईद)
२३ मंगलवार श्री गुरुतेगबहादुर बलिदान
२४ बुधवार–स्कन्दषष्ठी, चम्पा ६
२८ रविवार–मोक्षदा ११ व्रत श्रीगीता ज.
३० मंगलवार -भौमप्रदोष व्रत ।

दिसम्बर १९७१ ई०

ता० १ बुधवार सत्यव्रत श्रीदत्तजन्यती त्रिपुर- भैरवी जयन्ती ।
५ रविवार – श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय ८।२५
१२ रविवार–श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती ।
१३ सोमवार–सफला एकादशी व्रत ।
१५ बुधवार प्रदोष व्रत ।
१६ गुरुवार–धनु:में सूर्यसंक्रान्ति पुण्यकाल
१७ शुक्रवार अमावस्या ।
१९ रविवार – चन्द्रदर्शन मु० ३०
२४ शुक्रवार–श्रीगुरु गोविन्दसिंह जयन्ती
२५ शनिवार- क्रिसमिसडे (बड़ादिन) दुर्गा
२८ मंगलवार–पुत्रदा एकाशी व्रत ।
२९ बुधवार प्रदोष व्रत ।
३१ शुक्रवार–पौषी पूर्णिमा, सत्य व्रत शाकम्भरी जयन्ती, माघ स्नानारम्भ ।

श्रीबगला अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र

[श्री पं० जगदीशशरण बिलगइयाँ 'मधुप' तंत्रशास्त्री]

वन्दना

श्रीशिव गुरुपद हृदय धर, मातु उमहिं शिरनाय। अष्टोत्तर शतनामको लिखा प्रेरणा पाय ।।
करहु अनुग्रह जानि सुत, पतित भयो तव पूत। त्राहि-त्राहि त्वरि त्राहि मां, कष्ट देत कलिदूत ।।
पल पल कटत पहाड़ सम, मातु भई क्यों दूर। चाह नहीं कुछ और माँ, देहु विमल पद धूर ।।
मार्गशीर्ष शुभ पूर्णिमा, भौमवार दिनमान। दो सहस्र तेईस शुभ, संवत् सत्य प्रमान ।।

स्तोत्र प्रारम्भ

जयतु जयतु बगला वरदानी । विष्णु प्रिया जय शिव पटरानी ।।
रम्य वामना तुम बटु रूपिणी । महा मत्स्य वाराह स्वरूपिणी ।।
कल्कि-रूप कलि दुर्गति नाशिनि । काली कला कुमार्ग विनाशिनि ।।
रुद्रमूर्ति रुद्राणी रामा । राम प्रपूजित नित्या वामा ।।
नाग-जननि नागेश्वरि कन्या । पीता श्यामा सुन्दरि धन्या ।।
रक्ता नीला शुभ्रा श्वेता । भामिनि माया सौम्य सुचेता ।।
नागात्मजा नागरी वरदा । वीरा वीर सुभूषण बलदा ।।
स्तंभनी मोहनी रूपा । सिद्धेशा शुभ सिद्धि स्वरूपा ।।
बहुला वेदमातु सच वाणी । लसत् वज्र रिपुरसना पाणी ।।
जयतु देवि ! जामदग्न्यस्वरूपा । जय परमा जय पर अणु रूपा ।।
रुद्र रूप जय रुद्र देवता । देव दनुज सिद्धौघ पूजिता ।।
नित नवीन सौन्दर्य कारिणी । रात्रि, महारावण संहारणी ।।
सुभगा स्वर्ण-प्रभा रिपुनाशिनि । राग द्वेष कृत शत्रु विनाशिनि ।।
—जय वसुदा जय वरदाराध्या । जय कृष्णा, केशव आराध्या ।।
नक्षत्रेश प्रिया नक्षत्रा । पीत पुष्प प्रिय पीत कलत्रा ।।
वरानना वरदान प्रदाता । नगपति सुता नीरदा माता ।।
लङ्केशारि वन्दिता रेखा । जयतु सिद्धि निविहा सुविशेषा ।।
जय कृत्या कैवल्य दायनी । जय कठिना गौरव प्रदायनी ।।
जयतु बौद्ध पाखंड नाशनी । जयतु कोटि कमलन विकासनी ।।
जयतु विष्णु शंकर प्रिय भामिनि । जय नरसिंह प्रिया द्युति दामिनि ।।
जयतु नागिनी वहुदा माता । जय वरदेश प्रिया जग त्राता ।।
जयतु पीत भूषण सु भूषिता । पीत हरा जय गुण अदूषिता ।।

जय कपर्दनी रूप कलिहरा। जयतु केवला मुण्ड स्रग्धरा ॥
ब्रह्म रूप परतन्त्र विनाशिनि। बुद्धि रूप पर बुद्धि प्रकाशिनि ॥
नागराज वन्दित परमेशी। नक्षत्रेश प्रपूजित वेशी ॥
जयतु यक्षिणी रौरव ध्वंसी। महा सुविष्णु प्रसूता हंसी ॥
कलहंसी केशवी किशोरी। कोटि मदन मोहन शिव गौरी ॥
लंकापति विध्वंस कारिणी। भक्त हेतु बहुरूप धारिणी ॥
सर्व शत्रु मुख पद अवरोधी। को समर्थ तव तात विरोधी ॥
छत्तिस वर्ण मंत्र सुख दाता। भक्तन हित नित सौख्य प्रदाता ॥
आषुतोषणी रूप तुम्हारो। बगला कहत सभी अघ टारो ॥
भजै पीतवसना नर कोई। बुद्धिमान सो निश्चय होई ॥
रटे भगवती जो निशि वासर। देत विभूति लेत सब रुज हर ॥

फल

चिन्तन कर पीताम्बरा—"मधुप" नित्य शतवार।
शीघ्र देत ऐश्वर्य सब—करत शत्रु मद छार ॥
प्रातःकाल प्रदोष में—सुन पढ़ है धर ध्यान।
विद्या, धन, बल पाय यश—जग में होय महान ॥

लेखकका पता – पट्ठापुरा, दतिया (म०प्र०)

प्रपंचियोंसे सावधान !

इस शीर्षककी सूचना दो वर्ष पूर्व 'ज्योतिष्मती' बर्ष १३ संख्या २, माघ सं० २०२६ वि० के अङ्कमें पृष्ठ ६१ पर प्रकाशित की थी। जिन तंत्र-मंत्रशास्त्रीके सम्बन्धमें उपालम्भ आये थे उनकी जांच पड़ताल हमने स्वयं की, तो वे महाशय निरे ढपोरशंख सिद्ध हुए। अपनी आत्मश्लाघामें उन्होंने वाराणसीके सभी वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध विद्वानोंको अनभिज्ञ बतानेकी धृष्टता भी की थी। बादमें हमें ज्ञात हुआ कि 'ज्योतिष्मती' में वे जो लेख दो वर्ष तक देते रहे--वे एक पुरानी बंगला पुस्तकका अनुवाद मात्र होते थे। अब गत दो वर्षसे हमने 'ज्योतिष्मती' में उन महाशयका लेख देना बिल्कुल बन्द कर दिया है। हमारी उस विज्ञप्तिसे सतर्क होकर उक्त महाशयने मंत्रतंत्रके नामसे 'ज्योतिष्मती' के ग्राहकोंको ठगना छोड़ दिया, अतः हमने उनका विशेष रहस्योद्घाटन नहीं किया।

नकली बंशीधर

अब किसी मंत्रशास्त्रीने तो नहीं, पर एक वंशीधर नामक ज्योतिषीने प्रपंचकी पराकाष्ठा की है। पाठक भली-भांति जानते हैं कि 'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' के सहायक गणितकर्ता सिमारला ग्राम (राजस्थान) निवासी पं० बंशीधर शर्मा गौड़ हैं। ये नवलगढ़के वयोवृद्ध विद्वान् पं० ईश्वरदत्तजी सरस्वती-पञ्चाङ्गकर्ताके शिष्य हैं और गत १० वर्षसे 'श्रीविश्वविजयपंचांग'में कार्य कर रहे हैं। घर छोड़कर ये दूसरे प्रान्तमें कहीं नहीं जाते। इस पंचाङ्गकी लोकप्रियतासे लाभ उठानेके लिए बीगावास राजस्थानके एक बंशीधर नामक दैवज्ञम्मन्य महाशयने मराठवाड़ा (महाराष्ट्रप्रान्त) में जाकर स्वयको 'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' का सहायकसम्पादक (गणितकर्ता) प्रसिद्ध ज्योतिषी सिद्धकर सफैद झूठका प्रपंच फैलाया है। नांदेड़ (मराठवाड़ा) से हमें सूचना मिली है कि राजस्थानके एक बंशीधर नामक पंडित यहां आये हुए हैं, वे कहते हैं कि—"श्रीविश्वविजयपंचाङ्ग का गणित मैं ही करता हूं। पं० हरदेवजी त्रिवेदीको तो अन्य अनेकों सभा संस्थाओं और राजनेताओंके कामसे ही फुरसत नहीं मिलती। यदि मैं पंचांगका गणित करके न दूं तो पंचांग ही बन्द हो जावे।" इत्यादि।

नांदेड़के जिन सज्जनने सिमारलाके असली बंशीधरजीका चित्र देखा था और उनकी लिखी जन्मपत्रीके हस्ताक्षर भी देखे थे उन्होंने प्रश्न किया कि 'श्रीविश्वविजयपंचाङ्ग'के गणितकर्ता बंशीधरजी (असली) तो मोटे हैं, आप तो दुबले हो ? इसपर पंडितजी बोले हां, मैं पहले मोटा था, पर बिमारीके कारण अब दुवला हो गया हूँ। फिर पूछा कि वे तो पगड़ी लगाते हैं और आप सफैद टोपी लगाते हैं ? तो बोले - हां, मैं पहले पगड़ी बांधता था, अब टोपी लगाता हूँ। फिर इनसे पूछा कि सिमारला वाले पं० बंशीधरजीके इतने स्पष्ट अक्षर नहीं है, जितने कि आपकी जन्मपत्रीमें हैं ? तो इन निर्लज्ज महाशयने उत्तर दिया कि वह जन्मपत्री तो मैंने अपने शिष्यसे लिखवाई थी। उपर्युक्त प्रश्नोत्तरके बाद जब नकली महाशयने देखा कि अब कहीं कोई असली बंशीधरजीके पास राजस्थान पहुंचकर मेरे प्रपंचका घड़ा न फोड़ दे—इसलिए बड़ी नम्रता व सद्भावसे तत्काल

नकली महाशयने असली बंशीधरजीको पत्र लिखा कि—"मैं यहांसे आपको १०-१५ जन्मपत्रियां बनानेका काम भेजता हूँ और लाभ करवाता रहूँगा।" इत्यादि।

पाठकगण ! यह युगधर्मका प्रभाव है। सर्वत्र प्रपंच और भ्रष्टाचारका साम्राज्य है। उपदेशक अग्रणी ब्राह्मणवर्ग अब प्रपंच पाखण्ड और मिथ्याचारमें सबसे आगे बढ़ रहा है। गत माघमासमें जब हम दक्षिण भारतकी यात्रामें थे तब वहांके स्नेहीसज्जनोंने इन नकली बंशीधरजीका चिठ्ठा बताया और 'ज्योतिष्मती' में इसे प्रकाशित करनेका अनुरोध किया था। परन्तु, इनके मिथ्या प्रचारसे मेरा या 'श्रीविश्वविजयपंचांग' का कुछ भी बनता बिगड़ता नहीं। और न मुझे जन्मपत्र वर्षफल आदिका काम लेने या ग्राहक बढ़ानेकी आवश्यकता है। जहां नकली बंशीधरजी जैसे ज्योतिषी आत्मश्लाघा मिथ्या प्रपंच द्वारा कामके लिए मारे-मारे फिरते हैं, वहां मैं पंचांग और इस पत्रिकामें स्नेही श्रद्धालु सज्जनोंसे अनुरोध कर चुका हूँ कि ज्योतिष सम्बन्धी अन्य कार्यके लिए मेरे पास समय नहीं है, वे किसी अन्यसे करवा लें।

अब पुनः मराठवाड़ासे कुछ सज्जनोंने अनुरोध किया है कि—"ज्योतिष्मती-पत्रिकाके द्वारा आपने सदा सत्यका प्रचार और मिथ्या प्रपंचका पर्दाफाश किया है। पर अब आप नकली बंशीधरजीके विषयमें क्यों चुप हैं ? ऐसे धूर्तोंका प्रतिवाद न करनेसे उन्हें जनताको ठगनेका अवसर मिलता है।"

उन सज्जनोंके सन्तोषार्थ ये पंक्तियां यहां प्रकाशित करके विश्वास दिलाता हूँ कि 'ज्योतिष्मती' प्रपंच और पाखण्डका उन्मूलन करनेके लिए सदा बद्धपरिकर रहेगी।

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

भूल सुधार

इस अङ्कमें पृष्ठ ७२ पर एक लेख बिना प्रूफ संशोधनके छप जानेसे कुछ अशुद्धियां छप गई हैं—उन्हें पाठक नीचेकी तालिकाके अनुसार शुद्ध कर लें। कालम १-२ में लेखकके नामके नीचेसे पंक्तिगणना प्रारम्भ की गई है—

कालम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	६	त्रुक्रग्रहः	शुक्र ग्रह
१	६	लोकनिय नौतिज्ञ	लोकप्रिय नीतिज्ञ
१	११	किलासिनी	विलासिनी
१	१२	प्रान्तिवाद	कान्तिवान्
१	१४	प्रकाचकतासे	प्रकाशकतासे
१	१७	सहनाम्	सहनम्
१	१८	करा	करना
१	१९	लोकप्रिय	लोकप्रियता
१	२०	उपहास्यस्पद	उपहासास्पद
१	२३	त्रार्थीगसिष्यामुपहास्याम्	प्रार्थीगमिष्याभ्युपहास्यताम्
१	२६	उप्राव	उशना
२	३	प्रभुकी	शत्रुकी
२	१०	पुरुषप्रकृति	परुषप्रकृति
२	१२	स्पष्टिका	सृष्टिका
२	१३	सर्वत्रिय	सर्वप्रिय
२	१५	सूढ़	मूढ़
२	२२	सर्वहितैष	सर्वहितैषी
२	२७	बन्वुता	बन्धुता

JYOTISHMATI" REGISTRAR NEWS PAPERS FOR INDIA R.N., 4941/57

श्रीहरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा दि कुमार प्रिंटिंग प्रैस सोलन में छापकर ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि.प्र.) से प्रकाशित